प्रत्येक विश्वासी को बदलना

नींवें

ट्रैक 1

केवल मुफ़्त वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है। सर्व हक्क स्वाधीन।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

मुफ़्त संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकें :** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेज : apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Foundations - Track 1)

प्रत्येक विश्वासी को बदलना

नींवें

ट्रैक 1

विषयसूचि

मज़बूत नींवों का निर्माण करना

1	परमेश्वर का स्वभाव	1
2	उद्धार	15
3	उद्धार और क्षमा का आश्वासन	29
4	परीक्षा पर जय पाना	39
5	प्रार्थना	53
6	स्तुति और आराधना	65
7	परमेश्वर का वचन	79
8	स्थानीय कलीसिया	89
9	कलीसिया के संस्कार	97
10	मसीह में	107
11	पवित्र आत्मा	115
12	विश्वास	127
13	आर्थिक भण्डारीपन	135
14	आपके जीवन के लिए परमेश्वर को उद्देश्य को पूरा करना	147

मज़बूत नींवों का निर्माण करना

प्रत्येक विश्वासी को परिपक्वता के स्थान पर लाए जाने की ज़रूरत है और उनके विश्व में परमेश्वर का "सेवक" होने के लिए मुक्त करने की आवश्यकता है, चाहे वह बाज़ार का स्थान हो या अन्य क्षेत्र। प्रत्येक विश्वासी एक सेवक है और परमेश्वर का कार्य करने हेतु उसे अधिकार दिया गया है और वह सचमुच संसार के लिए मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

इस कार्यपुस्तिका के रूप में फाऊन्डेशन्स या **नींव** पाठ्यक्रम आपको परमेश्वर के वचन और आत्मा में दृढ़ करने हेतु बनाया गया है ताकि आप प्रत्येक भले कार्य के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित हो सकें।

ट्रैक 1 में निम्नलिखित विषय हैं:

(1) परमेश्वर का स्वभाव
(2) उद्धार
(3) उद्धार और क्षमा का आश्वासन
(4) परीक्षा पर जय पाना
(5) प्रार्थना
(6) स्तुति और आराधना
(7) परमेश्वर का वचन
(8) स्थानीय कलीसिया
(9) पवित्र विधियां
(10) मसीह में
(11) पवित्र आत्मा
(12) विश्वास
(13) आर्थिक भण्डारीपन
(14) आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करना।

इस कार्यपुस्तिका में आपके लिए सटीक पाठ दिए गए हैं जो परमेश्वर के वचन में दृढ़ नींव का निर्माण करने में आपकी सहायता करेंगे, लागूकरण अथवा **अनुप्रयोग** विभाग में आप की समझ का आंकलन किया जाएगा और इसमें दिए गए विभिन्न विषयों को आपको व्यवहारिक तौर पर लागू करना होगा।

यह पुस्तक निम्नलिखित बातों के लिए साधन के रूप में उपयोग की जा सकती है:

- **स्वयं अध्ययन:** ये सटीक पाठ परमेश्वर के वचन में दृढ़ नींव का निर्माण करने में आपकी सहायता करेंगे, लागूकरण अथवा **अनुप्रयोग** विभाग में आप की समझ का आंकलन किया जाएगा और इसमें दिए गए विभिन्न विषयों को आपको व्यावहारिक तौर पर लागू करना होगा।
- **सामूहिक अध्ययन:** सेलग्रुप में या किसी भी बाइबल अध्ययन समूह में अध्ययन हेतु, यह पुस्तक समूह के हर एक सदस्य को पाठ का पुनरावलोकन समझने हेतु पहले से तैयार करेगा, वे विषय पर उत्पन्न होने वाले प्रश्नों को लिख सकते हैं और सम्पूर्ण अध्ययन और वास्तविक जीवन में लागूकरण के माध्यम से सामुहिक चर्चा कर सकते हैं।

फ़ाउंडेशन ऑनलाइन

apcwo.org/foundations

फाउंडेशन कार्यपुस्तिका का पीडीएफ संस्करण डाउनलोड करें।
प्रत्येक पाठ के लाइव सत्र की वीडियो रिकॉर्डिंग देखें।
प्रत्येक पाठ का एमपी3 डाउनलोड करें और अपनी कार्यपुस्तिका के साथ अध्ययन करें।
सब कुछ **apcwo.org/foundations** पर निःशुल्क उपलब्ध है

1

परमेश्वर का स्वभाव

(यह पाठ हमें परमेश्वर के स्वभाव के विषय में सिखाता है। परमेश्वर का स्वभाव उसकी सृष्टि रचना, उसके वचन, उसके गुणों और उसके नामों में प्रगट है। परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर का स्वभाव प्रगट करता है। यीशु मसीह देहधारी वचन है—परमेश्वर के स्वभाव की सिद्ध अभिव्यक्ति—परमेश्वर का यथार्थ प्रतिरूप। परमेश्वर का सही चित्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रगट है। हमारा परमेश्वर का चित्र परमेश्वर के प्रति न केवल हमारे ढंग को प्रभावित करता है, बल्कि लोगों, संसार और शैतान के प्रति हमारे ढंग / रवैये को प्रगट करता है।)

1.1 "परमेश्वर का स्वभाव" इस शब्द से हमारा क्या आशय है?

- "परमेश्वर का स्वभाव" उसकी विशेषता, गुण और योग्यताएं हैं। मूलतः वह कौन है, क्या करता है।
- परमेश्वर का स्वभाव उसके गुणों और उसके नामों में प्रगट है।
- सारी सृष्टि प्रगट करती है कि परमेश्वर कौन है और उसकी महानता को दर्शाती है।

रोमियों 1:20
क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं।

भजन संहिता 19:1
आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।

- परमेश्वर का वचन परमेश्वर के स्वभाव को प्रगट करता है।
- यीशु मसीह देहधारी वचन है—परमेश्वर के स्वभाव की सिद्ध अभिव्यक्ति—परमेश्वर का यथार्थ प्रतीक। परमेश्वर का सही चित्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रगट है।

यूहन्ना 1:1,14
[1] आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ;
[14] और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

इब्रानियों 1:3
वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।

परमेश्वर वास्तव में जो है, वह देखें और जो वह है, उसके लिए उसकी आराधना करें।

आपके मन में परमेश्वर की जो तस्वीर है, वह आपके जीवन के अनुभवों से या दूसरों की राय से कलंकित न होने पाए।

- परमेश्वर का वचन और उसके कार्य हमेशा उसके स्वभाव के साथ सुसंगत होते हैं—वह कौन है इसके साथ। परमेश्वर ऐसा कुछ नहीं कहेगा और करेगा जो वह कौन है इसके विपरीत हो। इसलिए वह परमेश्वर की ओर से है इसका मूल्यांकन करने की सबसे महत्वपूर्ण कसौटी यह देखना है कि क्या वह परमेश्वर के स्वभाव के अनुरूप है।

- हमारी दृष्टि में परमेश्वर की तस्वीर न केवल परमेश्वर के प्रति हमारी मुद्रा / अवस्थिति को प्रभावित करती है (हम कैसे प्रार्थना करते हैं), बल्कि लोग, संसार और शैतान के साथ हम जिस तरह व्यवहार करते हैं उसमें भी हमारी मुद्रा को प्रभावित करती है।

1.2 परमेश्वर के गुण उसके स्वभाव को प्रगट करते हैं

परमेश्वर सृजनहार और सनातन है

परमेश्वर कौन है इसका सबसे बड़ा प्रकाशन यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है।

उत्पत्ति 21:33
और इब्राहम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया, और वहां यहोवा, जो सनातन ईश्वर है, उससे प्रार्थना की।

भजन संहिता 90:2
इस से पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है।

- परमेश्वर को किसी ने नहीं बनाया। उसका अस्तित्व हमेशा से रहा है। वह स्वयंभूत, स्वावलंबी है, अपने अस्तित्व के लिए और किसी पर निर्भर नहीं है। किसी समय उसने हमें बनाने का निर्णय लिया और तब से वह हमारे साथ रहता है।
- उसके विपरीत, हम सभी सृजे गए हैं और हमारा आरंभ है।
- सारी वस्तुएं उसी में, उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई थी।

कुलुस्सियों 1:15-17
15 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।
16 क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।
17 और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

हम आत्मिक प्राणी हैं और इस कारण परमेश्वर के साथ संपर्क कर सकते हैं जो आत्मिक प्राणी है।

1 तीमुथियुस 1:17
अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

वह आत्मा है

यूहन्ना 4:24
परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

भजन संहिता 139:7-10
7 मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे सामने से किधर भागूं?
8 यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है!
9 यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं,
10 तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।

- परमेश्वर के पास हमारे समान मरणहार प्राकृतिक भौतिक देह नहीं है।
- परंतु, वह आकाररहित, पिलपिला, व्यक्तित्वहीन आत्मा की शक्ति नहीं है। बाइबल प्रगट करती है कि परमेश्वर का हमारे समान आकार है। उसकी आंखें, हाथ, कान, पांव आदि हैं। परमेश्वर को हमारे समान भावनाएं और एहसास है—वह प्रेम करता है, वह निगरानी करता है, वह हंसता है, वह रोता है, वह क्रोधित होता है, वह क्षमा करता है। वह व्यक्ति है और इस कारण व्यक्तित्वपूर्ण परमेश्वर है।

- इसलिए परमेश्वर रिश्तों की चाह रखता है। उसका वर्णन पिता के रूप में किया गया है। वह हम विश्वासियों को अपने बेटे बेटियां और अपने परिवार का हिस्सा मानता है।
- बाइबल में लिखा है कि समय समय पर वार्तालाप करने हेतु उसने भौतिक शरीर धारण किया (धर्म विज्ञानी इसे "एपिफनी" कहते हैं)। उदाहरणः मूसा (निर्गमन अध्याय 33,34)।

वह सर्वशक्तिमान है

लूका 1:37
क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता।

- परमेश्वर की सामर्थ पूर्ण रूप से असीमित है, फिर भी उसने घोषित किया है कि कुछ बातें वह नहीं करेगा। वह कभी अविश्वासयोग्य नहीं होगा, कभी झूठ नहीं बोलेगा, कभी प्रेम करना बंद नहीं करेगा। वह इन कामों को नहीं कर सकता, क्योंकि यह उसके स्वभाव और गुण के विपरीत है।
- परमेश्वर हर समय सर्वशक्तिमान है।
- उसकी सामर्थ उसके वचनों से मुक्त होती है।

परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता उसके वचन में प्रगट है!

इब्रानियों 4:12
क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

वह सर्वज्ञानी है

भजन संहिता 147:5
हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है।

अय्यूब 37:14-18
14 हे अय्यूब! इस पर कान लगा और सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और ईश्वर के आश्चर्यकर्मो का विचार कर।
15 क्या तू जानता है, कि ईश्वर क्योंकर अपने बादलों को आज्ञा देता, और अपने बादल की बिजली को चमकाता है?
16 क्या तू घटाओं का तौलना, वा सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है?
17 जब पृथ्वी पर दक्षिणी हवा ही के कारण से सन्नाटा रहता है, तब तेरे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं?
18 फिर क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान सकता है, जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है?

यशायाह 46:9,10
9 प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं; क्योंकि ईश्वर मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है।
10 मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।

वह सर्वत्र है

यिर्मयाह 23:23,24
23 यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूं, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूं?
24 फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?

भजन संहिता 139:7
मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे सामने से किधर भागूं?

प्रेरितों के काम 17:24
जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।

वह त्रिएक परमेश्वर है

यूहन्ना 14:26
परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

- परमेश्वर कैसे त्रिएक है इसका सुनियोजित स्पष्टीकरण न देते हुए बाइबल इसे "तथ्य के रूप" में प्रस्तुत करती है।
- परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, परमेश्वर आत्मा सभी सनातन, समान हैं और आराधना के योग्य हैं।
- ईश्वरत्व का प्रत्येक व्यक्ति एकता में और अविरोध, एक के रूप में काम करता है।

पिता ईश्वरत्व के बुद्धि का प्रतीक है। वह **कल्पना करता** है।

पुत्र ईश्वरत्व के अधिकार का प्रतीक है। वह **आज्ञा देता** है।

आत्मा ईश्वरत्व की सामर्थ का प्रतीक है। वह **उत्पन्न करता** है।

भजन संहिता 104:30
फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है।

अय्यूब 33:4
मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।

- यीशु और पवित्र आत्मा का आना

मत्ती 3:16,17
[16] और जब यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, तब देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा,
[17] और देखो, यह आकाशवाणी हुई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।

- पिता + पुत्र + पवित्र आत्मा

यूहन्ना 16:15
जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

- यीशु सभी विश्वासियों के लिए पिता से प्रार्थना करता है।

यूहन्ना 17:21
जैसा तू हे पिता, मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे वे भी हममें हो, इसलिए कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा।

वह अनंत है

भजन संहिता 147:5
हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है।

रोमियों 1:20
क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं,

- **असीमित (अनंत):** उसे मापा, समाया या पूर्ण रूप से समझा नहीं जा सकता।
- **परम श्रेष्ठ या परम प्रधान:** वह श्रेष्ठ नहीं, परंतु सर्वश्रेष्ठ, सर्वोच्च है।
- **सनातन:** वह हमेशा से अस्तित्व में है और हमेशा अस्तित्व में रहेगा।

वह पवित्र और धर्मी है

- परमेश्वर की परिपूर्णता हमारे नैतिक चरित्र और हमारे जीवनशैली के लिए प्रेरणा का मानक है। हमारी नैतिक नियमावली उसकी पवित्रता के मानक के अनुसार होनी चाहिए।

1 पतरस 1:16
क्योंकि लिखा है, मैं पवित्र हूं, इसलिए तुम भी पवित्र बनों।

इब्रानी "पवित्र" *'कदास'*—जो सामान्य उपयोग के लिए नहीं है, विशेष सावधानी के साथ जिससे बर्ताव किया जाता है।

- वह हर प्रकार की बुराई से अनछुआ और निष्कंलक है।

इब्रानियों 1:13
और स्वर्गदूतों में से उसने किससे कब कहा, कि तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे की पीढ़ी न कर दूं?

याकूब 1:13
जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

- परमेश्वर धार्मिकता में प्रसन्न होता है

यिर्मयाह 9:24
परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूं, जो पृथ्वी पर करूणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं।

- वह केवल वही करता है जो उसकी अपनी व्यवस्था के अनुसार सही है और दूसरों को भी वही करने की आज्ञा देता है।

उत्पत्ति 18:25
इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहेः क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?

वह संप्रभुता संपन्न है

- संप्रभु के रूप में—वह परम स्वामी, अधिकारी, प्रभु है और सब कुछ उसके आगे झुकता और उसकी शरण लेता है।

1 तीमुथियुस 1:17
अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

- अपनी संप्रभुता में होकर उसने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा देने का चुनाव किया और उसने मनुष्य की पसंद या फैसले का आदर करना पसंद किया।

- परमेश्वर अपनी संप्रभुता में इतना निःशंक है कि वह अपने नियंत्रण को त्यागने से नहीं डरता। जहां तक मनुष्य की "संप्रभुता" का सवाल है, परमेश्वर ने नियंत्रण छोड़ दिया है।
- निर्णय लेने की मनुष्य की स्वतंत्रता और जो चुनाव वह करता है, भले ही वे परमेश्वर के उद्देश्य का विरोध करते हों, वे किसी भी रीति से परमेश्वर की संप्रभुता को हानि नहीं पहुंचाते, कमज़ोर नहीं करते और उनका अवमूल्यन नहीं करते। परमेश्वर फिर भी अधिकार रखता है।
- परंतु, मनुष्य के चुनाव या निर्णय के भी परिणाम होते हैं।

परमेश्वर अपनी संप्रभुता में इतना निःशंक है कि जब हमारे जीवनों की बात आती है, तब उसने नियंत्रण छोड़ दिया है। उसने नियंत्रण करने की योग्यता हमारे हाथों में रखी है—इसे कहते हैं "स्वतंत्र इच्छा!" परमेश्वर हमारे फैसलों का आदर करता है!!!

वह न्यायी है

- परमेश्वर हर व्यक्ति के निर्णयों का आदर करता है और उन्हें उनके निर्णयों और कार्यों के अनुसार प्रतिफल देता है। वह कोई पक्षपात नहीं करता।
- परमेश्वर के धर्ममय स्वभाव में न्याय भी शामिल है...

भजन संहिता 94:1-3

[1] हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले ईश्वर, हे पलटा लेनेवाले ईश्वर, अपना तेज दिखा!
[2] हे पृथ्वी के न्यायी उठ; और घमण्डियों को बदला दे!
[3] हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक, दुष्ट लोग कब तक डींग मारते रहेंगे?

परमेश्वर धर्मी है और धर्मी ठहराने वाला है।

... वह न्यायपूर्ण तरीके से काम करता है और जो अंतर्निहित रूप से सही है वही करता है।

उत्पत्ति 18:25

इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले, और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे। क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?

- यह परमेश्वर के स्वभाव का हिस्सा है—वह ऐसा मानक नहीं है जो परमेश्वर के बाहर हो जिसके अनुसार हमें चलना हो।

भजन संहिता 97:2

बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं; उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय हैं।

- यीशु को हमारा उद्धारकर्ता बनने हेतु भेजने में, परमेश्वर धर्मी भी है और उन्हें भी धर्मी ठहराता है जिन्होंने पाप किया है।

रोमियों 3:26

वरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका ऊभी धर्मी ठहरानेवाला हो।

वह सच्चा और विश्वत्रसयोग्य है

- यीशु स्वयं सत्य है।

यूहन्ना 14:6

यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

1 यूहन्ना 5:20
और यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं; सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

- परमेश्वर का वचन सत्य है।

यूहन्ना 17:17
सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।

- परमेश्वर सच्चा है और वह झूठ नहीं बोल सकता।

गिनती 23:19
ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?

तीतुस 1:2
उस अनन्त जीवन की आशा पर, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने, जो झूठ बोल नहीं सकता, सनातन से की है।

इब्रानियों 6:18
ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अन्होना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है, प्राप्त करें।

इसलिए जो कुछ वह कहता है वह पूर्ण रूप से सत्य है।

- वह विश्वसनीय है। वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।

व्यवस्थाविवरण 7:8,9
[8] यहोवा ने जो तुमको बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और मिस के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लिया, इसका यही कारण है कि वह तुमसे प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी।
[9] इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है; और जो उस से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएं मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा पालता, और उन पर करूणा करता रहता है।

- विश्वासयोग्यता अपरिवर्तनीयता से शास्त्रवत् आगे बढ़ती है क्योंकि यदि परमेश्वर नहीं बदलता, तो वह अविश्वसनीय नहीं हो सकता।
- आप जानते हैं कि परमेश्वर सत्य है—इसलिए आप जानते हैं कि आप पूर्ण रूप से उसके वचन पर निर्भर रह सकते हैं।
- आप जानते हैं कि परमेश्वर विश्वास योग्य है—अतः आप जानते हैं कि वह आपको कभी नहीं छोड़ेगा या कभी नहीं त्यागेगा।

वह प्रेमी और भला परमेश्वर है

- परमेश्वर प्रेम है

1 यूहन्ना 4:8-10
[8] जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।
[9] जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
[10] प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परंतु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।

आपका परमेश्वर कितना भला है?

परमेश्वर की भलाई के विषय आपका दृढ़ विश्वास परिपूर्ण होना चाहिए!

परमेश्वर हर समय भला है!!!

- प्रेम प्रदर्शित किया गया।

रोमियों 5:6-8
[6] क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा।
[7] किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे।
[8] परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

यूहन्ना 3:16
क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

- परमेश्वर पूर्ण रूप से हर समय भला है। परमेश्वर इतना भला है कि वह मेरा बुरा नहीं कर सकता। जब वह मुझे ताड़ना देता है, तब भी वह अपनी भलाई के कारण वह करता है।

वह दयालु और अनुग्रहकारी है

- यह परमेश्वर का अनुग्रह और भलाई है। वह अपनी उदारता और भलाई के आधार पर वह प्रगट करता है।

इसलिए यदि हमारे पास परमेश्वर की भलाई की सही समझ है, तो हम विश्वास के साथ निम्नलिखित वचन कह पाएंगेः

रोमियों 8:28
और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

परमेश्वर दयालु और परमेश्वर धर्मी है
परंतु परमेश्वर में, उसकी दया उसके न्याय पर विजय पाती है।

- परमेश्वर की दया अस्थायी बात या स्वभाव नहीं है, परंतु परमेश्वर के अस्तित्व का एक गुण है, परमेश्वर हमेशा ही अनुग्रहकारी और दयालु रहा है।

लूका 1:50
और उसकी दया उन पर, जो उससे डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

- अनुग्रह परमेश्वर की ओर से वरदान है।

इफिसियों 2:8
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।

- उसकी दया उसके सारे कामों पर लुटा दी गई है।

भजन संहिता 145:9,10
[9] यहोवा सभों के लिये भला है, और उसको दया उसकी सारी सृष्टि पर है।
[10] हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी, और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे!

इफिसियों 1:7,8
[7] हमको उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है,
[8] जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ के साथ हम पर बहुतायत से किया।

- उसका अनुग्रह हमें उद्धार देता है।

तीतुस 2:11
क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।

- दया न्याय पर जय पाती है (याकूब 2:13)। यह सच है कि जो हम बोते हैं वही काटते हैं (गलातियों 6:7,8), उसकी दया ही है जो पाप की पूरी "कटनी" रद्द करती है, सारी बुराई जो हमने बोई है उसे वह मिटा देती है। उसकी दया के कारण हम नाश नहीं हुए (विलापगीत 3:22)। वह हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार नहीं करता, परंतु अपनी दया प्रगट करता है (भजन संहिता 103:10,17)। क्रूस इसकी सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है। जब हम पश्चाताप करते हैं तब हम उसकी दया पाने के लिए खुद को तैयार करते हैं।

वह कभी नहीं बदलता

मलाकी 3:6
क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए।

इब्रानियों 13:8
यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है।

- परमेश्वर का स्वभाव पुराने और नए नियमों में बदलता नहीं। वह हर समय समान परमेश्वर है। जो कुछ बदलता है वह "वाचाएं" हैं—वह आधार जिस पर मनुष्य परमेश्वर से व्यवहार करता है, पुराने और नए नियमों में बदलता है। पुराना नियम प्रगट करता है कि यदि मनुष्य व्यवस्था / कामों के आधार पर—जो मनुष्य परमेश्वर को दे सकता है, परमेश्वर से व्यवहार करने का प्रयास करें तो क्या अनुभव करेगा। नया नियम प्रगट करता है कि यदि मनुष्य परमेश्वर द्वारा विनामूल्य दिए गए अनुग्रह के आधार पर परमेश्वर से संबंध बनाता है—जो परमेश्वर मनुष्य को देता है उसके आधार पर, तो मनुष्य क्या अनुभव करेगा।
- वह आज भी बिल्कुल वैसा ही है, जैसा पुराने नियम में प्रगट किया गया है, बिल्कुल वैसा ही जैसा यीशु ने नए नियम में उसे प्रगट किया।

उसके स्वभाव अनुरूप बनने की इच्छा रखें!
वह चाहता है कि उसका स्वभाव हमारे द्वारा व्यक्त हो।
उसके स्वभाव के अनुरूप निर्णय और चुनाव करें।
परमेश्वर के स्वभाव के अनुरूप लोगों से संबंध बनाएं—क्षमा, प्रेम, शांति, न्याय।

1.3 परमेश्वर के नाम उसके स्वभाव को प्रगट करते हैं

परमेश्वर का वर्णन करने हेतु उपयोग किए गए नाम उसके चरित्र और अस्तित्व के विषय में बहुत कुछ बताते हैं।

अदोनाय, "प्रभु" या "सम्प्रभु"

उत्पत्ति 19:2
हे मेरे प्रभुओं, अपने दास के घर में पधारिए, और रात भर विश्राम कीजिए, और अपने पांव धोइये, फिर भोर को उठ कर अपने मार्ग पर जाइए। उन्होंने कहा, नहीं; हम चौक ही में रात बिताएंगे।

यूहन्ना 4:11
स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहां से आया?

इस प्रकार, "प्रभु" इस शब्द का उपयोग मनुष्यों के लिए पद के रूप में भी किया जाता है। (अर्थः स्वामी या मालिक, अधिकारी और सर्वोच्चता)।

एलोहिम, सारी सृष्टि का सोत, सामर्थी परमेश्वर

उत्पत्ति 1:1
आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति की।

(इसे एक वचन के रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह प्रताप शब्द का बहुवचन है।)

थिओस

यूहन्ना 1:1
आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।

यह *'एलोहिम'* का यूनानी तूल्यार्थक शब्द है। उसे परमेश्वर को छोड़ और किसी के लिए उपयोग नहीं किया जाता।

एल, परमेश्वर

एल-शद्दाय, सर्वशक्तिमान, उदार, सर्वपर्याप्त

उत्पत्ति 17:1
जब अब्राम निन्नानवे वर्ष का हो गया तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।

एल-एलियोन, परमप्रधान परमेश्वर

उत्पत्ति 14:19
और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।

एल-ओलाम, सनातन परमेश्वर

उत्पत्ति 21:33
और इब्राहम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया, और वहां यहोवा, जो सनातन ईश्वर है, उससे प्रार्थना की।

मैं जो हूं सो हूं

निर्गमन 3:14
परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूं सो हूं।" फिर उसने कहा, "तू इसाएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूं है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।"

पवित्र शास्त्र परमेश्वर को सनातन, आत्म-निर्भर, स्वयंभूत परमेश्वर के रूप में प्रगट करता है।

याह्वे "प्रभु"

उत्पत्ति 4:1
जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती होकर कैन को जन्म दिया और कहा, मैंने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है।

यहोवा राफा, प्रभु मेरा चंगाई करने वाला

निर्गमन 15:26
कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधिओं को माने, तो जितने रोग मैंने मिसियों पर भेजा है उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूं।

यहोवा निस्सी, परमेश्वर मेरी ध्वजा / विजय

निर्गमन 17:15
तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवानिस्सी रखा।

यहोवा यिरे, परमेश्वर मेरा प्रयोजनकर्ता

उत्पत्ति 22:14
और इब्राहम ने उस स्थान का नाम 'यहोवा यिरे' रखा। इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है, कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।

यहोवा शालोम, प्रभु शांति है

न्यायियों 6:24
तब गिदोन ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा शालोम रखा। वह आज के दिन तक अबीएज़ेरियों के ओप्रा में बनी है।

यहोवा साबोथ, सेनाओं का प्रभु

1 शमूएल 1:3
वह पुरुष प्रति वर्ष अपने नगर से सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में जाता था; और वहां होप्नी और पीनहास नाम एली के दोनों पुत्र रहते थे, जो यहोवा के याजक थे।

भजन संहिता 24:10
वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।

यहोवा मकादेशेम, प्रभु तुम्हारा पवित्र करने वाला

निर्गमन 31:13
तू इसाएलियों से यह भी कहना, कि निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है, जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेवाला है।

यहोवा रोई, प्रभु मेरा चरवाहा है

भजन संहिता 23:1
यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे कोई घटी न होगी।

यहोवा सिद्केनू, प्रभु हमारी धार्मिकता

यिर्मयाह 23:6
उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम "हमारी धार्मीकता" रखेगा।

यहोवा शाम्मा, प्रभु उपस्थित है

यहेजकेल 48:35
नगर की चारों अलंगों का घेरा अठारह हजार बांस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम यहोवा शाम्मा रहेगा।

मुख्य मौखिक पद

रोमियों 1:20
क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं।

कुलुस्सियों 1:15-17
15 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।
16 क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।
17 और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

हमारे पिता

शायद, हमें परमेश्वर की प्रकृति का सबसे महान पहलू यह है कि वह "पिता" का है।

परमेश्वर हमारे पिता हैं!
सर्वोच्च पिता!
पूर्ण पिता!

अनुप्रयोग

1) इस अध्ययन से मैंने परमेश्वर के विषय में कौन से नए गुणों को जाना जिसने उसके विषय में मेरी समझ को बदल दिया है।

2) विभिन्न "मैं हूं" वाले परमेश्वर के नामों की और उनके अर्थ की सूची तैयार करें, और मनन करें कि वह कौन है इसके प्रकाश में आप जीवन की परिस्थितियों को कैसे देख सकते हैं (उदाहरण के तौर पर, यदि बीमारी है, तो उसे अपने चंगाईकर्ता के रूप में देखें, यदि ज़रूरत है, तो उसे अपने प्रयोजनकर्ता के रूप में देखें, यदि विपत्ति है, तो उसे अपनी पताका, ध्वजा के रूप में, विजय के आपके स्रोत के रूप में देखें, ...)।

2

उद्धार

(यह पाठ हमें परमेश्वर के प्रेम और मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में सिखाता है। हम उद्धार के सिद्धांत को सीखते हैं और पाते हैं कि नए नियम का यह संपूर्ण है जो क्षमा, चंगाई, छुटकारा, सुरक्षा और बचाव ले आता है, जो हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से मुफ्त में पाते हैं। यह पाठ हम विश्वासियों को सक्षम बनाएगा कि हम परमेश्वर के ***प्रेम*** *और उद्धारदायक* ***अनुग्रह*** *में दृढ़ बनें।)*

2.1 परमेश्वर का प्रेम

जिस आधार पर हमें उद्धार दिया गया है, वह परमेश्वर का प्रेम है जो यीशु मसीह के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

प्रेम क्या है?

- वेबस्टर के शब्दकोष में "प्रेम" की परिभाषा इस प्रकार की गई हैः "रिश्तेदारी या व्यक्तिगत सम्बंधों से दूसरों के प्रति उत्पन्न गहरा लगाव, सौहार्दपूर्ण लगाव, दूसरों की भलाई के लिए उत्साह, या भक्ति, निःस्वार्थ, वफादार और परोपकारिता की चिन्ता।"
- हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम हमारे साथ उसके रिश्ते से उत्पन्न होता है।
- प्रेम मानवजाति की सबसे बड़ी ज़रूरत है।
- सच्चे प्रेम और स्वीकार के लिए मानवजाति की अनंत खोज उसकी सर्वाधिक सचेतन शक्ति को अत्याधिक रूप से ले लेती है।
- प्रेम की हमारी ज़रूरत सनातन है, इसलिए उसका स्रोत भी सनातन होना ज़रूरी है।

परमेश्वर हमसे क्यों प्रेम करता है?

- उसने हमें उत्पन्न किया।
- प्रेम करना परमेश्वर चरित्र है।

1 यूहन्ना 4:8
जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

परमेश्वर के प्रेम की विशेषताएं क्या हैं?

परमेश्वर द्वारा स्थापित प्रेम का रिश्ता

- परमेश्वर ने हमसे प्रेम करने का चुनाव किया (ईश्वरीय इच्छा)। उसके प्रेम से, स्वयं उसने हमारे साथ रिश्ता स्थापित किया।

ऐसा दान जिसके हम योग्य नहीं थे

- जैसे हम हैं वैसा वह हमसे प्रेम करता है। परमेश्वर हमसे प्रेम करे इसलिए हमें कुछ और बनने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर का प्रेम प्रबल और परिपूर्ण है।

- परमेश्वर का प्रेम खरीदा नहीं जा सकता! वह हमारी भौतिक सम्पत्तियों और संसारिक गुणों पर निर्भर नहीं हैं।
- परमेश्वर का प्रेम बिनशर्त है; उसे कमाया नहीं जा सकता। वह बिनामूल्य वरदान है!
- परमेश्वर हमसे और प्रेम करे इसलिए हम कुछ नहीं कर सकते, हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते जिससे परमेश्वर हमसे कम प्रेम करने लगे।
- इस्राएल के प्रति परमेश्वर के प्रेम की तुलना पति और पत्नी की रिश्ते के साथ की गई है। उनके पापों के बावजूद परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया (यहेजकेल 16)।

यह सर्वश्रेष्ठ प्रेम है

- **बलिदान स्वरूपः** परमेश्वर का प्रेम सर्वश्रेष्ठ प्रकार का बलिदान स्वरूप प्रेम है।

यूहन्ना 3:16
क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

- **कार्यरूप प्रेमः** परमेश्वर का प्रेम मात्र शब्दों में नहीं है। जब अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारे पापों के लिए मरने हेतु उसने भेजा, तब उसने अपने प्रेम को अपने कार्यों और कामों से पूरा किया।

यूहन्ना 15:13
इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।

- **क्षमा करने वाला प्रेमः** हमारा परमेश्वर क्षमा करने वाला परमेश्वर है।

यिर्मयाह 31:34
और जब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।

यशायाह 43:25
मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा।

यह अनंतकाल का प्रेम है

यिर्मयाह 31:3
यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है, मैं तुझसे सदा प्रेम रखता आया हूं; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है।

परमेश्वर के प्रेम की विशेषताएं

परमेश्वर द्वारा स्थापित प्रेम ——————————

परमेश्वर का प्रेम —————————— है

परमेश्वर का प्रेम —————————— है

परमेश्वर का प्रेम —————————— है

- परमेश्वर का प्रेम संसारिक या सामायिक नहीं है। वह अनंतकाल का प्रेम है।
- वह अपने प्रेम में पक्षपात नहीं करता। वह सबसे समान रूप से प्रेम करता है।
- परमेश्वर विश्वासयोग्य है। वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।

2.2 उद्धार की योजना

मनुष्य के लिए परमेश्वर की मूल योजना

प्रकाशितवाक्य 4:11
कि हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं।

मनुष्य इसलिए सृजा गया

- ताकि परमेश्वर की महिमा करे।

1 कुरिन्थियों 11:7
हाँ पुरुष को उपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की शोभा है।

- ताकि उसके साथ संगति करे।
- ताकि फलवंत हो, बहुगुणित हो और सब पर प्रभुता करे।

उत्पत्ति 1:26-28
[26] फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"
[27] तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी,
[28] और उनसे कहा, फलो-फूलो, और पृथ्वी में भर जाओ; उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।

परमेश्वर के विरोध में मनुष्य की अनाज्ञाकारिता और विद्रोह

अनाज्ञाकारिता और विद्रोह परमेश्वर के विरोध में पाप हैं।

1 शमुएल 15:21,23
[21] परंतु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, अर्थात, सत्यानाश होने की उत्तम से उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए बलि चढ़ाने को ले आए हैं।
[23] देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिए उस ने तुझे राजा होने के लिए तुच्छ जाना है।

पाप और उसके परिणाम

हम परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

रोमियों 3:23
इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

पाप क्या है?

यूनानी भाषा में "पाप" का अर्थ है "निशाना चूक जाना।" मनुष्य का पाप उसे परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य को पूरा करने में असफलता है।

परिणाम

यह "पतित मनुष्य" की दशा है (उद्धार न पाए हुए व्यक्ति की):

- आंतरिक आत्मिक मृत्यु जहां पर अब हमारे पास जीवन नहीं है और हम में परमेश्वर का स्वभाव नहीं है।

इफिसियों 4:18
क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं।

रोमियों 5:12
इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आयी, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया।

- परमेश्वर से अलगाव

यशायाह 59:1,2
[1] नो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके;
[2] परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।

- शरीर की भौतिक मृत्यु

इब्रानियों 9:27
और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।

- परमेश्वर की उपस्थिति से "नरक" नामक स्थान में अनंतकाल के लिए हद्दपारी।

मत्ती 25:41
तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे श्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है।

प्रकाशित वाक्य 20:12-15
[12] फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।
[13] और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया।
[14] और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है।
[15] और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।।

- परमेश्वर की आशीषों से वंचित रखता है।

यिर्मयाह 5:24,25
[24] वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो बरसात के आरम्भ और अन्त दोनों समयों का जल समय पर बरसाता है, और कटनी के नियत सप्ताहों को हमारे लिये रखता है, इसलिये हम उसका भय मानें।
[25] परन्तु हमारे अधर्म के कामों ही के कारण वे रूक गए, और तुम्हारे पापों ही के कारण तुम्हारी भलाई नहीं होती।

- हमें गुलाम बनाता है और बंधन में रखता है।

नीतिवचन 5:22
दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फंसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा।

यूहन्ना 8:34
यीशु ने उनको उत्तर दिया, मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।

- शैतान की प्रभुता के लिए हमारे जीवन को खोल देता है—बीमारी और मृत्यु के लिए।

इफिसियों 2:1,2
[1] और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।
[2] जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।

मनुष्य खुद को बचा नहीं सकता

परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिए जाने के लिए आदम और हव्वा को कितने पाप करना पड़ा?

- हमारे सारे भले काम हमें बचा नहीं सकते—क्योंकि एक पाप भी हमें परमेश्वर से अलग करने के लिए पर्याप्त है। आदम ने एक बार पाप किया—और यह उसे "पतन" की ओर और उसके हानिकारक परिणामों की ओर ले गया।
- हमारे उत्तम काम भी परमेश्वर के सामने मैले हैं।

यशायाह 64:6
हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की नाईं उड़ा दिया है।

- दूसरा कोई मनुष्य हमारे लिए मध्यस्थी नहीं कर सकता—क्योंकि सब ने पाप किया है।

रोमियों 3:10
जैसा लिखा है कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।

यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान का उद्देश्य

- हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करना

रोमियों 5:8
परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

- पापियों को बचाना

1 तीमुथियुस 1:15
यह बात सच और हर प्रकार से मानने केयोग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने केलिये जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं।

1 यूहन्ना 4:14
और हमने देख भी लिया और गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है।

- हमें परमेश्वर के निकट लाना

1 पतरस 3:18
इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए। वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, परंतु आत्मा के भाव से जिलाया गया।

- शैतान के कामों को नाश करने के लिए।

1 यूहन्ना 3:8
जो कोई पाप करता है, वब शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

- परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

इब्रानियों 9:26
नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।

- यीशु मसीह उसके निकट विश्वास के साथ आने वाले सारे लोगों का उद्धार करने योग्य है

इब्रानियों 7:25
इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है।

जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं, उनके लिएः

- पापों की क्षमा

प्रेरितों के काम 10:43
उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।

मसीहत धर्म नहीं है।

मसीहत एक रिश्ता है जो मसीह के क्रूस के द्वारा आपके और मेरे लिए परमेश्वर के साथ स्थापित हुआ है!

1 यूहन्ना 2:12
और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है; और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।

- वे अनंत जीवन पाएंगे (परमेश्वर का जीवन और स्वभाव)

1 यूहन्ना 5:11,12
[11] और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है; और यह जीवन उसके पुत्र में है।
[12] जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।

- उद्धार

रोमियों 10:9,10
[9] कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।
[10] क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।

- अन्धःकार से उसके राज्य में लाया

कुलुस्सियों 1:13,14
[13] उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,
[14] जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

- परमेश्वर की संतान बनाया

यूहन्ना 1:12
परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।

- नई सृष्टि बनाया

2 कुरिन्थियों 5:17
इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।

- ... और बहुत कुछ ...

यीशु मसीह को छोड़ उद्धार नहीं है

प्रेरितों के काम 4:12
और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

यूहन्ना 14:6
यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

उसके प्रेम के कारण मुझे मोक्ष कैसे प्राप्त होगा?

- पश्चाताप कर और यीशु मसीह में और जो कुछ उसने क्रूस पर किया है, उस पर विश्वास कर।

उद्धार एक बड़े बीमा पैकेज या पुलिन्दे के समान है।

प्रेरितों के काम 16:31
उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।"

- उसे अपने जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता कबूल करें

रोमियों 10:9,10
[9] कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।
[10] क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।

- उसका अपने जीवन में स्वागत करें

यूहन्ना 1:12
परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।

- बाइबल इस अनुभव को "नया जन्म" पाना भी कहती है

यूहन्ना 3:3
यीशु ने उसको उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।

उद्धार (सोज़ो) एक पूरा पैकेज या पुलिन्दा है

'सोज़ो' एक यूनानी शब्द है जो हमारे नये नियम में 110 बार पाया जाता है।

'सोज़ो' नये नियम में **उद्धार** के लिए सबसे ज्यादा उपयोग किया जाने वाला यूनानी शब्द है।

'सोज़ो' क्रिया है, क्रियारूप शब्द है। ऐसा जो किया गया है, ऐसा कुछ जो परमेश्वर के कार्य के कारण होता।

'सोज़ो' यह शब्द सर्व समावेशक शब्द है जिसमें आत्मिक उद्धार शामिल है, अर्थात् पापों की क्षमा, बीमारी से चंगाई, शत्रु के हर कार्य से छुटकारा, खतरे और हानि से बचाव या सुरक्षा और पूर्ण स्वास्थ्य।

इसका अर्थ है बचाया जाना, चंगा किया जाना, छुड़ाया जाना, विजयी, बचाया गया, सुरक्षित रखा गया। इसका अर्थ एक ही समय में ये सारी बातें।

- *'सोज़ो'* का अर्थ है, परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से, शैतान की सामर्थ के अधीन रहने से बचाया जाना और परमेश्वर की व्यवस्था और कल्याण की संपूर्णता में पुनर्स्थापित किया जाना।
- *'सोज़ो'* का अर्थ है आत्मिक उद्धार–पापों की क्षमा।

मत्ती 1:21
वह पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।

प्रेरितों के काम 4:12
और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

रोमियों 10:9
कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

इफिसियों 2:8
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,

- *'सोज़ो'* का अर्थ है शारीरिक चंगाई। खून की समस्या वाली महिला को *सोज़ो* मिला।

मत्ती 9:22
लोहू बहने वाली स्त्री ने सोज़ो पाया, यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा, पुत्री! ढाढ़स बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा *(सोज़ो)* किया है। और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी *(सोज़ो)* हो गई।

गन्नेसरेत के लोगों को ईश्वरीय *'सोज़ो'* ने छू लिया।

मरकुस 6:56
और जहां कहीं वह गांवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उससे बिनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे। और जितने उसे छूते थे, सब चंगे *(सोज़ो)* हो जाते थे।

अंधा बरतिमाई *'सोज़ो'* के विषय में जानता था।

मरकुस 10:52
यीशु ने उससे कहा, "चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।" और वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में उसके पीछे हो लिया।

याकूब 5:13-16
13 यदि तुम में कोई दुःखी हो तो वह प्रार्थना करे; यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाएँ।
14 यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें।
15 और विश्वास की प्रार्थना का द्वारा रोगी बच जाएगा *(सोज़ो)* और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; यदि उसने पाप भी किए हों, तो परमेश्वर उसको क्षमा करेगा।
16 इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

- *'सोज़ो'* का अर्थ है दुष्टात्मा की सामर्थ से छुटकारा।

परमेश्वर के *'सोज़ो'* ने गन्नेसरेत के दुष्टात्मा पीड़ित को बचाया।

लूका 8:36
और देखनेवालों ने उनको बताया, कि वह दुष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य किस प्रकार अच्छा हुआ।

और यहूदा भी इस बात को जानता था।

यहूदा 1:5
परंतु यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तौभी मैं तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूं, कि प्रभु ने एक कुल को मिस देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नाश कर दिया।

- *'सोज़ो'* का अर्थ है छुटकारा / खतरों से सुरक्षा।

शिष्यों ने पुकारा कि उन्हें समुद्र में आयी आंधी में डूबने से बचाया जाए।

मत्ती 8:25
तब शिष्यों ने पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा *(सोज़ो)*, हम नाश हुए जाते हैं।

पौलुस ने अपने मित्र तीमुथियुस को छुटकारा देने की परमेश्वर की सामर्थ के विषय में लिखा है।

2 तीमुथियुस 4:18
और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा *(सोज़ो)*, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके पहुंचाएगा। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

- हर एक के लिए *'सोज़ो'।*

मत्ती 18:11
क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।

हर एक के लिए सोज़ो!!

- विश्वास द्वारा अनुग्रह से *'सोज़ो'* प्राप्त किया जाता है।

मत्ती 9:21,22
[21] क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।
[22] यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा, पुत्री! ढाढ़स बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।

इफिसियों 2:8,9
[8] क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है;
[9] और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

- *'सोज़ो'* तब होता है जब आप अपने हृदय में विश्वास करते हैं और मुंह से अंगीकार करते हैं।

रोमियों 10:9,10
[9] कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।
[10] क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।

2.3 उद्धार का सिद्धांत

दूसरों को उद्धार के विषय में बताने हेतु हमें उद्धार के सिद्धांत को समझना होगा। यह बुनियादी सत्य हैं जिन्हें हमें जानना है, ताकि हम प्रभावी रूप से दूसरों की मसीह की ओर अगुवाई कर सकें।

उद्धार के सिद्धांत में 5 मुख्य उपादान हैंः **परमेश्वर, मनुष्य, खीष्ट, अनुग्रह,** और **विश्वास**।

परमेश्वर

- धर्मी है–इसलिए पाप का दण्ड दिया जाना चाहिए।

यहेजकेल 18:4आ
इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।

- दयालु है–इसलिए हमें दण्ड देना नहीं चाहता।

1 यूहन्ना 4:8
जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

मनुष्य

- पापी है।

रोमियों 3:23
इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

- खुद को बचा नहीं सकता।

इफिसियों 2:8,9
[8] क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है;
[9] और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

खीष्ट

- वह अनंत परमेश्वर-मानव है।

यूहन्ना 1:1
आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

यूहन्ना 1:14
और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर उसने हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

- उसने हमारे पापों का दण्ड दिया और हमारे लिए स्वर्ग में एक स्थान खरीद लिया जो वह भेंट के रूप में हमें देता है।

यशायाह 53:6
हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

अनुग्रह

उद्धार विनामूल्य वरदान है।

रोमियों 6:23
क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

विश्वास

क्या नहीं है: मात्र बौद्धिक मानसिक स्वीकृति नहीं है, और न ही स्वाभाविक विश्वास।

वह क्या है: "उद्धार के लिए केवल यीशु मसीह में भरोसा करना।"

आपका उद्धार आपके विश्वास की गुणवत्ता के कारण नहीं हुआ है, बल्कि आपके विश्वास के लक्ष्य के द्वारा हुआ है!

इफिसियों 2:8
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।

रोमियों 10:9
कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

2.4 निर्धारित करने वाला कारक

- सबको उद्धार देने हेतु जो करने की आवश्यकता उसे थी, वह सब कुछ उसने पहले ही हमारे लिए किया है। मसीह प्रत्येक मनुष्य के लिए मर गया।
- उसकी इच्छा है कि सबका उद्धार हो और वह सब पर अनुग्रह प्रगट करता है।
- प्रत्येक व्यक्ति के लिए अब केवल यही बचा है कि जो कुछ परमेश्वर अपने असीम अनुग्रह और प्रेम के द्वारा विनामूल्य दे रहा है, उसे विश्वास से ग्रहण करना।

2.5 गलत धारणाएं

- "मैं यीशु में विश्वास करता हूं, परंतु मैं दूसरे संतों में, मरियम, गुरुओं में भी विश्वास करता हूं ..."

उद्धार के लिए परमेश्वर ने अपनी ओर से सबकुछ कर दिया है। आपकी क्या भूमिका है?

बाइबल की प्रतिक्रिया

प्रेरितों के काम 4:12
और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं ...।

- समावेश का सिद्धांत

"यीशु प्रत्येक के लिए मरा, अतः हर एक व्यक्ति अपने आप उद्धार पाता है।"

बाइबल की प्रतिक्रिया

यूहन्ना 3:16
हमें उद्धार पाने के लिए पश्चाताप करना है और यीशु में विश्वास करना है।

हमें प चाताप करना है और बचाए जाने के लिए यीशु मसीह पर विश्वास करना है।

- पूर्व निर्धारण (पहले से ठहराए जाने) के सिद्धान्त के विषय में ग़लतफ़हमी

"परमेश्वर ने पहले ही ठहराया है कि कौन उद्धार पाएगा और कौन नहीं।"

पहले से ठहराया जाना पहले से संकल्प करना नहीं है।

बाइबल की प्रतिक्रिया

रोमियों 8:29,30

[29] क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।

[30] फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।

प्रत्येक व्यक्ति जो निर्णय लेगा उसके बारे में परमेश्वर पहले से ही जानता है। हालांकि, वह पहले से तय नहीं करता कि हम क्या चुनाव करेंगे। चुनाव अभी भी हमें ही करना है। पूर्वनिर्धारण वह है जो उसने हमें अपने पुत्र के स्वरूप में बनाने के लिए निर्धारित किया है, और इसका सम्बंध उन चुनावो से नहीं है जो कम करेंगे।

मुख्य मौखिक पद

प्रेरितों के काम 4:12

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

इब्रानियों 7:25

इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है।

रोमियों 10:9,10

[9] कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

[10] क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।

अनुप्रयोग

1) क्या आपने यीशु मसीह में उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास किया और उसे अपना जीवन सौंप दिया? चंद शब्दों में वर्णन करें कि जिस दिन आपने वह समर्पण किया, उस दिन आपको कैसे महसूस हुआ?

2) क्या आप उद्धार की योजना को स्पष्ट रूप से समझते हैं ताकि किसी और को यह समझा सकें? और कौन से तरीके हैं जिसमें मैं अपने निकट मित्र को उद्धार की योजना के विषय में बताने हेतु वार्तालाप आरम्भ कर सकूं?

3) क्या मैं यह समझता हूं कि उद्धार एक सम्पूर्ण पुलिंदा है—पतन और उसके परिणामों से पूर्ण छुटकारा? *'सोज़ो'* द्वारा सूचित सभी शब्दों की सूचि तैयार करें?

3
उद्धार और क्षमा का आश्वासन

(यह पाठ हमें यह सत्य सिखाने के लिए तैयार किया गया है कि मसीह में हर एक विश्वासी को उद्धार और क्षमा का आश्वासन है, जो उन्होंने परमेश्वर की ओर से विनामूल्य पाए हैं। विश्वासी यकीन के साथ जान सकते हैं कि वे उद्धार पाए हुए हैं और वे अपराधबोध, लज्जा और दोष भावना पर विजय पाते हैं।)

3.1 उद्धार का आश्वासन

क्या आपके लिए यह जानना संभव है कि आपके पाप क्षमा किए गए हैं और आप अपने विश्वास के विषय में भरोसा रख सके? क्या आप निश्चित रूप से जान सकते हैं कि आप स्वर्ग के मार्ग पर हैं? क्या आप निःसन्देह यह जान सकते हैं कि परमेश्वर ने आपको पाप के सनातन परिणामों से बचाया है?

उद्धार के आश्वासन के बुनियादी तत्व

आप निःसन्देह जान सकते हैं कि आपका उद्धार हुआ है। आप यह आश्वासन पा सकते हैं कि आपने उद्धार और क्षमा पाई है।

ये तत्व या उपादान इस आश्वासन के विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

- बाइबल का अधिकार
- मसीह का पूरा किया गया कार्य
- मसीह में आपका विश्वास
- आत्मा का आश्वासन
- बदले हुए जीवन का प्रमाण

बाइबल का अधिकार

परमेश्वर ने हमें अपने वचन में सत्य की मज़बूत बुनियाद दी है। उसका वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)। उसकी प्रतिज्ञा का वचन हमारे उद्धार की गारंटी या आश्वासन है।

1 यूहन्ना 5:11-13
[11] और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है; और यह जीवन उसके पुत्र में है।
[12] जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं,
[13] उसके पास जीवन भी नहीं है। मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है, कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

यूहन्ना 5:24
मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

मसीह का पूरा किया गया कार्य

क्रूस पर मसीह ने कहा, *"... पूरा हुआ"* (यूहन्ना 19:30)।

और किसी चीज की आवश्यकता नहीं और उद्धार पाने के लिए और कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

इब्रानियों 9:12
क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिध्द कर दिया है।

इब्रानियों 10:14
और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।

इब्रानियों 10:18
और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।

इफिसियों 2:8,9
[8] क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है;
[9] और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

मसीह में आपका विश्वास

परमेश्वर केवल यही चाहता है कि हम हमारे उद्धारकर्ता के रूप में यीशु मसीह में विश्वास करें और उस विश्वास को प्रगट करें।

यूहन्ना 3:16
क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

1 यूहन्ना 5:1
जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, और जो कोई उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है।

- विश्वास भावना नहीं है। कभी कभी आपको "लगता" है कि आपका उद्धार हुआ है और कभी कभी आप सोचते हैं कि आपको कुछ "महसूस नहीं" होता। विश्वास हमारे भले कामों पर निर्भरता नहीं है।
- विश्वास परमेश्वर पर भरोसा करने का वह चुनाव है जो हम करते हैं।
- विश्वास सरल है और फिर भी जो वह है उसमें (परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता), उसके वचन में (जो वह कहता है, वह अंतिम है) और क्रूस पर उसके द्वारा पूर्ण किए गए कार्य पर यह पूर्ण भरोसा है।

आत्मा का आश्वासन

पवित्र आत्मा हममें हमारे उद्धार का गहरा भीतरी आश्वासन ले आता है। हम जानते हैं कि हमने उद्धार पाया है।

रोमियों 8:15,16
[15] क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।
[16] आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

गलातियों 4:6
और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।

1 यूहन्ना 3:24
और जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह इसमें, और यह उसमें बना रहता है; और इसी से, अर्थात् उस आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वह हममें बना रहता है।

1 यूहन्ना 5:10
जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिसने परमेश्वर कि प्रतीति नहीं की, उसने उसे झूठा ठहराया; क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।

बदले हुए जीवन का प्रमाण

हमारे जीवन निरंतर यीशु मसीह के स्वरूप में बदलते जाते हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि हम उसमें हैं।

2 कुरिन्थियों 5:17
इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।

परमेश्वर हममें कार्य करता है और हमें सामर्थ देता है कि हम अपने उद्धार को पूरा करें—यह दिखाएं कि हमने उद्धार पाया है और ऐसे लोगों के समान चलते हैं जिन्होंने उद्धार पाया है।

फिलिप्पियों 2:12,13
[12] इसलिए हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए, परंतु विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।
[13] क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

1 यूहन्ना 3:6-9
[6] जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता; जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उसको जाना है।
[7] प्रिय बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उसके समान धर्मी है।
[8] जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।
[9] जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है।

इसका अर्थ यह नहीं कि हम "सिद्ध" और "निर्दोष" हैं। परंतु इसका अर्थ यह है कि हम पाप में "बने" नहीं रह सकते या उस तरह से जीवन नहीं बिता सकते, जैसे हम पहले बिताते थे।

1 यूहन्ना 5:18
हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; परंतु जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

3.2 क्षमा का आश्वासन

जब हम पाप करते हैं—उन कामों को करते हैं जो हम जानते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में सही नहीं है—तब हममें वास करने वाला पवित्र आत्मा "दुखी होता" है और वह हमें इस बात की जानकारी देता है। इस प्रकार पवित्र आत्मा हमें "कायल करता" है।

इफिसियों 4:29-32

[29] कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो।
[30] और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।
[31] सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुमसे दूर की जाए।
[32] एक दूसरे पर कृपालु, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।

पाप व्यवस्था का उल्लंघन नहीं है, परंतु ऐसे व्यक्ति का है जो केवल परमेश्वर है।

जब हम पाप करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि हमने गलत किया है, हम इसे जारी नहीं रखने का निर्णय लेते हैं और प्रभु से ऐसा करने के लिए कहते हैं हमें माफ कर दो।

1 यूहन्ना 1:7-9

[7] पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।
[8] यदि हम कहें, कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं और हममें सत्य नहीं।
[9] यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

एक बार जब आपने अपने पापों को मान लिया है, तो आप जान सकते हैं कि आपको क्षमा कर दी गई है। वह चला गया।

1 यूहन्ना 2:12

हे बालको, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए।

- क्षमा प्रेमपूर्वक, स्वेच्छा से कर्ज़ रद्द करना है।
- क्षमा पुनर्स्थापन को ले आती है और रिश्तों को नया बनाती है।

क्षमा के बुनियादी पहलु

- प्रेम पर आधारित हैं।
- उस कीमत पर आधारित हैं जो यीशु ने अदा की।
- पाप पूर्ण रूप से माफ किया गया है।
- क्षमा निरंतर है।

हमारी क्षमा के लिए चुकता की गई कीमत एक समय की घटना है। यीशु केवल एक बार मरा। परंतु, जब हम कबूल करते हैं और पश्चाताप करते हैं, तब हम क्षमा पाते हैं।

1 यूहन्ना 1:9

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

3.3 व्यक्ति क्षमा कैसे पा सकता है?

पश्चाताप और विश्वास

हम अपने पापमय मार्गों से मन फिराते हैं।

यशायाह 55:6,7

[6] जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो;
[7] दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।

नीतिवचन 28:13
जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी।

भजन संहिता 38:18
इसलिये कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करुंगा, और अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा।

भजन संहिता 51:17
टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हूए मन को तुच्छ नहीं जानता।

सच्चा पश्चाताप की हुई गलतियों के लिए क्षमायाचना करते हुए किसी अधिकार का दावा नहीं करता। सच्चा पश्चाताप टूटे हुए और किसी प्रकार की मांग न करने वाले हृदय को व्यक्त करता है।

प्रेरितों के काम 10:43
उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।

क्या परमेश्वर प्रेमी परमेश्वर नहीं? क्या वह लोगों को बिना पश्चाताप के सारे पापों की विनामूल्य बिनशर्त क्षमा नहीं करता? **नहीं!**

- जब वह उद्धार में प्रारम्भिक क्षमा प्रदान करता है, तब वह ऐसा हमारे पश्चाताप के उत्तर के रूप में करता है।
- वह हमें तब क्षमा करता है जब हम यह विश्वास करना आरम्भ करते हैं कि केवल मसीह अपने बलिदान और जीवन के द्वारा हमें उद्धार दे सकता है।

1 यूहन्ना 1:9
यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

दोष भावनाओं पर विजय पाना

क्षमा वह कार्य है जो परमेश्वर करता है। यह हमारी भावनाओं में नहीं होता। वह इस बात पर निर्भर नहीं होता कि हम खुद को क्षमा करते हैं या नहीं। क्षमादान परमेश्वर स्वर्ग की पुस्तक में करता है जब वह हमारे पाप के कर्ज़ पर "रद्द कर" दिया गया का चिन्ह अंकित करता है। हम तब क्षमा पाते हैं जब वह हमें कानूनी तौर पर दोषमुक्त जाहिर करता है, चाहे हम उस क्षण कुछ भी महसूस क्यों न करते हों।

अपराध और लज्जा की भावनाओं के साथ हमारा अधिकतर संघर्ष। अपने पापों को परमेश्वर के पास अंगीकार करने के काफी समय बाद भी हम महसूस कर सकते हैं कि हमने क्षमा नहीं पाई है। हमें यह डर हो सकता है कि परमेश्वर ने हमें इन्कार किया होगा।

3.4 चित्र जो हमारी क्षमा का आश्वासन देते हैं

- परमेश्वर हमारे पापों को झोली में भर लेता है ताकि उन्हें फेंक दें।

अय्यूब 14:17
मेरे अपराध छाप लगी हुई थैली में हैं, और तू ने मेरे अधर्म को सी रखा है।

- परमेश्वर पाप की रुकावट को फूंक मार कर दूर करता है।

यशायाह 44:22
मैंने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है।

- परमेश्वर हमारे पापों को ले लेता है।

भजन संहिता 103:12
उदयाचल अस्ताचल से जितना दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।

- परमेश्वर हमारे पापों के साथ पराजित शत्रू के समान बर्ताव करता है।

मीका 7:19
वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहरे समुद्र में डाल देगा।

- परमेश्वर हमारे पापों को दृष्टि से दूर करता है।

यशायाह 38:17
देख, शान्ति ही के लिये मुझे बड़ी कड़ुआहट मिली; परन्तु तू ने स्नेह करके मुझे विनाश के गड़हे से निकाला है, क्योंकि मेरे सब पापों को तू ने अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

- परमेश्वर हमारे पापों को मन से निकाल देता है।

यिर्मयाह 31:34
... क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।

- परमेश्वर हमारे पाप के कर्ज़ को रद्द करता है।

यशायाह 43:25
मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा।

- परमेश्वर पाप का दाग मिटाता है और शुद्धता स्थापित करता है।

यशायाह 1:18
यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।

परमेश्वर विस्मृति के समुद्र में हमारे पापों को दफना देता है।

मीका 7:19
... तू उनके सब पापों को गहरे समुद्र में डाल देगा।

रोमियों 8:1
इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।

अपराध का "एहसास दिलाने" में और "दोषी ठहराने" में फर्क है। पवित्र आत्मा अपराध बोध कराता है, परंतु वह दोषी नहीं ठहराता। शैतान है जो *"भाइयों पर दोष लगाने वाला"* है, जो हमें अपराधबोध, दण्डाज्ञा और अयोग्यता की भावना से दबाने की कोशिश करता है।

प्रकाशितवाक्य 12:10
फिर मैंने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया।

शत्रु द्वारा लाई गई दोषभावना का हम सामना करें।

ईश्वरीय अधिकार से जो दिया गया है, वह संदेह नहीं है!

टिप्पणी:

- क्षमादान पाप में बने रहने का अनुज्ञापत्र नहीं है।
- यदि हम पाप में बने रहते हैं, तो प्रभु के साथ बातचीत करने की हमारी योग्यता में वह रुकावट लाता है क्योंकि हम जानते हैं कि हम जो सही हैं वह नहीं कर रहे हैं।

1 यूहन्ना 1:6,7
[6] यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं, और सत्य पर नहीं चलते।
[7] परंतु यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

1 यूहन्ना 3:21
हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है।

- हम में से कुछ लोग कुछ लतों के बंधन में होंगे और उन्हें मुक्त होने के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होगी।

3.5 समापन

बोध थर्मामीटर के समान होता है। कभी-कभी आप "अच्छा" महसूस करते हैं और कभी-कभी आप "उदास" महसूस करते हैं।

जिस प्रकार आपकी पृथ्वी की नागरिकता का ज्ञान आप कैसे महसूस करते हैं इस पर निर्भर नहीं है, उसी प्रकार **आपका उद्धार भावनाओं पर आधारित नहीं है, परंतु परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।**

जब व्यक्ति मसीह में है, तब वह सुरक्षित है। शैतान केवल उसे संदेह से और अस्पष्ट प्रतिमाओं से परेशान करने की कोशिश करता है। ऐसा भी समय आता है जब आप अपने आश्वासन पर संदेह करते हैं।

सत्य के क्षय से बचकर रहें: प्रतिदिन अपनी बाइबल पढ़ें!

अपने बोध या भावनाओं पर निर्भर रहने का निर्णय न लें—परंतु परमेश्वर के वचन की बुनियाद पर, उसके द्वारा पूरे किए गए कार्य पर और आपके जीवन में उसके आत्मा के आश्वासन पर निर्भर रहें।

*[इस पाठ में, हम इस प्रश्न पर चर्चा **नहीं करना** चाहते कि "क्या मसीही व्यक्ति अपना उद्धार खो सकता है?" इस चर्चा के लिए सम्पूर्ण परीक्षण एवं समय की आवश्यकता होती है। परंतु, हमें यह जानने की ज़रूरत है कि विश्वासी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह भय के साथ और कांपते हुए अपने उद्धार का "कार्य" पूरा करता जाए (फिलिप्पियों 2:12) और परमेश्वर के वचन के अनुरूप पवित्रता का चालचलन बनाए रखे (इब्रानियों 12:14)। जिन लोगों ने परमेश्वर के राज्य का स्वाद चखा है उनका गिरना (इब्रानियों 6:4-6), निकम्मा ठहरना (1 कुरिन्थियों 9:27), अपना विश्वास रूपी जहाज मिटा देना (1 तीमुथियुस 1:19), पीछे हटना (इब्रानियों 10:26,38,39) और उस पाप को करना सम्भव है जिसका फल मृत्यु है (1 यूहन्ना 5:16,17)]।*

आश्वासन को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित निर्देशों पर विचार करें।

- अपनी बाइबल पढ़ें, उस मज़बूत बुनियाद का खुद को स्मरण दिलाएं जिस पर आपका उद्धार निर्भर है।
- परमेश्वर के साथ प्रार्थना के द्वारा सम्पर्क बनाएं रखें और हर ज्ञात पाप का अंगीकार करें।
- परमेश्वर का, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें और जो सही है वही करें।
- मज़बूत मसीहियों के साथ समय व्यतीत करें और उनका प्रेम आपकी सहायता करने पाए।
- चिंता के साथ दूसरों की सहायता करें क्योंकि आप उनसे प्रेम करते हैं।
- इस बात को पहचानें कि आपका संदेह और हताशाएं आत्मिक होने के बजाए अधिक भावनात्मक हो सकती हैं। इससे आप अनावश्यक अपराधबोध से बचेंगे जो आपके विश्वास के अभाव में होता है।

मुख्य मौखिक पद

रोमियों 8:1
इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।

रोमियों 8:15,16
15 क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

भजन संहिता 103:12
उदयाचल अस्ताचल से जितना दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।

अनुप्रयोग

1) उन बुनियादी तत्वों की सूचि तैयार करें जो मसीह में आपके उद्धार का आश्वासन दिलाते हैं।

2) "व्यक्ति की क्षमा का आश्वासन देने वाले चित्र" पर आधारित उन बातों को लिखें जो दोषभावनाओं पर जय पाने में आपकी सहायता कर सकती हैं।

4
परीक्षा पर विजय पाना

(यह पाठ हमें परीक्षा के विषय में कुछ बातें सिखाता है और यह सिखाता है कि परीक्षा पर विजय पाने की और विजयी मसीही जीवन जीने की सामर्थ परमेश्वर हमें कैसे देता है।)

4.1 परीक्षा पर विजय पाना

हम सभों को परीक्षा का सामना करना होगा। परीक्षा पाप के लिए प्रेरित करती है। वह हमारे जीवन से परमेश्वर की उत्तम बातों को ले लेती है। किसी परीक्षा में लगातार पड़ने से हम उसके बन्धन में आ जाते हैं और वह हमारे जीवन में एक लत या गढ़ बन जाती है (विचार का क्षेत्र या आदत जो शत्रु के नियंत्रण में होती है)। परंतु हम परीक्षा पर विजय पाकर अपने जीवन के सारे क्षेत्रों में विजयी जीवन जी सकते हैं।

4.2 परीक्षा के तीन स्त्रोत

1) जगत में आने वाली परीक्षा

1 यूहन्ना 2:15,16
[15] तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है।
[16] क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

"संसार" यह शब्द अक्सर हमारे पापमय मानवता के समाज का वर्णन करने हेतु किया जाता है जो परमेश्वर के विरोध में विद्रोही स्वभाव रखता है।

1 यूहन्ना 5:19
हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।

परमेश्वर का विरोध करने के कारण, संसार उन बातों को मूल्य देता है जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हैं: *"शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड।"*

1 यूहन्ना 2:16
क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

इस प्रकार विश्वासी के लिए संसार की परीक्षाएं दोहरी हैं: इन्द्रियसुखों का मोह और अपने जीवन पर स्वामित्व करने का घमंड।

संसार की बातों का मोह विश्वासी को जगत के तौर-तरीकों में लिप्त होने के लिए मोहित करता है।

याकूब 4:4
हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानती, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।

याकूब 1:27
हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।

2) शरीर में आने वाली परीक्षा

"शरीर" से बाइबल का अर्थ है शरीर और प्राण की बुरी अभिलाषाएं (मन, इच्छा और भावनाएं)। हम आज भी एक भौतिक संसार में रहते हैं और इसलिए हमें उनका सामना करना होगा।

इनमें से कुछ की सूची यहां दी गई हैः

गलातियों 5:19-21
[19] शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन,
[20] मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,
[21] डाह, मतवालपन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमको पहले से कह देता हूं जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

याकूब 1:13-16
[13] जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।
[14] परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है।
[15] फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जन्म देती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यू को उत्पन्न करता है।
[16] हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ।

प्रलोभन की प्रक्रिया

- अपनी ही अभिलाषाओं में खींच कर।
- फंसकर–हमारी इच्छा शक्ति कमज़ोर पड़ जाती है (यूनानी–"जाल में फंसना")।
- अभिलाषा गर्भवती होती है–अभिलाषा को वश हो जाती है। इसका परिणाम पाप होता है।

किसी गलत कार्य के लिए मेरी इच्छा का उत्तेजित होना और अपनी ही इच्छा से खींचे जाना फिर भी पाप नहीं है। मैं करीब करीब फंस भी सकता हूं–फिर भी यह पाप नहीं है। केवल जब मैं उस इच्छा के वश में हो जाता हूं, तब मैं पाप करता हूं।

कुछ मसीही लोग नाहक ही खुद को दोष देते हैं, क्योंकि उनके अंदर गलत इच्छा उत्पन्न हुई है। यह अपने आप में पाप नहीं है। केवल जब आप इन इच्छाओं के वश में हो जाते हैं, कोई गलत काम करने के द्वारा या जानबूझकर उन इच्छाओं पर मनन करने से, तब आप पाप करते हैं।

3) शैतान की ओर से आने वाली परीक्षा

मत्ती 4:3
तब परखने वाले ने पास आकर उससे कहा, यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो कहें कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।

1 थिस्सलुनीकियो 3:5
इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिए भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।

शैतान परीक्षा में डालने वाला है।

शैतान तीन बातों में हमारी परीक्षा लेता है। शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड।

उत्पत्ति 3:6
अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया।

1 यूहन्ना 2:16
क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

परीक्षा में लाने का शैतान का मूल तरीका है धोखा।

> परीक्षा में डालने का शैतान का प्राथमिक तरीका धोखा है।

खाने में अच्छा ⟶ "शरीर की अभिलाषा"

देखने में मनभाऊ ⟶ "आंखों की अभिलाषा"

बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य ⟶ "जीविका का घमण्ड"

2 कुरिन्थियों 11:3
परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भष्ट न किए जाएं।

प्रकाशितवाक्य 12:9
और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।

4.3 यीशु ने परीक्षा का सामना किया और उस पर विजय पाई

मत्ती 4:1-11
[1] तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो।
[2] वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा, और अन्त में उसे भूख लगी।
[3] तब परखने वाले ने पास आकर उससे कहा, "यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो कहें कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।"
[4] यीशु ने उत्तर दिया, "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'"
[5] तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और उसे मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया।
[6] और उससे कहा, "यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो अपने आप को नीचे गिरा दें, क्योंकि लिखा है, 'वह आपके विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे आपको हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि आपके पांवों में पत्थर से ठेस लगे।' "
[7] यीशु ने उससे कहा, "यह भी लिखा है, कि 'तू प्रभु, अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।' "
[8] फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर
[9] उससे कहा, "यदि आप गिरकर मुझे दण्डवत करें, तो मैं यह सब कुछ आपको दे दूंगा।"
[10] तब यीशु ने उससे कहा, "हे शैतान! दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत कर, और केवल उसी की उपासना कर।"
[11] तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

इब्रानियों 4:15
क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।

इबानियों 2:18
क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।

शत्रु हमारी कैसे परीक्षा लेता है यह हम तुरंत देखेंगे।

शैतान की परीक्षाएं अक्सर हमारे मन से संबंध रखती हैं—उनका संबंध मन के विरोध में आक्रमण से होता है।

यीशु की सभी बातों में परीक्षा हुई, और उसी तरह जिस तरह हमारी परीक्षा होती है।

शैतान यीशु को एक क्षण में जगत के सारे राज्य दिखा सकता था, वह है कल्पना के द्वारा। यीशु जंगल में था। इसलिए शैतान केवल कल्पना के माध्यम से यीशु को यरूशलेम को "ले गया" होगा और उसने उसे मंदिर के कंगूरे पर रखा होगा।

इसलिए हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे विरोध में कार्य करने का शैतान का एकमात्र तरीका मन के क्षेत्र में है—हमारे विचारों को उसके विचारों, योजनाओं, सुझावों, चित्रों, कल्पनाओं आदि से जोड़ना।

शैतान के विचार, चित्र, कल्पनाएं जो हमारे मन में आती हैं, हमारी शारीरिक अभिलाषाओं, भूख और वासनाओं को उकसाने के लिए होती हैं। जब इस प्रकार हमारी अभिलाषाएं उत्तेजित हो जाती हैं, तब हम उनकी ओर खींचे जाते हैं, सामना करने की हमारी इच्छा कमज़ोर पड़ जाती है, और यदि हम संयम का उपयोग न करें, तो हम उसके वश में हो जाते हैं, जो पाप की ओर ले जाता है।

बुरे चित्र, विचार या कल्पनाओं का मन में आना पाप नहीं होता। बुरी बातों पर विचार करना या उस विचार पर कार्य करना पाप है।

आप इन विचारों को आने से रोक नहीं सकते, परंतु आप उन्हें बने रहने से रोक सकते हैं।

4.4 हम परीक्षा पर विजय पाकर विजयी जीवन जी सकते हैं

जो आप सहन करेंगे वह प्रभुता करेगा!!!

1 कुरिन्थियों 10:12,13
[12] इसलिए जो समझता है कि मै स्थिर हूं, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।
[13] तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है; और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

इफिसियों 4:23,24
[23] और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
[24] और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।

2 पतरस 1:3
क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है,

1 यूहन्ना 5:1,4

[1] जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, और जो कोई उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है।

[4] क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।

हम अंदर से नई सृष्टि हैं और हम में परमेश्वर का जीवन और स्वभाव है। हमने विजय पाने के लिए जन्म लिया है। परमेश्वर ने हमें जय पाने के लिए हथियार दिए हैं।

नीचे दिए गए वचन में परीक्षा पर काबू पाने की प्रगति पर एक शीघ्र दृष्टि डालें।

2 कुरिन्थियों 10:3-6

[3] क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।

[4] क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

[5] हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह की आज्ञाकारी बना देते हैं।

[6] और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें।

शरीर को क्रूस पर चढ़ाएं और मन का नवीनीकरण करें

विश्वासी होने के नाते हमारी सबसे बड़ी लड़ाई हमारे शरीर के साथ है—शरीर और मन की अधर्मी दैहिक इच्छाओं के साथ। हमें शरीर को क्रूस पर चढ़ाना है और विजयी जीवन बिताने हेतु निरंतर अपने मन का नवीनीकरण करना है।

4.5 परीक्षा पर सफलतापूर्वक विजय पाने हेतु हथियार

1) क्रूस की सामर्थ

क्रूस पर यीशु ने न केवल हमारे पापों का दाम चुकाया, बल्कि उसने हमारे जीवनों पर से पाप की सामर्थ को भी नष्ट कर दिया।

रोमियों 6:6,14

[6] क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम भविष्य में पाप के दासत्व में न रहें।

[14] और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं, वरन् अनुग्रह के आधीन हो।

इस सत्य को कबूल करना, पहचानना और उसकी शरण में जाना विजय के साथ जीवन बिताने का आधार है।

"मैं यह कबूल करता हूं कि पाप और पापमय आदतों का मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। मैं पाप की प्रभुता से मुक्त हूं!"

2) समर्पण की सामर्थ

1 कुरिन्थियों 6:9-11

[9] क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ; न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी;

[10] न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।

[11] और तुममें से कई ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।

मसीह में हम पवित्र किए गए हैं।

पवित्रीकरण (अलग किया जाना, पवित्र किया जाना) मसीह ने हमारे लिए पहले से कर दिया है।

समर्पण करना मैं खुद को पवित्र करने हेतु समर्पण करता हूं ताकि जो पहले से आत्मा में पूरा किया गया है उसे मैं स्वभाव में ला सकू।

परमेश्वर हमारी इच्छाओं का आदर करता है। वह हमारी इच्छाओं पर ज़ोर नहीं देगा। (**उदाहरणः** आदम और हव्वा)।

मेरी इच्छा शामिल होती है। मैं अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा से जोड़ता हूं।

आपके शारीरिक स्नायु के अनुसार, आपकी इच्छा आपकी "भावनात्मक" स्नायु है। आप अपनी इच्छा को उसी तरह ताकतवर बना सकते हैं जैसे आप अपने भौतिक स्नायु को मज़बूत बनाते हैं। किसी बात का सामना करने की आपकी इच्छा को परमेश्वर के वचन के द्वारा, आत्मा के बल से, प्रार्थना के माध्यम से, घोषणा के माध्यम से और निरंतर अभ्यास से मज़बूत बनाया जा सकता है।

इफिसियों 4:27
... और न शैतान को अवसर दो।

शैतान को प्रवेश न दें। सारे दरवाजे बंद रखें।

कुलुस्सियों 3:1,2
[1] इसलिए जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।
[2] पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

भक्तिमानता की बातों से लगाव करने का चुनाव करें

उदाहरण के तौर परः मैं प्रार्थना करता हूं, *"परमेश्वर, मैं अपने मन, अपनी भावनाओं, अपनी इच्छाओं, अपनी यौन अभिलाषाओं सबको आपको समर्पित करता हूं।"* इस प्रकार मैं यह कहते हुए घोषणा करता हूं कि मेरा मन, मेरी भावनाएं, मेरी इच्छाएं, मेरी यौन अभिलाषाएं सभी परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं।

प्रतिदिन के जीवन में समर्पणः

दूर रहें

यदि आप पहला निवाला न लेंगे तो आप दूसरा निवाला नहीं लेना चाहेंगे।

उपवास कुछ दिनों के लिए आपकी शारीरिक भूख को बंद करेगा। परंतु उपवासपूर्ण जीवन अपवित्र इच्छाओं को निरंतर बंद रखता है।

- परीक्षा या प्रलोभन के प्रगट क्षेत्रों से बचकर रहें।

भजन संहिता 101:3
मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊंगा। मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हूं; ऐसे काम में मैं न लगूंगा।

- अपनी आंखों की रक्षा करें।

मत्ती 5:27-30
[27] "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।'
[28] परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री को कुदृष्टि से देखे वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।

[29] यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
[30] और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

1 थिस्सलुनीकियों 5:22
सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।

आत्म-सुरक्षा की रणनीति

खुद की रक्षा करने हेतु कुछ सीमाएं तय करें।

अंग काट डालना

यदि कुछ पापमय हो रहा है, तो उसके साथ सख्ती से व्यवहार करें। कुछ समय के लिए वह पीड़ादायक हो सकता है, परंतु घाव चंगा हो जाएगा।

निर्बलता के क्षणों में अतिरिक्त सावधानी बरतें

भारी विपत्ति, या भारी विजय के क्षणों में, अवसाद, अकेलापन, पीड़ा, चोट, बड़ी ज़रूरत आदि के क्षणों में आप कमज़ोर होते हैं। आपकी बुद्धि विकृत हो गई है। जो एक समय गलत था, अचानक सही लगता है। आपकी इच्छा अत्यंत निर्बल रहती है। इसलिए ऐसे क्षणों में दुगनी सावधानी बरतें।

जानें कि आप कब कमज़ोर हैं और ऐसे क्षणों में कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से इन्कार करें और खुद को उजागर न करें। शैतान के छल ऐसे क्षणों में मज़बूत होते हैं। ऐसे क्षणों में झूठ का सत्य दिखाई देना आसान होता है।

2 शमुएल 11:1
फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते है, उस समय, अर्थात वर्ष के आरंभ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इसाएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों को नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। परंतु दाऊद यरूशलेम में रह गया।

3) वचन की सामर्थ

भजन संहिता 17:4
मानवी कामों में मैंने तेरे मुँह के वचनों के द्वारा अधर्मियों के मार्ग से स्वयं को बचाए रखा।

भजन संहिता 119:9
जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुध्द रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।

- वचन आग के समान है–वह शुद्ध करता है।
- वचन हथोड़े के समान है–वह मेरे कठिन और कठोर भागों को तोड़ देता है।
- वचन जल के समान है–वह मुझे धोता और शुद्ध करता है ... और बहुत कुछ ....

परमेश्वर के वचन से अपने मनों को नया बनाएं।

अपने मन की रक्षा करने हेतु परमेश्वर के वचनों का उपयोग करें।

बुरे विचारों के विरोध में अपने मन की रक्षा करें।

रोमियों 8:5-8

[5] क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आत्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
[6] शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
[7] क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
[8] और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

शारीरिक मन शरीर की बातों की अभिलाषा करता है, परंतु नवीनीकरण प्राप्त मन आत्मा की बातों का अनुसरण करता है।

अपने संघर्ष केक्षेत्र से संबंधित वचन पर मनन करें।

मन

फिलिप्पियों 4:8
निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान जो जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

मैं अपने संघर्ष केक्षेत्र से संबंधित वचन पर ध्यान करता हूं। मैं वचन को कबूल करता हूं।

स्त्रियां

मत्ती 5:27-30
[27] "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।'
[28] परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री को कुदृष्टि से देखे वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।
[29] यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
[30] और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाएँ, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

नीतिवचन 6:25
उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फंसाने न पाए।

4) आत्मा की सामर्थ

गलातियों 5:22,23
[22] पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास,
[23] नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

पवित्र आत्मा मुझे आत्म-संयम या अनुशासन के लिए सामर्थ, खुद पर शासन करने की योग्यता देता है। मेरे शरीर पर प्रभुता करने और उसकी देखभाल करने की सामर्थ वह देता है।

2 तीमुथियुस 1:7 (आत्म संयम या अनुशासन)
क्योंकि परमश्वेर ने हमें भय की नहीं, परंतु सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

रोमियों 8:1-13,26
[1] इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं;
[2] क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
[3] क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप का बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
[4] इसलिए कि व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं, वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
[5] क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आत्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
[6] शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

[7] क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
[8] और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
[9] परन्तु जबकि परमेश्वर का आत्मा तुममें बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।
[10] और यदि मसीह तुममें है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।
[11] और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुममें बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा, जो तुममें बसा हुआ है जिलाएगा।
[12] इसलिए हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें।
[13] क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे; यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।
[26] इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है।

पवित्र आत्मा की सहायता से, मैं अपने शरीर की अनैतिक अभिलाषाओं को मार देता हूं

शरीर के कामों के विरोध में परमेश्वर हमें अपने हाथों में लेता है।

गलातियों 5:16,24,25
[16] परंतु मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
[24] और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।
[25] यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

चाल–अपने सम्पूर्ण जीवन को नियमित करें–परमेश्वर के आत्मा के अधीन हो जाएं।

एक छोटी सी प्रार्थना जो मैंने हमेशा की हैः "पवित्र आत्मा, कृपया मेरी सहायता कीजिए!" हर समय शांत बने रहें! यह परमेश्वर के आत्मा की अधीनता में बने रहने के लिए महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर का आत्मा आग के समान है–उसकी उपस्थिति मुझमें की अशुद्धता को जलाकर भस्म कर देती है। इसलिए मैं बिनती करता हूं कि आत्मा की और आग मुझमें जलती रहे।

मत्ती 3:11
मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

मलाकी 3:2-4
[2] परंतु उसके आने के दिन की कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है।
[3] वह रुपे का तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रुपे की नाईं निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएँगे।
[4] तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी, जैसी पहले दिनों में और प्राचीनकाल में भावती थी।

- अभिषेक जुए को तोड़ता है और बंधनों को हटाता है।
- आप एक क्षण में आज़ाद होते हैं–परंतु आपको स्वतंत्र बने रहने के लिए इन आत्मिक सच्चाइयों में चलते रहना है।
- प्रार्थना हमारी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनाती है।

इब्रानियों 5:7-9
[7] उसने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आँसू बहा बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और बिनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई।
[8] और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठा कर आज्ञा माननी सीखी।
[9] और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।

मत्ती 26:38,39,42

[38] तब उसने उनसे कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
[39] फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा, हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए। तौभी, जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा आप चाहते हैं वैसा ही हो।
[42] फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो आपकी इच्छा पूरी हो।

जैसा यीशु के साथ था वैसा ही हमारे जीवनों में भी है, कई बार, हम प्रार्थना के समय में प्रवेश करते हैं जहां हमारी इच्छाएं पूर्ण रूप से उसकी इच्छा के अनुसार नहीं करतीं। और जब हम पिता की उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं, तो अक्सर हम अपनी इच्छाओं को पूर्ण रूप से उसकी इच्छा के अधीन बनाकर बाहर निकलते हैं। हम यह कहते हुए अपने प्रार्थना समय से बाहर आते हैं कि, "आपकी इच्छा पूरी हो।" प्रार्थना हमारी इच्छा को पिता की इच्छा के अनुरूप ढालने में मदद करती है ताकि हम पृथ्वी पर उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए तैयार रहें।

रोमियों 8:26,27

[26] इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है।
[27] और मनों का जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।

"सहायता" इस शब्द का अर्थ है "के साथ, के विरोध में थाम लेना," प्रार्थना के द्वारा पवित्र आत्मा शरीर की निर्बलता के विरोध में, हमारे साथ थाम लेता है।

5) घोषणा की सामर्थ

प्रकाशितवाक्य 12:11

और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली।

1 पतरस 5:8,9

[8] सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।
[9] विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुख भुगत रहे हैं।

घोषणा करें कि यीशु के लहू ने आपके लिए क्या किया है।

अपनी परीक्षा के दौरान, हर बार यीशु ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि "यह लिखा है ..."

बोला गया वचन आत्मा की तलवार है, जिसे हमें उपयोग करना चाहिए।

परमेश्वर का वचन कहकर परीक्षाओं का और उन परीक्षाओं को लाने वाली अंधकार की शक्तियों का सामना करें।

याकूब 4:7

इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

याकूब 3:3-6

[3] जब हम अपने वश में करने के लिए घोड़ों के मुंह में लगाम लगाते हैं, तो हम उनकी सारी देह को भी फेर सकते हैं।
[4] देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तौभी एक छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं।
[5] वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी बड़ी डीगें मारती है। देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है।
[6] जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।

जीभ की सामर्थ को समझें। जीभ जहाज की पतवार, या घोड़े की लगाम के समान होती है।

पवित्रता और शुद्धता के इच्छित परिणाम को बोलें। अपने शरीर से बात करें और उसे पवित्र और शुद्ध घोषित करें। अपनी भावनाओं पर, अपनी यौन अभिलाषाओं पर और शरीर की अभिलाषाओं पर बोलें और उन्हें परमेश्वर के लिए पवित्र और शुद्ध घोषित करें।

6) सकारात्मक प्रभाव की सामर्थ

1 कुरिन्थियों 15:33
धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।

इफिसियों 5:11
और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन् उन पर उलाहना दो।

1 कुरिन्थियों 5:11
मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।

जिन शब्दों को आप सुनते हैं, उनके साथ साथ आपके आसपास के लोगों के तर्क, मानक, आचरण और चुनाव–भी आपको प्रभावित करता है। जो लोग आपसे बहुत आगे हैं उन्हें अपने आदर्श बनाएं–आप जो हैं उससे बेहतर बनने के लिए जो आपको चुनौती देंगे।

आप पुराने पापों से छुटकारा पा सकते हैं जो आपको नियंत्रित करते रहे हैं। जब आपको परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है–तब उनसे लड़ने के लिए इन सच्चाइयों को खुद पर लागू करें–विजय बिना लड़ाई के, अपने आप ही नहीं आती।

"बंधन" (पापमय आचरण, व्यसन) के कुछ क्षेत्रों को विजय पाने हेतु अतिरिक्त सहायता की ज़रूरत होगी। स्वतंत्र होने के लिए सहायता पाने हेतु अपने जीवन समूह के अगुवे, पासबान, या मार्गदर्शक के साथ बात करें।

मुख्य मौखिक पद

1 यूहन्ना 2:15,16
15 तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है।
16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

1 कुरिन्थियों 10:12,13
12 इसलिए जो समझता है कि "मै स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।
13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है; और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

इफिसियों 4:23,24
23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
24 और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।

अनुप्रयोग

1) परीक्षा पर विजय पाने हेतु आप कैसे अपने आपको सुसज्जित कर सकते हैं?

2) क्या कोई परीक्षा / पाप के क्षेत्र हैं जिसमें आप अपने साथियों / मित्रों की वजह से गिरते हैं? पाप में गिरने से खुद को बचाने हेतु आप क्या बदलाव कर सकते हैं?

5
प्रार्थना

(यह पाठ हमें प्रार्थना के मूल सिद्धान्त सिखाता है और हमें प्रेरणा देता है कि हम प्रार्थना का मज़बूत व्यक्तिगत जीवन तैयार करें।)

5.1 प्रार्थना परमेश्वर के साथ सहभागिता है

प्रार्थना केवल परमेश्वर के साथ वार्तालाप है—परमेश्वर के साथ बातें करना, जब आप अपना हृदय परमेश्वर पर प्रकट करते हैं। और परमेश्वर अपना हृदय आप पर प्रगट करता है। यह दोनों ओर से वार्तालाप है।

प्रार्थना उसके साथ निकटता के स्थान पर आने का परमेश्वर का निमंत्रण है

लूका 11:1
फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया, वैसे ही हमें भी आप सिखा दें।

लूका 18:1
फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए, उनसे यह दृष्टान्त कहा।

परमेश्वर ने प्रार्थना की व्यवस्था कायम की। परमेश्वर हमें प्रार्थना करने बुलाता है ताकि हम उसके साथ निकट आ सकें, उसे जान सकें, उसकी बाट जोह सकें और उसकी सामर्थ से नया बन सकें। परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह हमें उत्तर देगा।

स्वयं यीशु प्रार्थना का जन होने का हमारा सबसे बड़ा उदाहरण है।

मरकुस 1:35
और भोर को दिन निकलने से बहुत पहले, वह उठकर एकांत स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।

लुका 6:12
और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।

प्रार्थना आत्मिक गतिविधि है—अतः प्रार्थना में मुद्रा का कोई महत्व नहीं होता। आप घुटने टेक सकते हैं, बैठ सकते हैं या खड़े हो सकते हैं। हमें प्रार्थना में माला जपने की ज़रूरत नहीं है। हमें प्रार्थना में किसी संत की उपासना करने की आवश्यकता नहीं है। हमें किसी चित्र, प्रतिमा या मूरत की ज़रूरत नहीं है। हम प्रार्थना में व्यर्थ बातों को और मंत्र को नहीं दोहराते। हम बिना हृदय के किसी प्रार्थना पुस्तक से प्रार्थना भी नहीं पढ़ते।

जब हम प्रार्थना करते हैं, तब परमेश्वर सुनता है

1 पतरस 3:12
क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती है, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।

यिर्मयाह 29:12
तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा।

भजन संहिता 65:2
हे प्रार्थना के सुननेवाले! सब प्राणी तेरे ही पास आएंगे।

नीतिवचन 15:29
यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।

भजन संहिता 141:2
मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्धी धूप, और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे!

जब हम प्रार्थना करते हैं तब परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देने की प्रतिज्ञा करता है

मत्ती 7:7-11
[7] "मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।
[8] क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।
[9] "तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे;
[10] या यदि वह मछली मांगे, तो उसे सांप दे?
[11] इसलिए जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?

मत्ती 21:22
और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुमको मिलेगा।

परमेश्वर चाहता है कि हम प्रार्थना में ऐसे स्थान में आएं, जहां पर हमारे द्वारा प्रतिदिन की जानेवाली प्रार्थना का उत्तर मिले। यीशु हमारा आदर्श है—हमारा नमूना। उसने कभी ऐसी प्रार्थना नहीं की जिसका उत्तर नहीं मिला।

हमारी प्रार्थना में किसी भी प्रकार की असफलता का आरोप परमेश्वर पर नहीं लगाया जा सकता। प्रार्थना में किसी भी प्रकार की असफलता का संबंध मनुष्य से है। अक्सर, हमें यह स्वीकार करना है कि हम इस बात का स्पष्टीकरण नहीं दे सकते कि कुछ प्रार्थनाएं हमारी अपेक्षा के अनुसार परिणाम नहीं ला सकी या हमारे अपेक्षित समय में। हमारी असफलता को समझाने के प्रयास में हम "सत्य" को नहीं बदल सकते। हम इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि हम अभी भी सीख रहे हैं कि प्रभावी रूप से प्रार्थना कैसे की जा सकती है। इसलिए, सारी असफलताओं के बावजूद, हमें जैसा कि परमेश्वर के वचन में प्रगट किया गया है उसके अनुसार प्रार्थना से संबंधित सच्चाइयों का पालन करते हुए हमें प्रार्थना की हमारी यात्रा में बने रहते हैं।

प्रार्थना हमें बदल देती है

- हमारा बल नया होता है।
- हमारी इच्छा उसकी इच्छा के अनुरूप ढल जाती है।
- हमारी इच्छा और प्रवृत्ति बदल दी जाती है।

प्रार्थना हमारे आसपास के संसार को नया रूप देने हेतु और इतिहास रचने हेतु परमेश्वर के साथ साझेदारी करना है

- परमेश्वर हमारी परिस्थितियों में हस्तक्षेप करता है।
- प्रार्थना परमेश्वर के साथ सहभागिता करना है, हमारे संसार में उसकी प्रभुता और उसके राज्य को स्थापित करने हेतु परमेश्वर को निमंत्रण देना है।

5.2 मैं प्रार्थना में क्या कर सकता हूं?

क्यों प्रार्थना करें?

प्रार्थना एक ऐसा विशेषाधिकार है जिसमें हम प्रार्थना के अभ्यास को या उसकी आवश्यकता को नज़रअन्दाज नहीं कर सकते।

मत्ती 6:9-13

[9] इसलिए तुम इस रीति से प्रार्थना किया करोः "हे हमारे पिता, आप जो स्वर्ग में है, आपका नाम पवित्र माना जाए।
[10] आपका राज्य आए; आपकी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
[11] हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दें।
[12] और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही आप भी हमारे अपराधों को क्षमा करें।
[13] और हमें परीक्षा में न लाएं, परन्तु बुराई से बचाएं; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा आपके ही हैं। आमीन।

- उससे वार्तालाप करने के लिए प्रार्थना करेंः *हे हमारे पिता, आप जो स्वर्ग में हैं।*
- उसकी आराधना, उपासना और आदर करने के लिए प्रार्थना करेंः *आपका नाम पवित्र माना जाए।*
- पृथ्वी पर उसके राज्य और अधिकार के लिए प्रार्थना करेंः *आपका राज्य आवे।*
- प्रार्थना करें कि उसकी इच्छा, योजना, और उद्देश्य स्थापित होः *जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर भी आपकी इच्छा पूरी हो।*
- सारी ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करेंः—आत्मिक, भावनात्मक, भौतिक, आर्थिक और अन्य ज़रूरतों के लिए : हमारी रोज की रोटी आप आज हमें दे।
- क्षमा और शुद्धता के लिए प्रार्थना करेंः *और हमारे अपराधों को क्षमा करें।*
- दूसरों को क्षमा करने के लिए प्रार्थना करेंः *जैसे हम दूसरों के अपराध क्षमा करते हैं।*
- परीक्षा पर विजय पाने के लिए प्रार्थना करेंः *हमें परीक्षा में न लाएं।*
- दुष्टात्माओं के विरोध पर विजय पाने के लिए प्रार्थना करेंः *परंतु हमें बुराई से बताएं।*
- परमेश्वर को सारी महिमा और स्तुति देने के लिए प्रार्थना करेंः *क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा सदा आपके ही हैं। आमीन।*

5.3 विभिन्न प्रकार की प्रार्थना

इफिसियों 6:18

और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो।

इसमें हमेशा सब प्रकार की प्रार्थनाएं करना शामिल है।

1 तीमुथियुस 2:1

अब मैं सब से पहले यह उपदेश देता हूं कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाएं।

प्रार्थना के प्रकार

1) मांगना और प्राप्त करना
2) धन्यवाद देना
3) समर्पण
4) सहमति
5) अंगीकार
6) सध्यस्थी
7) आत्मा में
8) चंगाई
9) सेवा नियुक्ति
10) प्रभुभोज

हम यहां प्रार्थना की विभिन्न अभिव्यक्तियां देखते हैं–निवेदन, प्रार्थनाएं, मध्यस्थी, धन्यवाद देना, आदि।

कुछ प्रार्थनाएं जो हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं, वे हैं:

1) मांगने और पाने की प्रार्थना

यह उस प्रकार की प्रार्थना है जिसका हम तब उपयोग करते हैं जब हम परमेश्वर से कुछ विशिष्ट मांगना और पाना चाहते हैं।

मत्ती 7:7-11

7 "मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।
8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।
9 "तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे;
10 या यदि वह मछली मांगे, तो उसे सांप दे?
11 इसलिए जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?

मरकुस 11:24
इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।

यूहन्ना 16:23,24
23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे; मैं तुमसे सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।
24 अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; माँगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

2) धन्यवाद की प्रार्थना

हम ऐसा तब करते हैं जब हम परमेश्वर के प्रति अपने आभार को व्यक्त करना चाहते हैं या किसी बात के संबंध में जिसे हम स्वाभाविक संसार में देखने से पहले ही। मान लेते हैं कि पूरी हो गई है, परमेश्वर में अपने विश्वास को व्यक्त करते हैं।

1 तीमुथियुस 2:1
अब मैं सब से पहले यह उपदेश देता हूं कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाएं।

फिलिप्पियों 4:6
किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।

3) समर्पण की प्रार्थना

जब हम समर्पण की मुद्रा में रहते हैं और अपनी इच्छा को परमेश्वर के निर्देशों और मार्गदर्शन के प्रति अधीन करते हैं, तब हम इसका उपयोग करते हैं।

मत्ती 26:37-44
37 और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को अपने साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा।
38 तब उसने उनसे कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
39 फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा, हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए। तौभी, जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा आप चाहते हैं वैसा ही हो।
40 फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा, क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?
41 जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।
42 फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो आपकी इच्छा पूरी हो।

43 तब उसने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आंखें नींद से भरी थीं।
44 और वह उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की।

4) सहमति की प्रार्थना

किसी विशिष्ट बात के पृथ्वी पर पूरा होने के लिए जब हम दूसरों के साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं, तब हम सहमति की प्रार्थना करते हैं।

मत्ती 18:19
फिर मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन के होकर मांगे, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिए हो जाएगी।

प्रेरितों के काम 1:14
ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे।

प्रेरितों के काम 2:1
जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।

प्रेरितों के काम 4:29-31
29 अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएँ।
30 और चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएँ।
31 जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा में परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।

5) पश्चाताप / अंगीकार की प्रार्थना

जब हम अपनी गलतियों को कबूल करते हैं और विश्वास से परमेश्वर से क्षमा और शुद्धता प्राप्त करते हैं, तब हम पश्चाताप/अंगीकार करते हैं।

1 यूहन्ना 1:7-9
7 परंतु यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।
8 यदि हम कहें कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हममें सत्य नहीं।
9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

6) मध्यस्थी की प्रार्थना / दूसरों के लिए प्रार्थना करना

इफिसियों 6:18
और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो।

1 तीमुथियुस 2:1
अब मैं सब से पहले यह उपदेश देता हूं कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाएं।

अय्यूब 9:32
क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उससे वाद विवाद कर सकूं, और हम दोनों एक दूसरे से मुकदमा लड़ सकें।

अय्यूब 16:21
कि कोई परमेश्वर के विरूद्ध सज्जन का, और आदमी का मुकदमा उसके पड़ोसी के विरूद्ध लड़े।

7) आत्मा में प्रार्थना करना (अन्यान्य भाषाएं)

1 कुरिन्थियों 14:2,15,28

[2] क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

[15] इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।

[28] परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे।

8) चंगाई के लिए विश्वास की प्रार्थना

याकूब 5:14

यदि तुममें कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिए प्रार्थना करें।

9) सेवकाई में भेजने हेतु प्रार्थना–लोगों को सेवकाई में नियुक्त करने या भेजने हेतु

प्रेरितों के काम 13:3

तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।

प्रेरितों के काम 14:23

और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।

10) प्रभुभोज / सहभागिता के लिए प्रार्थना

जब आप अपने हृदय की बातों को/विचारों/भावनाओं को परमेश्वर के साथ मात्र बांटते हैं और जो कुछ वह आपके साथ बांटता है उससे अनुकुल होते हैं, तब आप सहभागिता/संगति की प्रार्थना करते हैं।

भजन संहिता 62:8

हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो; उस से अपने अपने मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।

1 यूहन्ना 1:3

जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हों; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।

ये भिन्न भिन्न प्रकार की प्रार्थनाएं–हर एक विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करती हैं और उन्हें विभिन्न समयों में (विभिन्न परिस्थितियों में) उपयोग किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं के लिए विभिन्न प्रकार के "नियम" लागू होते हैं–अर्थात, हम सब प्रकार की प्रार्थनाएं समान रूप से नहीं कर सकते।

5.4 प्रार्थना के लिए बुनियाद

प्रार्थना के लिए तीन प्रकार की बुनियादें हैं:

1) परमेश्वर कौन है यह जानना–परमेश्वर का स्वभाव जानना।

2) आप मसीह में कौन हैं यह जानना–मसीह में आपके पास जो अधिकार और विशेषाधिकार है।

3) विश्वास–परमेश्वर में विश्वास के द्वारा कैसे प्राप्त करना है यह जानना।

1) परमेश्वर कौन है यह जानना

सही रीति से प्रार्थना करने हेतु हमें जानना है कि परमेश्वर कौन है–उसका स्वभाव जानना हैं।

हम वचन के द्वारा परमेश्वर को जानते हैं, उसका स्वभाव और गुणों को जानते हैं।

जब आप जानते हैं कि परमेश्वर कौन हैं, तब उसके उद्देश्य के अनुसार आपके लिए प्रार्थना करना आसान होता है।

2) आप मसीह में कौन है यह जानना

हमें उन अधिकारों और विशेषाधिकारों को जानने की ज़रूरत है जो हमें मसीह में मिले है।

इससे हमें प्रार्थना में हियाव मिलता है–परमेश्वर के सामने और शत्रु के मध्य भी।

प्रार्थना एक तरीका है जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर अपना अधिकार चलाते हैं।

3) विश्वास

याकूब 1:5-7

[5] पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी।

[6] पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है।

[7] ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा।

हमें विश्वास करने की ज़रूरत है कि हमारी प्रार्थनाओं के परिणाम देखने हेतु जो हम पाएंगे।

5.5 "मांगने और बिनति करने की प्रार्थना" कैसे करें

अब हम चर्चा "करेंगे कि" सामान्य तौर पर हम सभी जिस प्रकार की प्रार्थना करते हैं उसके विषय में निर्देशों की चर्चा करेंगे।

यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना करें

यूहन्ना 16:23,24

[23] उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे; मैं तुमसे सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।

[24] अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

यीशु से और पवित्र आत्मा से सीधे रूप से बात करना, पूर्ण रूप से प्रार्थना करना उचित है, क्योंकि हम प्रभु यीशु मसीह के साथ सहभागिता करते हैं (1 कुरिन्थियों 1:9) और पवित्र आत्मा के साथ (2 कुरिन्थियों 13:14)।

अपनी प्रार्थना को यीशु के नाम में परमेश्वर को संबोधित करें। हमें किसी संत, याजक या मरियम की प्रार्थना करने की ज़रूरत नहीं है।

परमेश्वर की प्रकाशित इच्छा के अनुसार प्रार्थना करें

1 यूहन्ना 5:14,15

[14] और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।

[15] और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है।

याकूब 4:3

तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग-विलास में उड़ा दो।

हम परमेश्वर के लिखित वचन से और वह कौन है इस आधार पर परमेश्वर की प्रगट इच्छा जानते हैं।

जीवन की उन परिस्थितियों में जहां पर हम परमेश्वर की इच्छा नहीं जानते, हम ईश्वरीय बुद्धि और मनसा के द्वारा उसके आत्मा के भीतरी अगुवाई से सबसे पहले उसकी इच्छा पहचानने का प्रयास करते हैं, और फिर वह जो कुछ हम पर प्रगट करता है उसके अनुसार प्रार्थना करते हैं।

स्पष्ट विवेक के साथ प्रार्थना करें

भजन संहिता 66:18
यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता।

1 यूहन्ना 3:21,22
[21] हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है।
[22] और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उससे मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।

विश्वास से प्रार्थना करें–विश्वास करें कि आपको मिल गया है

मरकुस 11:24
इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।

इब्रानियों 11:1,2
[1] अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।
[2] क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई।

स्वाभाविक क्षेत्र में कोई बदलाव/प्रमाण देखने से पहले ही विश्वास हमें योग्यता प्रदान करता है कि हम उस बात को अपने हृदय में स्थिर करें।

रोमियों 4:17-21
[17] जैसा लिखा है कि मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है, उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है कि मानों वे हैं।
[18] उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा, वह बहुत सी जातियों का पिता हो।
[19] और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,
[20] और न अविश्वासी होकर उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।
[21] और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने के लिए भी सामर्थी है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रार्थना करने से पहले अब्राहम का अपने जीवन के लिए प्रार्थना करना एक बड़ा उदाहरण है।

धीरज और धन्यवाद के साथ प्रार्थना में बने रहें

इब्रानियों 6:12
ताकि तुम आलसी न हो जाओ; वरन् उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

इब्रानियों 10:35,36
[35] इसलिए अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।
[36] क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

फिलिप्पियों 4:6,7

[6] किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।

[7] तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

हम हर समय स्वाभाविक क्षेत्र में कुछ बातों को तुरंत घटते हुए नहीं देखते। इसी समय हमें विश्वास और धीरज में बने रहना है, और भले ही हमने अब तक परिणाम नहीं देखा है, फिर भी हमें धन्यवाद देना है और आनंद मनाना है।

कभी कभी दुष्टात्मा की रुकावटें प्रार्थना में विलंब लाती हैं।

दानिय्येल 10:12,13

[12] फिर उसने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने-बुझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं।

[13] फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा।

कभी कभी हमारी प्रार्थना का उत्तर प्राप्त करने हेतु परमेश्वर हमारी परिस्थितियों का, लोगों का उपयोग करता है, और तैयारी के लिए कुछ समय लग सकता है।

गिड़गिड़ाते हुए बिनती करें, चंचल न बनें

याकूब 5:16-18

[16] इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

[17] एलिय्याह भी तो हमारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा।

[18] फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई।

1 राजा 18:1,41-46

[1] बहुत दिनों के बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा, कि जाकर अपने आप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा।

[41] फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।

[42] तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनों के बीच किया।

[43] और उसने अपने सेवक से कहा, चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर देख, तब उसने चढ़कर देखा और लौटकर कहा, कुछ नहीं दिखता है। एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा।

[44] सातवीं बार उसने कहा, देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है। एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जाकर कह, कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।

[45] थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार होकर यिज्रैल को चला।

[46] तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी हुई, कि वह कमर बान्धकर अहाब के आगे आगे यिज्रैल तक दौड़ता चला गया।

यद्यपि परमेश्वर ने कहा था कि वह वर्षा भेजेगा, और इसलिए उसने वर्षा के आगमन की घोषणा करने हेतु एलिय्याह को भेजा–एलिय्याह को कर्मेल पर्वत पर जाना था–और जब तक आने वाली वर्षा का चिन्ह दिखाई न दे, उसे गिड़गिड़ाकर और

खराई से प्रार्थना करना था। उसी तरह, यद्यपि परमेश्वर हम पर प्रगट करता है कि उसकी इच्छा क्या है, और वह क्या हासिल करना चाहता है, हमें तब तक प्रार्थना करते रहना चाहिए, जब तक कि हम पृथ्वी पर उत्तर आते हुए नहीं देखते।

निरंतर प्रार्थना जीवन का विकास करना

- प्रार्थना के लिए नियमित समय निकालें।
- संपूर्ण दिन प्रार्थना करें–प्रभु के साथ सहभागिता में चलें। *"हमेशा आनंदित रहें। निरंतर प्रार्थना करें। हर बात में धन्यवाद दें ..."* (1 थिस्सल 5:16-18)।
- "खाली समय" निकालें–परमेश्वर के साथ अकेले रहने के लिए निरंतर समय को अलग निकालकर, परमेश्वर की खोज के लिए एक या उससे अधिक दिनों को निकालकर अपने व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन का विकास करें।
- समूह के साथ या सामुहिक प्रार्थना में शामिल होने के लिए एक दूसरे के साथ मिलें, उदाहरण सेल ग्रूप, पूर्ण रात्रि की प्रार्थना।
- भरोसे के साथ प्रार्थना करें–यह जानते हुए कि जब आप प्रार्थना करते हैं, तब परमेश्वर आपकी सुनता है।
- मांगने और प्राप्त करने की प्रार्थना का अभ्यास करें–ध्यान दें कि आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिला है या नहीं। यदि नहीं, तो मनन करें, सीखें और इस क्षेत्र में खुद की उन्नति करते रहें।

मुख्य मौखिक पद

यिर्मयाह 29:12
तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा।

फिलिप्पियों 4:6,7
[6] किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।
[7] तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

1 यूहन्ना 3:21,22
[21] हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है।
[22] और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उससे मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।

अनुप्रयोग

1) "प्रार्थना" आपके लिए क्या है? इस पाठ से आपने प्रार्थना के विषय में कौनसी अन्तर्दृष्टि पाई?

2) प्रार्थना के लिए कौनसी तीन मुख्य नींवें हैं?

3) विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं की सूची बनाइए और समझाइए कि आप इस प्रकार की प्रार्थनाओं का उपयोग कैसे और कब करेंगे।

4) ऐसी कौन सी चीजें हैं जो आपको "निरंतर प्रार्थना करते" रहने से रोकती हैं? हमेशा प्रभु के साथ संगति में बने रहने के लिए आप क्या बदलाव कर सकते हैं?

(आगे वाचन के लिए, कृपया एपीसी की निःशुल्क उपलब्ध पुस्तक, **"अन्य अन्य भाषा में बोलने के अद्‌भुत लाभ"** देखें। **apcwo.org/books** पर डाउनलोड करें।)

6
स्तुति और आराधना

(हम सभी आराधना और स्तुति करते हैं। हम क्यों गाते हैं? क्या इसलिए क्योंकि बाकी हर कोई गा रहा है और हम भीड़ में शामिल हो जाते हैं, या स्तुति और आराधना में शामिल होने का और कोई बेहतर कारण है? यह पाठ हमें परमेश्वर के वचन में प्रगट किए गए स्तुति और आराधना के मूल सिद्धांतों को सिखाने हेतु तैयार किया गया है। इसमें स्तुति क्या है? आराधना क्या है? और मंडली की आराधना का उद्देश्य आदि विषयों को शामिल किया गया है।)

6.1 स्तुति और आराधना को समझना

स्तुति क्या है?

भजन संहिता 100:1-5

[1] हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
[2] आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!
[3] निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है! उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं, हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं।
[4] उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
[5] क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तब बनी रहती है।

भजन संहिता 150:1-6

[1] याह की स्तुति करो! ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो; उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो!
[2] उसके पराक्रम के कामों के कारण उसकी स्तुति करो; उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो!
[3] नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
[4] डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
[5] ऊंचे शब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
[6] जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें! याह की स्तुति करो!

शब्दकोश में "स्तुति" का अर्थ है "प्रशंसा करना, वाह वाह करना, पसंदगी या सराहना को व्यक्त करना; शब्दों या गीतों में स्तुति करना; बढ़ाई करना; महिमा करना।"

स्तुति सराहना, धन्यवाद परमेश्वर कौन है, जो कुछ उसने किया है और जिसके लिए वह करेगा उसका आनंद और उत्सव मनाना है। उसमें हमारा संपूर्ण व्यक्तित्व लग जाता है—परमेश्वर के प्रति आत्मा, प्राण और शरीर। स्तुति का स्वरूप उपजाऊ होता है।

परमेश्वर की स्तुति करना हमारी भावनाओं पर नहीं, परंतु परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया इस पर निर्भर हैः अक्सर हमें परमेश्वर की स्तुति करने की इच्छा न होते हुए भी उसकी स्तुति करने का मन बनाना है और संकल्प करना है।

हबक्कूक 3:17,18

[17] क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों मं अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियाँ न रहें, और न थानों में गाय बैल हों,
[18] तौभी मैं यहोवा के कारण आनंदित और मगन रहूँगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूँगा।

हमें स्तुति क्यों करना है?

- परमेश्वर हमारी स्तुति के योग्य है।

भजन संहिता 48:1
हमारे परमेश्वर के नगर में और अपने पवित्र पर्वत पर यहोवा महान् और अति स्तुति के योग्य है!

प्रकाशित वाक्य 4:11
कि हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं।

- हम उसकी स्तुति करने हेतु सृजे गए थे।

यिर्मयाह 13:11
यहोवा की यह वाणी है कि जिस प्रकार से पेटी मनुष्य की कमर में कसी जाती है, उसी प्रकार से मैंने इस्राएल के सारे घराने और यहूदा के सारे घराने को अपनी कटि में बान्ध लिया था कि वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और किर्ति और शोभा का कारण हों, परन्तु उन्होंने न माना।

आप और मैं परमेश्वर की स्तुति करने, उसे धन्यवाद देने और जो कुछ उसने किया है उसका उत्सव मनाने के लिए बनाए गए थे।

1 पतरस 2:9
परंतु तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।

यशायाह 43:21
इस प्रजा को मैंने अपने लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें।

- हमें उसके वचन में आज्ञा दी गई है कि हम ऐसा करें।

भजन संहिता 81:1-4
[1] परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओं; याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो!
[2] भजन उठाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा। और सारंगी को ले आओ।
[3] नये चाँद के दिन, और पूर्ण मासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूंको।
[4] क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि, और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है।

भजन संहिता 149:1-9
[1] याह की स्तुति करो! यहोवा के लिये नया गीत गाओ, भक्तों की सभा में उसकी स्तुति गाओ!
[2] इस्राएल अपने कर्ता के कारण आनन्दित हो, सिय्योन के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों!
[3] वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें, और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएं!
[4] क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है; वह नम्र लोगों का उद्धार कर के उन्हें शोभायमान करेगा।
[5] भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जयजयकार करें।
[6] उनके कण्ठ से ईश्वर की प्रशंसा हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें,
[7] कि वे अन्यजातियों से पलटा ले सकें; और राज्य राज्य के लोगों को ताड़ना दें,
[8] और उनके राजाओं को सांकलों से, और उनके प्रतिष्ठित पुरूषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें,
[9] और उन को ठहराया हुआ दण्ड दें! उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी। याह की स्तुति करो।

भजन संहिता 150:1-6
[1] याह की स्तुति करो! ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो; उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो!
[2] उसके पराक्रम के कामों के कारण उसकी स्तुति करो; उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो!
[3] नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो!

[4] डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तार वाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
[5] ऊंचे शब्द वाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महा शब्द वाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
[6] जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें! याह की स्तुति करो!

- परमेश्वर हमारी स्तुति के सिंहासन पर विराजमान होता है।

भजन संहिता 22:3
परन्तु हे तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।

आपको और मुझको परमेश्वर की स्तुति करने, उसे धन्यवाद देने और जो कुछ उसने किया है उसका धन्यवाद मनाने के लिए सृजा गया था।ध्जब परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तब हम परमेश्वर के निवास के लिए जगह बनाते हैं। उसकी उपस्थिति आती है। वह हमारे मध्य निवास करने आता है।

स्तुति सामर्थी होती है। जब आप परमेश्वर का उत्सव मनाते हैं, तब यहां पृथ्वी पर कुछ हिलना आरंभ होता है। स्तुति में सामर्थ है।

हम अपनी परिस्थितियों के विषय में कुड्डकुड्डाना बंद करें। परिस्थितियों को बदलने का स्तुति हमारे लिए एक मार्ग है।

- स्तुति में सामर्थ है।

2 इतिहास 20:21,22
[21] तब उसने प्रजा के साथ सम्मति करके कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।
[22] जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरूद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।

प्रेरितों के काम 16:25-34
[25] आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे,
[26] कि इतने में एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पड़े।
[27] और दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए, इसलिए उसने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा।
[28] परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां हैं।
[29] तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपक गया, और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा।
[30] और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?
[31] उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।
[32] और उन्होंने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया।
[33] और रात को उसी क्षण उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।
[34] और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।

- स्तुति करना अच्छी बात है।

भजन संहिता 92:1
यहोवा को धन्यवाद करना भला है, हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना।

भजन संहिता 135:3
याह की स्तुति करो, क्योंकि यहोवा भला है; उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि यह मनभाऊ है!

हमें कब स्तुति करना चाहिए?

- हर समय

भजन संहिता 34:1
मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करुंगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।

भजन संहिता 70:4
जितने तुझे ढूंढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों! और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, कि परमेश्वर की बड़ाई हो।

इब्रानियों 13:15
इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें।

जब हम समस्या का सामना करते हैं, तब हमें परमेश्वर को यह बताने का चुनाव करना है कि कटिन परिस्थितियों के बावजुद हम उसकी स्तुति करेंगे, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान और सामर्थी है। और इस प्रकार हम उसकी महानता की घोषणा करते हैं।

परमेश्वर की स्तुति करना जीवन का एक मार्ग होना चाहिए, उतना ही सामान्य जितना कि सांस लेना, पलक झपकना, या अन्य कोई भी प्रतिक्रियात्मक क्रिया!

हम कहीं भी और हर स्थान में अकेले और अन्य लोगों के साथ भी परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

- सारा दिन

भजन संहिता 113:1-3
[1] याह की स्तुति करो! हे यहोवा के दासो स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो!
[2] यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाय!
[3] उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।

- सर्वदा

भजन संहिता 52:9
मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूंगा, क्योंकि तू ही ने यह काम किया है। मैं तेरे ही नाम की बाट जोहता रहूंगा, क्योंकि यह तेरे पवित्र भक्तों के सामने उत्तम है।

हम परमेश्वर के प्रति अपनी स्तुति कैसे व्यक्त करते हैं?

पवित्र शास्त्र में बताई गईं कुछ बातेंः

गीत गाना

भजन संहिता 47:6
परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ! हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ!

भजन संहिता 100:4
उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो

इफिसियों 5:19
और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।

प्रकाशित वाक्य 5:9
और वे यह नया गीत गाने लगे कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।

चिल्लाना (आनंद का ध्वनि उत्पन्न करना)

भजन संहिता 47:1
हे देश देश के सब लोगों, तालियां बजाओ! ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिये जय जयकार करो!

भजन संहिता 66:1
हे सारी पृथ्वी के लोगो, परमेश्वर के लिये जयजयकार करो।

तालियां बजाना (परमेश्वर का जय जयकार करना)

भजन संहिता 47:1
हे देश देश के सब लोगों, तालियां बजाओ! ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिये जय जयकार करो!

अपने हाथों को उठाना

भजन संहिता 134:2
अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो।

1 तीमुथियुस 2:8
इसलिए मैं चाहता हूं कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।

- समर्पण का चिन्ह।
- "अपने परमेश्वर पिता की ओर हाथ बढ़ाना।"
- सांकेतिक तौर पर उस हर बात को स्वीकार करना जो परमेश्वर हमारे जीवनों में कर रहा है।

संगीत वाद्य बजाना

2 इतिहास 5:13,14
13 तो जब तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियां, झांझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊंचे शब्द से करने लगे, कि वह भला है और उसकी करूणा सदा की है, तब यहोवा के भवन में बादल छा गया,
14 और बादल के कारण याजक लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।

उत्पत्ति 4:21
और उसके भाई का नाम यूबाल है: वह वीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का उत्पादक हुआ।

यहेजकेल 28:13
तू परमेश्वर की एदेन नाम बारी में था; तेरे पास आभूषण, माणिक पद्मराग, हीरा, फीरोज़ा, सुलैमानी मणि, यशब, नीलमणि, मरकद, और सोने के पहरावे थे; तेरे डफ और बांसुलियां तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन तू सिरजा गया था; उस दिन वे भी तैयार की गई थीं।

1 शमुएल 16:16-23
16 हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूंढ़ ले आए; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े तब तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।
17 शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, अच्छा, एक उत्तम बजवैया देखो, और उसे मेरे पास लाओ।
18 तब एक जवान ने उत्तर देकर कहा, सुन, मैंने बेतलेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा जो वीणा बजाना चाहता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साथ रहता है।
19 तब शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा, कि अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे।
20 तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया।
21 और दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके सामने उपस्थित रहने लगा, और शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह उसका हथियार ढोनेवाला हो गया।
22 तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, कि दाऊद को मेरे सामने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं।
23 और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वे दुष्ट आत्मा उसमें से हट जाता था।

2 राजा 3:15,16
15 अब कोई बजवैय्या मेरे पास ले आओ। जब बजवैय्या बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति एलीशा पर हुई।
16 और उसने कहा, इस नाले में तुम लोग इतना खोदो, कि इसमें गड़हे ही गड़हे हो जाए।

प्रकाशितवाक्य 5:8
और जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:2
और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैंने सुना, वह ऐसा था, मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजाते हों।

भजन संहिता 33:2,3
2 वीणा बजा बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो, दस तारवाली सारंगी बजा बजाकर उसका भजन गाओ।
3 उसके लिये नया गीत गाओ, जयजयकार के साथ भली भांति बजाओ।

भजन संहिता 150:5
ऊंचे शब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो!

- हमें इस बात के विषय में सावधान रहने की ज़रूरत है कि हम संगीत / वाद्य पर बहुत अधिक निर्भर न हो जाएं। हममें बिना संगीत के भी परमेश्वर की स्तुति की योग्यता होनी चाहिए।

खड़े रहना

- आदर का चिन्ह

2 इतिहास 5:12
और जितने लेवीय गवैये थे, वे सब के सब अर्थात् पुत्रों और भाइयों समेत आसाप, हेमान और यदूतून सन के वस्त्र पहने झांझ, सारंगियां और वीणाएं लिये हुए, वेदी के पूर्व अलंग में खड़े थे, और उनके साथ एक सौ बीस याजक तुरहियां बजा रहे थे।)

2 इतिहास 7:6
और याजक अपना अपना कार्य करने को खड़े रहे, और लेवीय भी यहोवा के गीत के गाने के लिये बाजे लिये हुए खड़े थे, जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा की सदा की करूणा के कारण उसका धन्यवाद करने को बनाकर उनके द्वारा स्तुति कराई थी; और इनके सामने याजक लोग तुरहियां बजाते रहे; और सब इस्राएली खड़े रहे।

2 इतिहास 29:26
तब लेवीय दाऊद के चलाए बाजे लिए हुए, और याजक तुरहियां लिए हुए खड़े हुए।

भजन संहिता 135:2
तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आगनों में खड़े रहते हो!

प्रकशितवाक्य 4:9-11
9 और जब वह प्राणी उसकी जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुयुग जीवित है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे,
10 तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवित है, प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे,
11 कि हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं।

आत्मा में (अन्यान्य भाषाओं में) गीत गाना

प्रेरितों के काम 2:11
परन्तु अपनी अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।

प्रेरितों के काम 10:46
क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।

नृत्य करना

सपन्याह 3:17
तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है; वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।

भजन संहिता 149:2,3
[2] इस्राएल अपने कर्ता के कारण आनन्दित हो, सिय्योन के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों!
[3] वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें, और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएं!

2 शमुएल 6:14
और दाऊद सन का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा।

- नृत्य करना परमेश्वर का उत्सव मनाना है।
- यदि हम अपने शारीरिक तनाव को दूर करेंगे और जो कुछ हममें है, उसके साथ परमेश्वर के सामने सरलता के साथ नाचेंगे, तो हम पाएंगे कि हमारा आत्मिक तनाव भी दूर होगा और परमेश्वर अधिक स्वतंत्रता के साथ हमारे मध्य में संचार करेगा।
  सावधानः जो लोग नृत्य करने में सहजता महसूस नहीं करते, उनकी हम आलोचना नहीं कर रहे; उन्हें भयभीत नहीं होना चाहिए या दूसरे से अलग महसूस नहीं होना चाहिए।
- कुछ लोगों की नृत्य सेवकाई / मंडली होती है, जो आराधना के दौरान सेवकाई करते हैं।
- विभिन्न संस्कृतियों के विभिन्न लोग विभिन्न रीति से परमेश्वर के प्रति स्तुति और आराधना को व्यक्त करते हैं।

जब हम स्तुति करते हैं तब क्या होता है?

परमेश्वर हमारी स्तुति में विराजमान होता है

परमेश्वर की उपस्थिति हमारी परिस्थितियों पर आक्रमण करती है। यदि हम जानबुझकर परमेश्वर को आकर्षित करना चाहते हैं, तो हमें उसकी स्तुति करना आरंभ करना चाहिए क्योंकि वह हमारी स्तुति के मध्य विराजमान होता है।

भजन संहिता 22:3
परन्तु हे तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।

स्तुति दिव्य छुटकारा लाती है

जब हम हमारी मुश्किल परिस्थितियों में परमेश्वर की स्तुति करने लगते हैं, तब परमेश्वर अपने लोगों का छुटकारा ले आता है।

2 इतिहास 20:22
जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरूद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।

स्तुति दुश्मन को रोकती है

भजन संहिता 8:2
तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों और दूध पिउओं के द्वारा सामर्थ्य की नेव डाली है, ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे।

स्तुति युद्ध का हथियार है

जब हम स्तुति करते हैं तब हम दुश्मन को बांधते हैं और शत्रु के विरोध में लिखित दंड पर अमल करते हैं। स्तुति सामर्थी होती है, क्योंकि तभी आत्मा के क्षेत्र में कुछ घटने लगता है।

स्तुति शत्रु के विरोध में परमेश्वर के लिखित दंड पर अमल करती हैं

भजन संहिता 149:5-9
5 भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जयजयकार करें।
6 उनके कण्ठ से ईश्वर की प्रशंसा हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें,
7 कि वे अन्यजातियों से पलटा ले सकें; और राज्य राज्य के लोगों को ताड़ना दें,
8 और उनके राजाओं को सांकलों से, और उनके प्रतिष्ठित पुरूषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें,
9 और उन को ठहराया हुआ दण्ड दें! उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी। याह की स्तुति करो।

स्तुति परमेश्वर में विश्वास की अभिव्यक्ति है

रोमियों 4:21
और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने के लिए भी सामर्थी है।

"स्तुति" प्रचुर होती है और एक उत्सव है, और यह बाहरी आंगन में होती है, परंतु "आराधना" निकटता और अत्यंत आदरपूर्ण होती है क्योंकि "आराधना" में हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने दण्डवत् करते हैं। जिस प्रकार हमें परमेश्वर की "स्तुति" करने के लिए बुलाया गया है, उसी प्रकार हमें परमेश्वर की "आराधना" करने के लिए बुलाया गया है। हमारे मसीही जीवनों में, परमेश्वर के साथ निकटता ही एक फलवंत जीवन को जन्म देती है।

आराधना क्या है?

भजन संहिता 95:6,7
6 आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें!
7 क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चराई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं। भला होता, कि आज तुम उसकी बात सुनते!

प्रकाशितवाक्य 4:10,11
10 तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवित है, प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे,
11 कि हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं।

"आराधना" (शब्दकोष की परिभाषा): "प्रबल प्रेम या आराधना, आदर प्रगट करने वाली सेवा, आदर व्यक्त करना, भययुक्त आदर की भावना रखना, नीचे झुक जाना।"

आराधना परमेश्वर की अत्यंत महानता आदि के विषय में आदरयुक्त भय, भय के साथ उपासना की अभिव्यक्ति है। आराधना में हम सामान्य तौर पर आदरयुक्त भय से परिपूर्ण होते हैं, और हम घुटने टेक सकते हैं, दण्डवत् आदि कर सकते हैं।

सच्ची आराधना की परिभाषा नहीं दी जा सकती। यह परमेश्वर के साथ सहभागिता है जो उसके प्रिय जन अनुभव करते हैं। सच्ची आराधना अपने हृदयों और जीवनों को प्रभु के सामने झुकाना और उसकी श्रेष्ठ प्रभुता को कबूल करना है, नकारात्मक परिस्थितियों में या भावनात्मक बेचैनी के बावजूद भी।

यूहन्ना 4:23,24
[23] परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जब सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढ़ता है।
[24] परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

आत्मा में–अपने हृदय से, अपने अंतरात्मा से सत्य के साथ–खराई से।

जब हम आराधना करते हैं तब क्या होता है?

आराधना घनिष्टता को जन्म देती है

घनिष्टता के इसी स्थान में मैं नया बनता हूं, ताज़गी और फलदायकताा पाता हूं।

आराधना परिवर्तन लाती है

हम जिसकी आराधना करते हैं, उसके "समान" बन जाते हैं।

मण्डली की आराधना

हमें स्वयं सच्चे मन से परमेश्वर की "स्तुति" और "आराधना" करना सीखना है, उसी समय परमेश्वर का वचन मण्डली के रूप में परमेश्वर के लोगों के इकट्ठे होकर स्तुति और आराधना करने के महत्व पर ज़ोर देता है। परमेश्वर के साथ हमारी जीवनशैली का यह एक अविभाज्य अंग है।

क्योंकि, जब हम मण्डली के रूप में परमेश्वर की आराधना करते हैं, तब इसका एक उर्ध्वाधर (ऊपर की ओर) आयाम होता है।

उर्ध्वाधर पहलू

- हमें परमेश्वर की सेवा करना है।

परमेश्वर की महिमा करना और उसे धन्य कहना, जो कि आराधना में हमारा प्राथमिक उद्देश्य है, खुद के लिए कुछ पाना नहीं। आराधना सभा ने मुझे आशीष दी है यह प्रश्न नहीं है, परंतु क्या आराधना ने परमेश्वर को धन्य कहा है। हमें आशीष पाने के उद्देश्य से प्रभु की आराधना नहीं करना है, परंतु उसे धन्य कहने के उद्देश्य से, वह हमें आशीष दे या न दे।

- हम परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने के लिए आराधना करते हैं।

कलीसिया की आराधना सभा और सामाजिक संगठन की सभा में फर्क होता है, परमेश्वर की उपस्थिति।

भजन संहिता 22:3
परन्तु हे तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।

- पवित्र आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति के लिए वातावरण प्रदान करना

परमेश्वर तब तक बाट जोहता है जब हम उसके वचन को प्राप्त करने के लिए (भविष्यद्वाणी के वचन को) तैयार नहीं हो जाते।

समान्तर पहलू

- मसीह की देह में एकता के बोध को बढ़ाने हेतु

यद्यपि हम विभिन्न संस्कृतियों, पृष्ठभूमियों और अभिरूचियों और भाषाओं से आते हैं, फिर भी जब हम एक साथ परमेश्वर की आराधना करते हैं तब हम में एकता का बोध होता है।

भजन संहिता 133:1-3
[1] देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!
[2] यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया।
[3] वा हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन को आशीष ठहराई है।

भजन संहिता 86:11
हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा, मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूं।

सभी विश्वासियों में यह बात पाई जाती है; वे प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं और गीत में अपने परस्पर विश्वास को अभिव्यक्त कर सकते हैं। विश्वासियों के मध्य भाईचारे के प्रेम को बढ़ाने का कारण बन सकती है।

- एक दूसरे की सेवा करने हेतु
- आत्मिक सत्य को सिखाने हेतु और उसका समर्थन करने हेतु

इफिसियों 5:19
और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।

कुलुस्सियों 3:16
मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। आराधना का सार हमारी विनम्रता है।

भजन और गीत मुख्य रूप से संगीत में प्रस्तुत किए गए पवित्र शास्त्र के वचन होते हैं।

- दूसरों के सामने अपने विश्वास का अंगीकार करने और अविश्वासियों के सामने परमेश्वर की महिमा की घोषणा करने हेतु विश्वासियों को अवसर प्रदान करने हेतु।

भजन संहिता 108:3
यहोवा, मैं देश देश के लोगों के मध्य में तो धन्यवाद करूंगा, ओर राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा।

होशे 6:11
और हे यहूदा, जब मैं अपनी प्रजा को बन्धुआई से लौटा ले आऊंगा, उस समय के लिए तेरे निमित्त भी बदला ठहराया हुआ है।

- वचन के प्रचार का वातावरण प्रदान करने हेतु

होशे 10:11
एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो अन्न दांवने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैं ने उसकी सुन्दर गर्दन पर जुआ रखा है; मैं एप्रैम पर सवार चढ़ाऊंगा; यहूदा हल, और याकूब हेंगा खींचेगा।

भजन संहिता 65:9,10

[9] तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता हैं, तू उसको बहुत फलदायक करता है; परमेश्वर की नहर जल से भरी रहती है; तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है।

[10] तू रेघारियों को भली भांति सींचता है, और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है, तू भूमि को मेंह से नरम करता है, और उसकी उपज पर आशीष देता है।

भीतरी पक्ष

- परमेश्वर के लोगों को उनके हृदय की अभिव्यक्ति को प्रगट करने हेतु मुक्त करने के लिए।
- उनके हृदयों की भावनाओं को मौखिक अभिव्यक्ति प्रदान करने हेतु।
- आराधना के जीवन के प्रति और बड़ा समर्पण प्रेरित करने हेतु।

हमारी विनम्रता आराधना का सार है।

6.2 स्तुति और आराधना में रूकावट लाने वाली प्रवृत्तियां

घमण्ड

घमण्ड आराधना में सबसे बड़ी रूकावट है। कभी कभी हम प्रभु की राय से अधिक दूसरों की राय के विषय में ज्यादा चिन्तित रहते हैं। दूसरे लोग आपकी ओर देख रहे हैं इसलिए कुछ न करें, और दूसरे आपकी ओर देख रहे हैं इसलिए कभी कुछ करने से खुद को न रोकें।

अनादर

अनादर तब होता है जब हम परमेश्वर के स्वभाव को आदर नहीं देते, परंतु बिना किसी बलिदान, प्रार्थना या हमारी ओर से विनम्र पश्चाताप के अपेक्षा करते हैं कि उसकी आशीषें हम पर बरसाई जाएं।

"दर्शक की भूमिका"

कभी कभी मंडली आराधना में स्वयं "हिस्सा लेने" के बजाए आराधना टीम को "देखने" की प्रवृत्ति रखती है। हम सब को आज्ञा दी गई है कि हम आराधना करें।

रोमियों 12:1

इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

1 कुरिन्थियों 3:16

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है?

1 पतरस 2:5,6

[5] तुम भी आप जीवित पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।

[6] इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है कि देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं; और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।

प्रकाशितवाक्य 1:6

और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।

"भावूकता"

जब संगीत और भावना आराधना करने वाले के लिए गीत के संदेश से अधिक महत्व रखते हैं, तब उसे भावूकता कहते हैं।

यहां, हम संगीत से अधिक जुड़ जाते हैं, पंरतु ज़रूरी नहीं कि परमेश्वर के साथ जुड़े हों और इसलिए "आराधना" का उद्देश्य खो जाता है।

मात्र होंठों से आराधना करना

मात्र गीत गाना, परंतु हृदय से आराधना न करना "मात्र होंठों से आराधना" करना है। बिना अर्थ के गाने के बजाए, परमेश्वर चाहेगा कि हम अपने होंठों को बंद रखें।

आमोस 5:21-23
[21] मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता, और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं।
[22] चाहे तुम मेरे लिए होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न हूंगा, और तुम्हारे पाले हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर न ताकूंगा।
[23] अपने गीतों का कोलाहल मुझसे दूर करो; तुम्हारी सारंगियों का सूर मैं न सुनूंगा।

हमने इस प्रकार पहले कभी नहीं किया!

कभी कभी, बदलाव का डर होता है। परमेश्वर सृजन करने वाला परमेश्वर है और कई भिन्न तरीकों से काम कर सकता है।

आइए हम परमेश्वर को वह सारी स्तुति और आराधना दें, जिसके वह योग्य हैं।

आइए हम इसे अपने पूरे दिल से करें–निजी तौर परं और जब हम एक मंडली के रूप में एक साथ आते हैं।

"स्तुति" और "आराधना" को एक जीवनशैली बनाइए–जीने का एक तरीका।

मुख्य मौखिक पद

भजन संहिता 100:4
उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!

इफिसियों 5:19
और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।

यूहन्ना 4:23,24
[23] परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जब सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढ़ता है।
[24] परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

अनुप्रयोग

1) आप परमेश्वर के प्रति अपनी स्तुति किस प्रकार व्यक्त करना चाहते हैं? इस पाठ को समझने के बाद, क्या आप उसकी स्तुति करने के और तरीके जोड़ना चाहते हैं?

2) परमेश्वर के प्रति स्तुति के क्या परिणाम हैं?

3) स्तुति और आराधना के प्रति अपनी प्रवृत्ति का परीक्षण करें। आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने से रोकने वाली बातों की सूची तैयार करें।

7

परमेश्वर का वचन

(परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास की बुनियाद है। वह हमारा मानक और अंतिम अधिकार है। इस पाठ की योजना उसके पाठ में अंतर्निहित सामर्थ्य को सिखाने हेतु और हमें इस बात के लिए प्रेरित करने हेतु की गई है कि हम उसके वचन को निरंतर अपने हृदय और मुंह में बसाएं। परमेश्वर के वचन में मनन करने के तीन चरण भी हम सीखेंगे जिसका हम सभों को अभ्यास करना चाहिए, ताकि परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में फल उत्पन्न करे।)

7.1 परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास की बुनियाद है

परमेश्वर का वचन हम विश्वासियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह हमारे विश्वास की बुनियाद, हम जिस बात में विश्वास करते हैं, जिसके लिए जीते हैं, और हमारे मसीही जीवनों में जिस बात पर हम चलते हैं, उसका आधार है। इसलिए हमें परमेश्वर के वचन को थाम लेना है। बाइबल के 66 पुस्तकें जिन्हें "पवित्र शास्त्र की संहिता" कहा जाता है, ईश्वर प्रेरित वचन है। इसलिए जब हम बाइबल की ओर देखते हैं, तब हम उसकी ओर दूसरी धार्मिक पुस्तक के रूप में नहीं देखते, परंतु परमेश्वर की ओर से प्रेरित वचन के रूप में देखते हैं।

हर एक पवित्र शास्त्र "परमेश्वर की प्रेरणा" से रचा गया है

2 तीमुथियुस 3:15,16

[15] और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।
[16] हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है।

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर का वचन ईश्वर प्रेरित और परमेश्वर की सांस से निर्मित है, जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तब हर कहानी के पीछे एक ईश्वरीय उद्देश्य होता है। पवित्र शास्त्र में लिखी गई हर एक बात का ईश्वरीय उद्देश्य है—उसके लिए एक कारण है। लोगों की गलतियों के विषय में भी लिखा गया है, ताकि हम उनसे सीख सके।

2 पतरस 1:20,21

[20] परंतु पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।
[21] क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परंतु भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

संपूर्ण पवित्र शास्त्र हमें परमेश्वर के पवित्र जनों द्वारा दिया गया था जो पवित्र आत्मा से प्रेरित थे। इसलिए जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तब हम उसे परमेश्वर के प्रेरित वचन के रूप में देखते हैं, और उससे सीखना और प्राप्त करना चाहते हैं। उदाहरण के तौर पर, गिनती की पुस्तक यह बताती है कि हर एक गोत्र में कितने लोग थे और तम्बू के किस ओर इन गोत्रों को रहना था, आदि बातें इसमें बताई गई हैं, परंतु वह हमें व्यवस्था, सुक्ष्मता पर ध्यान देने वाले परमेश्वर के विषय में बताती है और यह भी बताती है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को वाचा के देश में लाने हेतु सारी बातों का सुनियोजित प्रबंध किया था। और इसलिए वह चाहता है कि हम उसके साथ चलते समय उचित क्रम में चलें।

पवित्र शास्त्र–परमेश्वर में देखने वाली हमारी खिड़की

लोग हमें दूसरी खिड़कियों से झांकने के लिए निमंत्रित करते हैं, परंतु हो सकता है कि वे परमेश्वर की ओर निर्देश न करें।

जब हम जानना चाहते हैं कि परमेश्वर कौन है, तब हम उसके वचन की खिड़की से उसकी ओर देखते हैं।

भजन संहिता 119:18
मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं।

बाइबल पढ़ना किसी समुद्र की यात्रा करने के समान है। कइयों के लिए यह उबाऊ काम है, परंतु यदि हम नीचे की अद्‌भुत सुंदरता को देखना चाहते हैं जिसे समुद्र की सतह से नहीं देखा जा सकता, तो हमें समुद्र में गोता लगाना होगा।

उसी प्रकार वचन में गोता लगाएं, प्रार्थना करें और परमेश्वर से बिनती करें कि वह आपकी आंखों को खोल दे ताकि आप "गहरे समुद्र में गोता" लगाकर वचन में छिपे हुए सारे खजाने को देख सकें। वचन हमें परमेश्वर के विषय में ज्यादा से ज्यादा बताता है। यह सच है कि परमेश्वर उसके वचन से बड़ा है, इसलिए वचन परमेश्वर का पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकता। यह भी सच है कि परमेश्वर अनंत है, परंतु उसका वचन इस अर्थ से सीमित है कि उसमें 66 पुस्तकें हैं। स्वर्ग में बहुत सारी अचंभे की बातें हैं जो बाइबल में प्रगट नहीं की गई हैं, और हम परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ जान पाएंगे, परंतु अब के लिए, पृथ्वी पर हमारी यात्रा के लिए, परमेश्वर का वचन जिसे बाइबल कहा जाता है, पर्याप्त है। यह वह खिड़की है जिसके द्वारा हम हमारे परमेश्वर को खोजने हेतु देख सकते हैं।

पवित्र शास्त्र जीवित परमेश्वर के विषय में अंतदृष्टि प्रदान करता है, उसके स्वभाव को, उसके चरित्र को, उसके गुणों को और उसके हृदय को प्रगट करता है। परमेश्वर कौन है, वह क्या करता है, उसकी भावनाओं और उसकी इच्छाओं आदि के विषय में हम अंतदृष्टि पाते हैं। कोई भी रिश्ता ज्ञान पर आधारित होता है। इसलिए जीवित परमेश्वर के साथ निकट रिश्ता बनाने हेतु हम उसे उसी तरह निकटता के साथ जान सकते हैं जैसा बाइबल में प्रगट किया गया है।

पवित्र शास्त्र–हमारा मानक

भजन संहिता 119:133
मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।

कई मानक हैं जिनसे हम जीवन बिता सकते हैं–संसारिक मानक, किसी पुस्तक से कुछ तत्वज्ञान या नवयुग आंदोलन। परंतु हम विश्वासियों के लिए परमेश्वर का वचन हमारा मानक है। उसके आधार पर, हम जीवन जीते हैं, आचरण करते हैं और जीवन की यात्रा पूरी करते हैं।

पवित्र शास्त्र–हमारा अधिकार

भजन संहिता 119:101
मैंने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है, जिससे मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं।

परमेश्वर का वचन हमारा अंतिम अधिकार है–यह पूर्ण है। जब मुझे चुनाव करना होता है, तब परमेश्वर का वचन निर्देश देता है और मैं परमेश्वर के वचन के अधिकार के अधीन हो जाता हूं। विश्वासी होने के नाते, यह मेरे जीवन में अंतिम अधिकार है

पवित्र शास्त्र–विश्वास उत्पन्न करता है

परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास का भी अधिकार है–यह हमारे विश्वास का सोत है।

रोमियों 10:17
इसलिए विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

जब परमेश्वर उस वचन को हमारे लिए संजीवित करता है, तब हम वचन पर विश्वास करते हैं और वह हमारे विश्वास के लिए आधार है। हम जो विश्वास करते हैं, सो करते हैं, क्योंकि वह वचन में है और हमें भरोसा है कि यह हमारे लिए पूरा होगा क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने वचन में प्रतिज्ञा दी है। जब हम किसी परिस्थिति से होकर गुज़रते हैं, तब पवित्र आत्मा वचन को हमारे लिए संजीवित करता है और हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने वचन से हमसे बोल रहा है, जो हममें विश्वास को उत्पन्न करता है और इस प्रकार हमें परिणाम के विषय में भरोसा होता है।

हमें प्रकटीकरण से कार्य की ओर बढ़ना चाहिए

याकूब 1:22,25
[22] परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं, जो अपने आप को धोखा देते हैं।
[23] परंतु जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, परंतु वैसा ही काम करता है।

केवल वचन को पढ़ना या वचन को सुनना ही काफी नहीं है।

हमें वचन को जानने और वचन के प्रकाशन को प्राप्त करने से वचन के कर्ता होने की ओर बढ़ना चाहिए।

7.2 परमेश्वर का वचन: उसकी पवित्रता और सामर्थ

परमेश्वर अपने नाम से अधिक अपने वचन का महिमा देता है

भजन संहिता 138:2
मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा, और तेरी करूणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम को धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने बढ़े नाम से अधिक महत्व दिया है।

हम बाइबल में परमेश्वर के नाम जानते हैं और वह कौन हैं यह जानते हैं और उसे आदर देते हैं, परंतु परमेश्वर अपने नाम और प्रतिष्ठा से अधिक उसके वचन को ऊंचा उठाता है।

उसका वचन पवित्र है

यूहन्ना 17:17
सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।

गिनती 23:19
ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?

भजन संहिता 12:6
परमेश्वर का वचन पवित्र हैं, उस चान्दी के समान जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार निर्मल की गई हो।

उसका वचन सामर्थ है

इब्रानियों 4:12
क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

परमेश्वर का वचन जीवित और सामर्थ से भरपूर है।

हमारे लिए कुंजी यह सुचित करना है कि परमेश्वर के वचन में सामर्थ है।

परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सामर्थ को ले चलता है—उसे इसलिए नियोजित किया गया है कि वह हमारे जीवनों में परमेश्वर की सामर्थ को उण्डेले। इसलिए जब हम परमेश्वर के वचन से जुड़ जाते हैं, तब हम परमेश्वर की सामर्थ के सोत से जुड़ जाते हैं।

इब्रानियों 11:3

विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

संपूर्ण विश्व उस वचन के द्वारा अस्तित्व में आया जो परमेश्वर ने कहा। हमें इस बात को समझना हैः यदि वचन ने इस विश्व की उत्पत्ति की और जीवित है और उसकी सामर्थ नष्ट नहीं हुई है, तो वह आज आपके और मेरे संसार में भी उत्पत्ति कर सकता है। उसके वचन की सामर्थ ने विश्व को सम्हाल रखा है। हमें इस बात को समझना है कि इस विशाल विश्व की तुलना में हमारे जीवन बहुत छोटे हैं और यदि उसके वचन में सारी वस्तुओं को उनके स्थानों में सम्हालकर रखने की सामर्थ है, तो निश्चित रूप से हमारे छोटे जीवनों को सम्हालकर रखने की सामर्थ भी उसमें है।

> यदि उसके वचन की सामर्थ विश्व को "सम्हालती" है और थामकर रखती है, तो हमारे जीवन भी उसके वचन की उसी सामर्थ से निश्चित रूप से नियमित किए जा सकते हैं, "सम्हाले" जा सकते हैं और थामें जा सकते हैं।

जब आपको लगता है कि आपके जीवन में सबकुछ बिगड़ रहा है और आप उसे सम्हाल कर नहीं रख सकते, तो इस बात को जान लें कि आपके वचन में आपके जीवन को सम्हालकर रखने की, उसका नियंत्रण करने की सामर्थ है, और देखेगा कि आपके जीवन में जैसा सब कुछ चलना चाहिए वैसा ही चले। आपके जीवन में जिस बात का अस्तित्व नहीं है, उसे आपके जीवन में परमेश्वर के वचन के कार्य के द्वारा अस्तित्व में लाया जा सकता है। शायद इस समय आपके शरीर में चंगाई नहीं है–दर्द है, बीमारी है, परंतु आपको आवश्यकता है कि आपके शरीर में चंगाई आकार ले और अस्तित्व में आए। परमेश्वर के वचन में चंगाई को अस्तित्व में लाने की सामर्थ है।

इब्रानियों 1:3

वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।

7.3 परमेश्वर का वचनः आश्चर्यकर्म का बीज

"परमेश्वर के वचन" के बीज को लें, उस पर मनन करें और वचन की सामर्थ को अपने जीवन में अनुभव करने हेतु उसे अपने जीवन में अंकुरित होने दें। क्योंकि परमेश्वर का वचन "आश्चर्यकर्म का बीज" है और उसे हमारे जीवनों में फल उत्पन्न करने हेतु तैयार किया गया है।

बीज बोने वाले का दृष्टांत

मरकुस 4:1-20

> यदि फल पैदा करना है तो बीज को संरक्षित और पोषित किया जाना चाहिए।

[1] वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही।
[2] और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत-सी बातें सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उसने उनसे कहा,
[3] सुनो! देखो, एक बोनेवाला बीज बोने के लिए निकला!
[4] और बोते समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया।
[5] और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहां उसको बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वह जल्द उग आया।
[6] और जब सूर्य निकला, तो झुलस गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया।
[7] और कुछ तो झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया, और वह फल न लाया।
[8] परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया।
[9] और उसने उनसे कहा "जिसके पास सुनने के लिए कान हों, वह सुन ले!"

[10] जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा।
[11] उसने उनसे कहा, तुमको तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिए सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं।
[12] इसलिए कि वे देखते हुए देखें और उन्हें सूझाई न पड़े, और सुनते हुए सुनें भी और न समझें, ताकि ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएं।
[13] फिर उसने उनसे कहा, क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?
[14] बोनेवाला वचन बोता है।
[15] जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैं जो सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।
[16] और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं,
[17] परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिए रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।
[18] और जो झाड़ियों में बोए गए, ये वे हैं जो वचन सुनते हैं,
[19] और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है, और वह निष्फल रह जाता है।
[20] और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।

परमेश्वर का वचन बीज के समान है (मरकुस 4:14)।

परमेश्वर के वचन को अक्सर बीज कहा जाता है। नए नियम में करीब 44 पद है जहां पर यूनानी शब्द *'स्पर्मा'* का अनुवाद "बीज" किया गया है। यह वही शब्द है जिससे हमें अंग्रेजी भाषा का *'स्पर्म'* शब्द मिलता है।

हमारा हृदय वह भूमि है जहां पर परमेश्वर के वचन का बीज बोया जाता है (मरकुस 4:15)। यदि बीज से फल उत्पन्न होना है, तो बीज की रक्षा की जानी चाहिए और उसकी परवरिश की जानी चाहिए।

हमारे लिए कुंजी यह है कि हम इस बात का यकीन कर लें कि क्या हमने परमेश्वर के वचन की सामर्थ में संबंध जोड़ लिया है। शैतान वचन को न चुराए इसलिए हमें वचन को समझना है (आत्मिक सत्य की समझ प्राप्त करना है)।

मत्ती 13:19
जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे 'वह दुष्ट' आकर छीन ले जाता है। यह वही बीज है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।

हमें चाहे जिन कठिनाइयों या सताव का सामना करना पड़े–संसार से या शैतान की ओर से–हमें वचन को दृढ़तापूर्वक थाम लेना है और उसे हमारे हृदयों में जड़ पकड़ने देना है, ताकि वह फल उत्पन्न कर सके (मरकुस 4:16,17)।

हमें इस संसार की चिंता, धन का धोखा, अन्य वस्तुओं के लिए लालसा से अपने हृदय की रक्षा करना है। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम वचन को फल लाने हेतु उपयुक्त "वातावरण" तैयार करते हैं (मरकुस 4:19)।

जब हम वचन को समझेंगें (मत्ती 13:23), उसे ग्रहण करेंगे (मरकुस 4:20) और उसे हमारे हृदय में सम्भालकर (लूका 8:15) रखेंगे, तब हम हमारे जीवनों में फल लाएंगे।

तो, आइए हम अपने हृदयों की रक्षा करें जहां परमेश्वर का बीज जड़ पकड़ रहा है, अंकुरित हो रहा है, और तैयार हो रहा है और आपके संसार को प्रभावित करने की अपनी शक्ति जारी कर रहा है।

बाइबल हमारे आश्चर्यकर्म के बीजों की थैली है। हर एक बीज अपने समान फल को उत्पन्न करेगा (चंगाई का बीज चंगाई का फल उत्पन्न करेगा, जो बीज आशीष की प्रतिज्ञा करते हैं, वे आशीष को उत्पन्न करेंगे)।

आपको जिस बीज की आवश्यकता है उसे लें और उसे अपने हृदय में बोएं। जब आप वचन को सुनते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप समझें कि उसका क्या अर्थ है और प्रकटीकरण प्राप्त करें। यीशु ने हमें चिताया है कि जब बीज जड़ पकड़ता है, तब सताव और क्लेश आएंगे। जब हम हताश होकर और चिंता करने के द्वारा इन बातों को हमारे हृदय को बंद करने की अनुमति देते हैं, और इस प्रकार वचन को त्याग देते हैं, तब हम उस भूमि के समान बन जाते हैं जहां पर वचन वास्तव में जड़ पकड़ रहा है, परंतु पथरीली जमीन के कारण हम फल नहीं ला सकते।

इसलिए जब हम मुश्किलों का सामना करते हैं, तब हमें वचन को थामना है, हताश नहीं होना है, और संसार की चिंताओं से हमारे जीवनों में वचन को दबा न दें। हमारी ज़िम्मेदारियां, इच्छाएं, धन की खोज हमें परेशान कर सकती हैं और वचन से अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है, और इस प्रकार वचन को दबा सकती है।

मत्ती 13:23
जो बीज अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।

लूका 8:15
परंतु अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।

बीज परमेश्वर का वचन है

लूका 8:11
दृष्टान्त यह है: बीज तो परमेश्वर का वचन है।

परमेश्वर के वचन को फल लाने के लिए नियुक्त किया गया है

यशायाह 55:10,11
[10] जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है,
[11] उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।

1 थिस्सलुनीकियों 2:13
इसलिए हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुममें जो विश्वास रखते हो, प्रभावशली है। इसलिए हम अपने हृदयों की रक्षा करें क्योंकि परमेश्वर का बीज यहीं जड़ पकड़ता है, अंकुरित होता है और आप के संसार को प्रभावित करने हेतु उसकी सामर्थ को मुक्त करने के लिए तैयार हो रहा है।

परमेश्वर के वचन पर मनन करना

यहोशू 1:8
व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

मनन मुख्य रूप से मनुष्य के आत्मा की एक गतिविधि है जो प्राण तक पहुंचती है (विचार, बुद्धि, कल्पना, भावना और इच्छा का स्थान) और भौतिक शरीर को प्रभावित करता है।

शिक्षा के उद्देश्य से, हम मनन की प्रक्रिया का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहेंगे:

ध्यान–अपने मन में विचार करना

भजन संहिता 143:5
मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्‌भुत कामों पर ध्यान करता हूं, और तेरे काम को सोचता हूं।

कल्पनाचित्र बनाना–अपने मन की आंखों से देखना

नीतिवचन 4:20-22
[20] हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
[21] इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर।
[22] क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।

यशायाह 54:13
तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी।

परमेश्वर के वचन में किसी भी बात या आपके जीवन की किसी भी परिस्थिति को बदलने की सामर्थ है क्योंकि उसका वचन आपके अंदर अंकुरित होता है।

इस शब्द की कल्पना करें–कल्पना करें कि आपका बच्चा इस प्रकार का जीवन बिता रहा है जिससे परमेश्वर को महिमा मिलती है और उन चित्रों को अपने मन में चित्रित करें। आपको ऐसा करने का अधिकार है क्योंकि वचन कहता है कि आपके सब बच्चे परमेश्वर के सिखाए हुए होंगे। दर्शन और स्वप्न पवित्र आत्मा की भाषा हैं। खुद को परमेश्वर का वचन जो कहता है उसके अनुसार बनते हुए, होते हुए और करते हुए देखें।

अंगीकार–परमेश्वर का वचन जो कहता है उसे कहना

व्यवस्थाविवरण 30:11-14
[11] देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिये अनोखी, और न दूर है।
[12] और न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, कि कौन हमारे लिये आकाश में चढ़कर उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?
[13] और न यह समुद्र पार है, कि तू कहे, कौन हमारे लिये समुद्र पार जाए, और उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?
[14] परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है, ताकि तू इस पर चले।

परमेश्वर के वचन को पढ़ने और उस पर मनन करने के अनुशासन का विकास करना

परमेश्वर के वचन को आपके जीवन में उचित स्थान दें।

भजन संहिता 1:1-3
[1] या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!
[2] परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
[3] वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता हैं, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।

- नियमित रूप से परमेश्वर के वचन को पढ़ने के लिए समय निकालें (प्रतिदिन का समय)।
- जो कुछ आप पढ़ते हैं उस पर आप ध्यान करें।
- किसी विशिष्ट विषय पर पवित्र शास्त्र के वचनों को चुनें जिनकी आपको बल प्राप्त करने हेतु आवश्यकता है (उदाहरण, चंगाई, प्रयोजन, प्रार्थना) और इन वचनों पर मनन करें।
- एम पी 3 डाऊनलोड का उपयोग करते हुए, परमेश्वर के वचन के प्रचार को जितनी बार हो सकें सुनें (उदाहरण, यात्रा करते समय)।

मुख्य मौखिक पद

यहोशू 1:8
व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

यशायाह 55:10,11
10 जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है,
11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।

इब्रानियों 4:12
क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

(कृपया **apcwo.org/books** से APC पुस्तक **"गॉड्स वर्ड-द मिरेकल सीड"** डाउनलोड करें और इसका अध्ययन करें।)

अनुप्रयोग

1) परमेश्वर का वचन मानक और अंतिम अधिकार है—इसे मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में कैसे लागू कर सकता हूं?

2) परमेश्वर का वचन आश्चर्यकर्म का बीज है—परमेश्वर के वचन को पढ़ने के मेरे तरीके को यह कैसे बदलता है?

3) मैं परमेश्वर के वचन पर मनन करने की आदत को कैसे बढ़ावा दे सकता हूं?

4) क्या ऐसे कोई स्थान है जहां पर मुझे लगता है कि मैं परमेश्वर के वचन की पवित्रता और सामर्थ पर सवाल करता हूं? कौन सी बातों में और क्यों?

5) मैं कैसे उस स्थान पर आ सकता हूं जहां पर मैं परमेश्वर के वचन को सत्य के रूप में अपनाता हूं, और अपने जीवन में बाधा लाने वाली किसी भी बात को दूर कर सकता हूं?

8
स्थानीय कलीसिया

(इस पाठ की योजना हमें स्थानीय कलीसिया के उद्देश्य और स्थानीय कलीसिया में विश्वासियों का रिश्ता और कर्तव्य सिखाने हेतु की गई है।)

8.1 स्थानीय कलीसिया–उसके स्वाभाविक और आत्मिक आयाम

मत्ती 16:15-19

15 उसने उनसे कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं।
17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है! क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18 और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19 मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

"चर्च" शब्द का अर्थ इस प्रकार हैः

कलीसिया परमेश्वर की कल्पना है। संप्रदाय मानव निर्मित हैं।

चर्च (यूनानी) *'इक्लेशिया'*

इक् = में से; *क्लेसिस* = बुलाहट, बुलाना

शाब्दिक अर्थ से, "कलीसिया" या चर्च यह शब्द मात्र उन लोगों के इकट्ठा होने को दर्शाता है जो एक निश्चित उद्देश्य से बुलाए गए हैं।

8.2 स्थानीय कलीसिया–मसीह की देह के विषय में महत्वपूर्ण सत्य

- कलीसिया मसीह की देह है

कुलुस्सियों 1:18,24

18 और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।
24 अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए, अर्थात् कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।

इफिसियों 1:22,23

22 और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।
23 यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

- कलीसिया सनातन है, क्योंकि उसका सिर मसीह सनातन है।
- कलीसिया मसीह के उद्देश्यों को पूरा करने का साधन है।

जिस बात की सिर आज्ञा देता है, उसे देह अमल में लाती है–यहां इस वर्तमान युग में और हजार वर्षों के समय में भी।

दानिय्येल 7:18
परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।

- हर एक विश्वासी मसीह की देह–सनातन कलीसिया का अंग है।

1 कुरिन्थियों 12:27
इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और उसके अलग अलग अंग हो।

8.3 स्थानीय कलीसिया के सम्बंध में महत्वपूर्ण सत्य

1 तीमुथियुस 3:14,15
[14] मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूं,
[15] कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए।

- स्थानीय कलीसिया को "परमेश्वर" का घर कहा गया है।
- किसी विशिष्ट स्थान की स्थानीय कलीसिया परमेश्वर का वह परिवार है जो स्थान में रहता है।
- परिवार रिश्तों की बात है।
- परिवार में आपसी प्रेम, निगरानी, चिंता, और सहायता होती है।
- लोग परिपक्वता और बढ़ौत्तरी के स्तर में होते हैं।
- स्थानीय कलीसिया किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में मसीह की आत्मिक देह की भौतिक अभिव्यक्त है।
- किसी विशिष्ट क्षेत्र में स्थानीय कलीसिया उस क्षेत्र में मसीह के उद्देश्यों को पूरा करने वाला मसीह का साधन है।

स्थानीय कलीसिया भी परमेश्वर की विचार है!

आपको क्यों स्थानीय कलीसिया का समर्पित हिस्सा बनना चाहिए?

स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत आप और मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में मसीह के आत्मिक देह–कलीसिया के सदस्य के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं।

रोमियों 12:4-8
[4] क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं,
[5] वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।
[6] और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।
[7] यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे;
[8] जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।

- आप दूसरों की सेवा कर सकते हैं और दूसरों के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।
- कलीसिया में पर्याप्त बल, सहायता और प्रोत्साहन होता है।
- हम एक साथ मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं।
- एक व्यक्तिगत् "समूह" जो कर नहीं सकता, वह एक "झुण्ड" के रूप में पूरा हो सकता है।

यशायाह 65:8
यहोवा यों कहता है, जिस भांति दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे नाश मत कर, क्योंकि उसमें आशीष है; उसी भांति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा करूंगा कि सभों को नाश न करूंगा।

8.4 स्थानीय कलीसिया का मिशन

स्थानीय कलीसिया के मिशन को पांच मुख्य क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

जब आप किसी विशेष स्थान पर हों तो आपको एक स्थानीय कलीसिया के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। शरीर के अंग इधर-उधर तैरते नहीं बल्कि स्थिर रहते हैं

1) सुसमाचार प्रचार और मिशन

लोगों को सुसमाचार सुनाना और महान आदेश को पूरा करना।

2) शिष्यता

शिष्य वह व्यक्ति है जिसे चरित्र, आचरण, और सेवा में मसीह सदृश्य होने का प्रशिक्षण दिया गया है।

3) प्रार्थना और आराधना

- प्रार्थना और आराधना के द्वारा हम हमारे शहर के आत्मिक वातावरण को बदल सकते हैं।
- जब हम इकट्ठा होते हैं, तब प्रार्थना और आराधना आत्मिक सेवकाई के लिए वातावरण तैयार करते हैं।
- परमेश्वर आराधना और प्रार्थना करने वाली मण्डली के मध्य बोलता है।

4) संगती

परमेश्वर के परिवार के रूप में जीवन व्यतीत करना।

5) सेवकाई

पवित्रजनों को सेवकाई के लिए सिद्ध करना।

- हर एक सदस्य अपनी बुलाहट को पूरा करने हेतु तैयार किया गया है, सक्रिय बनाया गया है और मुक्त किया गया है।
- विश्वासी देह की उन्नति के लिए अपने वरदानों को खोजते हैं और उपयोग में लाते हैं।
- अपने आसपास के संसार पर प्रभाव डालना।
- सेवकों को बाहर भेजना और दूसरी कलीसिया को फिर उत्पन्न करना।

उत्तर रीति से तैयार स्थानीय कलीसिया ये सभी पांचों आयाम उचित संतुलन और महत्व के साथ होंगे।

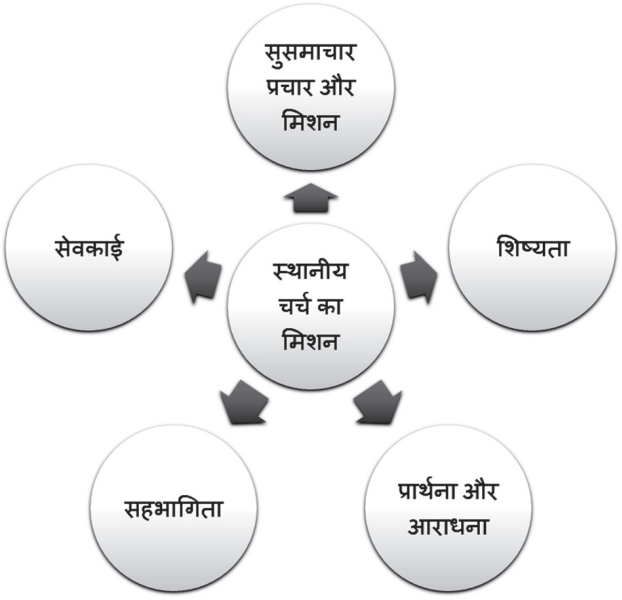

8.5 स्थानीय कलीसिया

स्थानीय कलीसिया–देह

कलीसिया एक "देह" है जो मानव देह के समान है। मानव देह में विभिन्न प्रणालियां होती हैं–कुल नौ। सभी प्रणालियों पर ध्यान देना स्वास्थ्य, बल और फलदायकता के लिए आवश्यक है। हम एक दिलचस्प समांतर तैयार कर सकते हैं:

1 कुरिन्थियों 12:12-27

[12] क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है।
[13] क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वंतत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।
[14] इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं।
[15] यदि पांव कहे कि मैं हाथ नहीं, इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं?
[16] और यदि कान कहे कि मैं आंख नहीं, इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है?
[17] यदि सारी देह आंख ही होती, तो सुनना कहां होता? यदि सारी देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता?
[18] परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।
[19] यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती?
[20] परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।
[21] आंख हाथ से नहीं कह सकती कि "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं", और न सिर पांवों से कह सकता है कि "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं"।
[22] परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं।
[23] और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं, उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं।
[24] फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो।
[25] ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें।
[26] इसलिए यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।
[27] इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और उसके अलग अलग अंग हो।

इफिसियों 4:16

जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उसमें होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

- **रक्तवह तंत्र** (Circulatory System): इस बात का ध्यान रखना कि हर एक को निगरानी और परवरिश मिले।
- **अस्थि पंजर** (Skeletal System): योग्य अगुवे, संगठन और प्रशासन के द्वारा संरचना, आकार और आधार का ध्यान रखना।
- **स्नायु तंत्र** (Muscular System): प्रत्येक विश्वासी सेवक बने इस बात का ध्यान रखते हुए बल, संचार और गतिशीलता का ध्यान रखना।
- **पाचन तंत्र** (Digestive System): वचन की मज़बूत, अभिषिक्त और समयोचित सेवकाई का ध्यान रखें ताकि लोग मज़बूत आत्मिक पोषण प्राप्त करे, पाचन करें और शोषण करें।
- **श्वसन प्रणाली** (Respiratory System): निरंतर, ताज़गीपूर्ण, श्वास, प्रेरणा और आत्मा के कार्य का ध्यान रखना।
- **तंत्रिका तंत्र** (Nervous System): स्थानीय कलीसिया में क्या हो रहा है इस विषय में तीव्र संवेदनशीलता और समझ का ध्यान रखें और समयोचित प्रतिक्रिया व्यक्त करें।
- **अंतः सावी प्रणाली** (Endocrine System): प्रार्थना, विश्वास, प्रेम, सेवाभाव आदि आत्मिक गतिविधियों का ध्यान रखें और कलीसिया के मूल्य और संस्कृति को बनाए रखें, जैसे, सृजनशीलता, समकालीन, सशक्त लोग बनें, आत्मिक देखभाल आदि। यद्यपि थोड़े प्रमाण में होने पर भी ये रासायनिक नियंत्रण प्रणाली का काम करते हैं और उन्नति, स्वास्थ्य और संतुलन को प्रेरित करते हैं।

- **उत्सर्जी संस्थान** (Excretory System): इस बात का ध्यान रखें कि कलीसिया प्रभावी रूप से अस्वस्थ बातों को—व्यक्तिगत और सामुहिक तौर पर निष्कासित करे।
- **प्रजनन संस्थान** (Reproductive System): इस बात का ध्यान रखें कि व्यक्ति और स्थानीय कलीसिया उत्पन्न करें—आत्माओं को जीतें, शिष्य बनाएं और कलीसिया रोपण करें।

स्थानीय कलीसिया—परिवार

परमेश्वर का भवन—आत्मिक घर

गलातियों 6:10
इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

इफिसियों 2:19-22
[19] इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।
[20] और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो,
[21] जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है,
[22] जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो।

1 तीमुथियुस 3:15
कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए।

"घर" (यूनानी *'ओइकोस'*) = निवासस्थान, परिवार के अर्थ से

मसीह की सामुहिक देह और स्थानीय कलीसिया दोनों को लागू।

यीशु—घर का स्वामी

मत्ती 10:25
चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को और क्या न कहेंगे!

"घर का स्वामी" (यूनानी *'ओइकोदेस्पोटेस'*) = परिवार का प्रमुख, गृहस्थ, घर की देखभाल करने वाला

हमें परमेश्वर के परिवार के रूप में जीवन व्यतीत करना है—एक दूसरे की देखभाल करना है, एक दूसरे की सहायता करना है, एक दूसरे को प्रोत्साहन देना है।

स्थानीय कलीसिया—एक सेना

मत्ती 16:15-19
[15] उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"
[16] शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं।"
[17] यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है! क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
[18] और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
[19] मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

2 तीमुथियुस 2:3,4
[3] मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा।
[4] जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता।

सेना में श्रेणी, वर्ग और अनुशासन होता है।

परमेश्वर ने हमारे मध्य अगुवों को रखा है—ताकि वे आगे हमारी अगुवाई करें।

सामरिक (फौजी) मानसिकता

हम युद्ध में हैं, अतः हमें अत्याधिक सावधान रहना है। यहां इस जीवन में रहते हुए कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो सेनामुक्त हो।

सामरिक (फौजी) जीवनशैली

सिपाहियों के नाते अपने संसारिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए, हमें इस जीवन की बातों में व्यस्त होने में खुद को बचाए रखना है।

सामरिक (फौजी) अनुशासन

हम अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को—आत्मा, प्राण और शरीर—को अनुशासन में बनाए रखते हैं।

- शरीर में प्रत्येक "अंग" या सदस्य के महत्व को समझें।

  आप महत्वपूर्ण हैं—आपका स्थान और कार्य कुछ भी हो।
- समझें कि एक "परिवार" के व्यक्ति वृद्धि और विकास के विभिन्न चरणों में होंगे (पिता, माता, युवा वयस्क, किशोर, बच्चे)। इसलिए, हमें स्थानीय कलीसिया में एक दूसरे को समझना चाहिए क्योंकि हम सभी प्रभु में बढ़ते और परिपक्व होते रहते हैं।

मुख्य मौखिक पद

रोमियों 12:4-8

[4] क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं,
[5] वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।
[6] और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।
[7] यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे।
[8] जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे; जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।

इफिसियों 1:22,23

[22] और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।
[23] यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

गलातियों 6:10

इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

अनुप्रयोग

1) संक्षिप्त रूप से स्थानीय कलीसिया का मिशन निवेदन करें।

2) क्या मैं स्थानीय कलीसिया में समर्पित सदस्य हूं, यदि नहीं, तो कौन सी बात मुझे स्थानीय कलीसिया के सदस्य के रूप में कार्य करने से रोकती है?

3) इस समय स्थानीय कलीसिया में मेरा स्थान और कर्तव्य क्या है? मैं स्थानीय कलीसियाई मण्डली का अर्थपूर्ण "सदस्य" कैसे हो सकता हूं–मेरे लिए मसीह के उद्देश्य को कैसे पूरा कर सकता हूं?

(यदि आप किसी स्थानीय कलीसिया के सदस्य नहीं हैं, तो हम आपको समर्पित सदस्य बनने पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सदस्यता फॉर्म पर हस्ताक्षर करना आपके समर्पण की अभिव्यक्ति है। यदि आप ऑल पीपल्स चर्च के सदस्य बनना चाहते हैं, तो कृपया सदस्यता सूचना पुस्तिका डाउनलोड करें apcwo.org/churchforms पढ़ें, इसके बारे में प्रार्थना करें और देखें कि क्या परमेश्वर आपको यहीं स्थापित करना चाहता है।)

9
कलीसिया के संस्कार

(इस पाठ की योजना हमें कलीसिया के दो संस्कारों या विधियों के विषय में सिखाने हेतु की गई है। कलीसिया के विधि या संस्कारों से हम प्रथाओं का उल्लेख करते हैं जो मसीह द्वारा नियुक्त की गई हैं जिनका कलीसिया को स्थायी रूप से पालन करना है। जल का बपतिस्मा और प्रभु भोज ये दो विधी हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा कलीसिया के लिए नियुक्त किए गए, जिसके द्वारा क्रूस पर मसीह के पूरे किए गए कार्य की सामर्थ विश्वासी के जीवन में वास्तविक और प्रभावी सिद्ध होती है। कलीसिया की विधियों में हिस्सा लेते समय परमेश्वर की सामर्थ को अपने जीवन में कैसे ग्रहण करना है यह सीखें।)

9.1 कलीसिया के विधी

कलीसिया के दो विधी या संस्कार हैं। कलीसिया के विधी या संस्कारों से हम उन प्रथाओं का उल्लेख करते हैं जो मसीह द्वारा नियुक्त की गई हैं जिनका कलीसिया को स्थायी रूप से पालन करना है। जल का बपतिस्मा और प्रभु भोज ये दो विधी हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा कलीसिया के लिए नियुक्त किए गए।

जिसके द्वारा क्रूस पर मसीह के पूरे किए गए कार्य की सामर्थ विश्वासी के जीवन में वास्तविक और प्रभावी सिद्ध होती है। कलीसिया की विधियों में हिस्सा लेते समय परमेश्वर की सामर्थ को अपने जीवन में कैसे ग्रहण करना है यह सीखने की हम इच्छा रखते हैं।

जल का बपतिस्मा

पश्चाताप के चिन्ह के रूप में पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की घोषणा करते समय यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले द्वारा इसका परिचय कराया गया।

मत्ती 3:1-8

[1] उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा,
[2] "मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"
[3] यह वही है जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।
[4] यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहने था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था, और उसका भोजन टिड्डियां और वनमधु था।
[5] तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए,
[6] और अपने अपने पापों को मानकर उन्होंने यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।
[7] जब उसने कई फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिए अपने पास आते देखा, तो उसने उनसे कहा, हे सांप के बच्चों, तुम्हें किसने जता दिया कि आनेवाले क्रोध से भागो?
[8] इसलिए मन फिराव के योग्य फल लाओ।

सारी धार्मिकता को पूरा करने हतु आज्ञाकारिता को प्रगट करने के एक मार्ग के रूप में यीशु का बपतिस्मा हुआ–यद्यपि उसे किसी प्रकार के पश्चाताप की आवश्यकता नहीं थी।

मत्ती 3:13-16

[13] उस समय यीशु गलील से यरदन नदी के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया।
[14] परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा कि मुझे आपके हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और आप मेरे पास आए हैं?
[15] यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब यूहन्ना ने उसकी बात मान ली।
[16] और जब यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, तब देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा।

बपतिस्मा आज्ञा पालन का कार्य है। आप बड़े पैमाने पर आशीष की अपेक्षा कर सकते हैं।

बपतिस्मा नए नियम में एक आज्ञा है।

मत्ती 28:19,20

[19] इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।
[20] और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।

बपतिस्मा केवल यीशु मसीह को अनुसरण करने के आपके निर्णय को व्यक्त करता है।

प्रेरितों के काम 2:38,39

[38] पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।
[39] क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

बपस्तिस्मा यीशु के साथ मृत्यु, दफनाए जाने और जी उठने के आंतरिक अनुभव का प्रतीक है।

रोमियों 6:4

इसलिए उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

बपतिस्मा परमेश्वर के सामने अपने स्पष्ट विवेक को बनाए रखने की आपकी इच्छा की अभिव्यक्ति है।

1 पतरस 3:21

और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।

बपतिस्मा पाने के लिए केवल एक ही शर्त है "पश्चाताप करें" और प्रभु यीशु मसीह में "बपतिस्मा" लें।

प्रेरितों के काम 8:36,37

[36] मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख, यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?
[37] फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है। उसने उत्तर दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।

बपतिस्मा केवल पानी में डुबाने से होता है।

आपको बपतिस्मा पाने के लिए पवित्र होने की आवश्यकता नहीं है। जल का बपतिस्मा आपको आत्मिक रीति से महान नहीं बनाएगा। आपको अब भी वचन और प्रार्थना के द्वारा आत्मिक रीति से बढ़ने की आवश्यकता है।

बपतिस्मा क्रूस की सांकेतिक घोषणा है, अतः आप अपेक्षा कर सकते हैं कि क्रूस की सामर्थ आपके जीवन को प्रभावित करे और बपतिस्मा के दौरान बंधनों, व्यसनों को तोड़कर आपको छुटकारा प्रदान करे।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक में, हम देखते हैं कि लोगों ने जितनी बार बपतिस्मा लिया, उतनी बार उन्होंने "यीशु मसीह के नाम में" बपतिस्मा लिया। इससे हम समझते हैं कि इसका अर्थ है "यीशु मसीह के द्वारा हमें दिए गए अधिकार से।"

जिस सूत्र का हम उपयोग करते हैंः "यीशु के नाम में (*अर्थात, मसीह के अधिकार के द्वारा*), मैं तुम्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देता हूं।"

(यदि आपने पवित्र शास्त्र की आज्ञा के अनुसार जल का बपतिस्मा नहीं पाया है, तो हम आपको प्रोत्साहन देते हैं कि बपतिस्मा लें। **apcwo.org/events/church-calender** *जल के बपतिस्मे की अगली तारीख देखें और अपना नाम दर्ज़ कराएं।)*

प्रभु की मेज

मत्ती 26:18-30

18 उसने कहा, "नगर में फलाने के पास जाकर उससे कहो कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां
पर्व मनाऊँगा।"
19 इसलिए चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।
20 जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिए बैठा।
21 जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।"
22 इस पर वे बहुत उदास हुए और हर एक उससे पूछने लगा, 'हे गुरु, क्या वह मैं हूं?'
23 उसने उत्तर दिया, "जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।"
24 मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिए शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया
जाता है। यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता।"
25 तब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा कि, हे रब्बी, क्या वह मैं हूं?
26 उसने उससे कहा, "तू कह चुका।" जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, लो,
खाओ; यह मेरी देह है।
27 "फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, "तुम सब इसमें से पीओ,
28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।
29 मैं तुमसे कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीउंगा", जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं।
30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए।

1 कुरिन्थियों 11:20-34

20 इसलिए तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिए नहीं।
21 क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, इसलिए कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है।
22 क्या खाने–पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्जित करते
हो? मैं तुमसे क्या कहूँ? मैं प्रशंसा नहीं करता।
23 क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली,
24 और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है; मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।"
25 इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा, "यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है; जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण
के लिए यही किया करो।"
26 क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।
27 इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा।
28 इसलिए मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।
29 क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।
30 इसी कारण तुममें बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।

31 यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते।
32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है,
33 इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें। इसलिए, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिए ठहरा करो।
34 यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो; और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूंगा।

1 कुरिन्थियों 10:16-21
16 वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?
17 इसलिए कि एक ही रोटी है, तब हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं; क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।
18 जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखो! क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं?
19 फिर मैं क्या कहता हूं? क्या यह कि मूरत का बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है?
20 नहीं, वरन् यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिए नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं; और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो।
21 तुम प्रभु के कटोरे, और दुष्टात्माओं के कटोरे, दोनों में से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते।

- प्रभु की मेज या प्रभुभोज की विधी की स्थापना स्वयं प्रभु यीशु द्वारा की गई थी।
- प्रभु की मेज उन सभी लोगों के लिए खुली है जो प्रभु यीशु मसीह में विश्वासी हैं।

1 कुरिन्थियों 10:16
वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?

- एक दूसरे के साथ हमारे मेल की अभिव्यक्ति।

1 कुरिन्थियों 10:17
इसलिए कि एक ही रोटी है, तब हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं; क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।

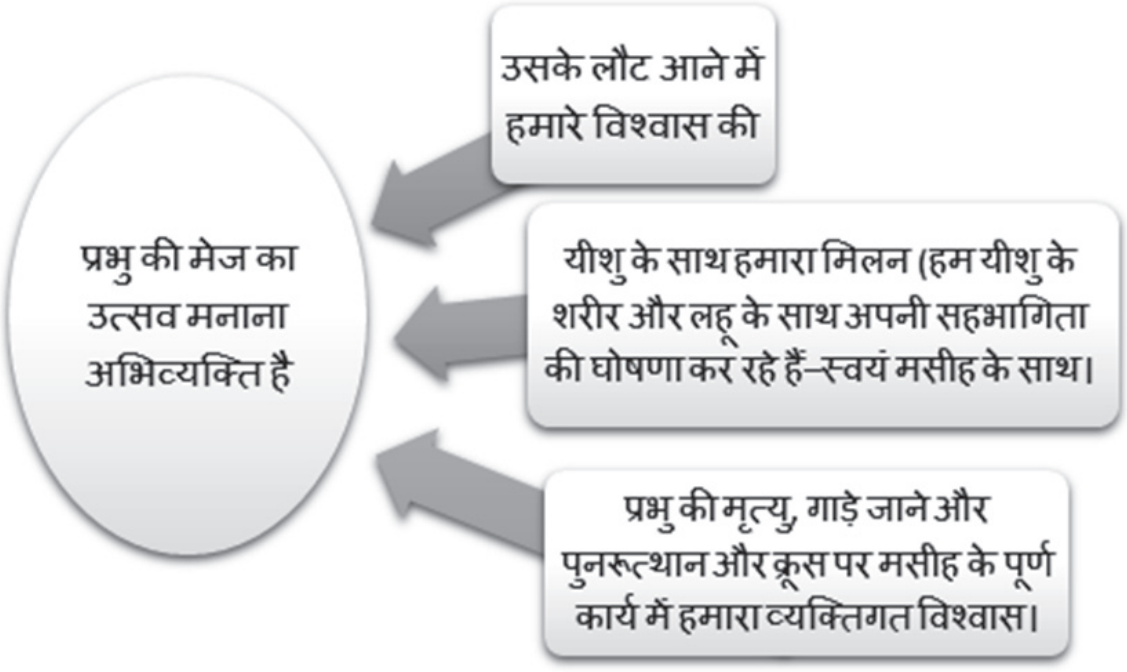

हमें इन बातों के द्वारा अपने हृदयों को तैयार करना है:

- अपने जीवनों का परीक्षण कर अपने सारे ज्ञात पापों को त्यागना है।
- रोटी और दाखमधु को लेकर, वे जिस बात का प्रतीक हैं–क्रूस पर मसीह की मृत्यु और लोहू बहाया जाना–उसे समझना है और उनमें विश्वास करना है।

प्रभु की मेज मनाते समय, हम क्रूस की पूर्ण आशीषों की अपेक्षा कर सकते हैं–उद्धार, चंगाई, छुटकारा, और स्वास्थ्य –हमारे जीवनों में मुक्त किए जाएं।

उचित रीति से ग्रहण करना

एक विषय को पौलुस सम्बोधित करता है, वह है कुरिन्थुस की कलीसिया में लोगों का आचरण। वे दो तरह से प्रभु की मेज का उल्लंघन कर रहे हैं:

1) वे प्रभु की मेज में हिस्सा ले रहे थे (आराधना की क्रिया के रूप में) और उसके बाद मूर्तियों की आराधना के रूप में मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन ले रहे थे, जिसे पौलुस मूर्तिपूजा कहता है (1 कुरिन्थियों 10:14-33)। वास्तविक समस्या भोजन के साथ नहीं थी–परंतु उस आदर की थी जो मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन खाकर उसे आदर दिया जा रहा था, उसकी थी, जो अन्य नए विश्वासियों के लिए ठोकर का कारण बन गई।

2) उन्होंने प्रभु की मेज को एक तरह की दावत में बदल दिया था (1 कुरिन्थियों 11:20-22) और इसीलिए योग्य रीति से प्रभु की देह को पहचानने और प्रभुभोज में भागी होने हेतु यह शिक्षा दी गई। यदि हम उचित रीति से ऐसा करते हैं–तो हम हमारे जीवनों में क्रूस की पूर्ण आशीषों को प्राप्त करते हैं–जिसमें चंगाई शामिल है। परंतु जो कुछ हम कर

रहे हैं उससे सचमुच न समझे बिना या उसके महत्व पर ध्यान न देते हुए यदि हम वह करते हैं, तो हम क्रूस की आशीषों को प्राप्त करने से चुक जाते हैं–इसका एक परिणाम यह है कि हम हमारे शरीरों के लिए दिए गए चंगाई के प्रयोजन से वंचित रह जाते हैं और *" ...इसी कारण तुममें बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए ...।"*

एकमात्र योग्यता

पवित्र शास्त्र में यह स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया है कि प्रभु की मेज़ में सहभागी होने से पहले जल का बपतिस्मा होना आवश्यक है। इसीलिए ऑल पीपल्स चर्च में हम सभी नये विश्वासियों के लिए प्रभु की मेज़ में सहभागी होने का खुला निमंत्रण देते हैं। व्यक्ति कब जल का बपतिस्मा ले या कब प्रभु भोज में सहभागी हो इसकी कोई स्पष्ट उम्र पवित्र शास्त्र में नहीं दी गई है। केवल एकमात्र योग्यता यह है कि प्रभु यीशु में व्यक्तिगत विश्वास करने के द्वारा व्यक्ति का नया जन्म हुआ हो (वह विश्वासी बना हो)। अतः हम लोगों को बपतिस्मा प्राप्त करने या प्रभु की मेज़ में सहभागी होने के लिए निमंत्रित करने का यह तरीका अपनाते हैं।

9.2 कुछ सामान्य प्रश्न

1) यदि नया जन्म न पाते हुए भी, मेरा पहले "बपतिस्मा" हुआ था–या "छिड़काव" का बपतिस्मा हुआ था या "डुबकी का" बपतिस्मा हुआ था, तो क्या मेरे लिए "फिर" से बपतिस्मा लेना आवश्यक / ठीक है?

अब आप विश्वासी हैं, इसलिए हां, फिर से बपतिस्मा लेना और यीशु मसीह में आपके विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में ऐसा करना उचित है। ऐसा उदाहरण हमारे पास प्रेरितों के काम 19:1-6 में है, जब पौलुस ने यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले के हाथों बपतिस्मा पाए हुए कुछ शिष्यों से भेंट की। उसने उन्हें यीशु मसीह के विषय में बताया, और उनके विश्वास करने के बाद उन्होंने यीशु मसीह के नाम में जल का बपतिस्मा पाया।

2) जल का बपतिस्मा पाने से पहले क्या मुझे किसी आत्मिक स्तर पर या आत्मिक परिपक्वता के स्तर पर पहुंचने की आवश्यकता है?

नहीं। एकमात्र योग्यता जो हम देखते हैं वह है विश्वासी का नया जन्म प्राप्त करना, उसका यीशु मसीह में विश्वासी होना। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जैसे ही उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया, उन्होंने जल का बपतिस्मा लिया।

3) क्या एक विश्वासी दूसरे विश्वासी को बपतिस्मा दे सकता है या बपतिस्मा केवल पासबान या कोई आत्मिक अगुवा दे?

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम फिलिप्पुस को नये विश्वासियों को बपतिस्मा देते हुए देखते हैं जो यरूशलेम की कलीसिया का डिकन था। उसी तरह हम हनन्याह को देखते हैं जो विश्वासी था, उसे शाऊल को बपतिस्मा देने हेतु भेजा गया था (जो बाद में पौलुस बन गया)। इसलिए, हां, कोई भी विश्वासी दूसरे विश्वासी को जल का बपतिस्मा दे सकता है।

4) यदि मैं यह न समझते हुए या यह विश्वास न रखते हुए कि मैं क्या कर रहा हूं "अनुचित रीति से" प्रभु की मेज़ में भाग लेता हूं–तो क्या मुझे कोई जानलेवा बीमारी होगी?

नहीं। केवल इस बात को जान लें कि आपने इसे छोटी बात समझा है। प्रभु से कहें कि वह आपको क्षमा करें (अर्थात् अनुचित रीति से प्रभुभोज लेने के लिए पश्चाताप करें) और आगे बढ़ें, इसे उचित रीति से करें।

5) यदि प्रभुभोज के उत्सव में अगुवाई करने वाला व्यक्ति स्वयं यह विश्वास न करता हो कि वह क्या कर रहा है, तो क्या मुझे प्रभु की मेज़ में हिस्सा लेना चाहिए?

यदि प्रभुभोज के उत्सव में अगुवाई करने वाला व्यक्ति इस बात में विश्वास नहीं करता कि वह क्या कर रहा है, तो प्रभु की मेज़ में हिस्सा लेने का कोई महत्व नहीं है।

6) क्या विश्वासी के रूप में मैं घर में प्रभु की मेज़ में हिस्सा ले सकता हूं?

अवश्य। यदि आप ऐसा प्रभु के लिए कर रहे हैं, उसके स्मरणार्थ कर रहे हैं, तो एक या एक से अधिक विश्वासी घर में या अन्य कहीं, प्रभु की मेज़ में सहभागी हो सकते हैं।

- प्रभु की मेज का उत्सव मनाना अभिव्यक्ति है
- उसके लौट आने में हमारे विश्वास की यीशु के साथ हमारा मिलन (हम यीशु केशरीर और लहू के साथ अपनी सहभागिता की घोषणा कर रहे हैं–स्वयं मसीह के साथ।
- प्रभु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरूत्थान और क्रूस पर मसीह के पूर्ण कार्य में हमारा व्यक्तिगत विश्वास।

मुख्य मौखिक पद

प्रेरितों के काम 2:38,39

[38] पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

[39] क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"

1 कुरिन्थियों 10:16

वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?

1 कुरिन्थियों 10:17

इसलिए कि एक ही रोटी है, तब हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं; क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।

अनुप्रयोग

1) जल का **बपतिस्मा** और **प्रभु भोज** की प्रथा को कौनसी बात वास्तविक और अर्थपूर्ण बनाती है?

10
मसीह में

(यीशु मसीह में परमेश्वर ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसे समझने में हमारी सहायता करने हेतु इस पाठ की योजना की गई है, यह पाठ मसीह में हमारी सच्ची पहचान को परिभाषित करता है और हमें सिखाता है कि उसमें हमारी मीरास को कैसे जीएं।)

10.1 परिचय

परमेश्वर ने मसीह यीशु में हमारे लिए क्या किया है यह समझने की हमें ज़रूरत है, हमें मसीह में हमारी सच्ची पहचान जानना है, यह जानना है कि हम उसमें कौन हैं और मसीह हममें वाला जीवन जीने हेतु हमें सुसज्जित होना है।

यह पाठ एपीसी के विनामूल्य प्रकाशन ***"हम मसीह में कौन हैं"*** में दिए गए विस्तृत बाइबल अध्ययन का संक्षिप्त सारांश है।

10.2 मसीह के साथ हमारे मेल को समझना

हम मसीह में हैं

यूहन्ना 15:1-5

[1] सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है।
[2] जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि फले।
[3] तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है, शुद्ध हो।
[4] तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
[5] मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

यहां पर प्रभु ने अपने लोगों के साथ अपने रिश्ते को निवेदन करने हेतु दाखलता और उसकी डालियों का उदाहरण उपयोग किया है।

- हम उसके "साथ" जुड़े हुए हैं।
- जो कुछ उसमें हैं वह हममें हैं।
- हम दाखलता का फल लाने वाला हिस्सा हैं—हम मसीह के जीवन को प्रगट करते हैं।

जो आप मसीह में हैं आप वास्तव में वहीं हैं!

2 कुरिन्थियों 5:17
इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।

- हम कुछ बन गए, जो हम पहले नहीं थे।
- जो पहले अस्तित्व में नहीं था, अब अस्तित्व में आ गया।

- परमेश्वर ने "पुराने मैं" को लेकर मसीह में नहीं रखा। बल्कि, उसने मुझे नई सृष्टि बनाया और मुझे मसीह में रखा। जब मसीह यीशु मेरे जीवन में आया–तब मैं नई सृष्टि बन गया–कुछ, कुछ नया। आप जो मसीह में हैं, वही आप वास्तव में हैं!

हमारी नई पहचान है

- हम एक समय पापी थे, परंतु अब मसीह में संत हैं।
- एक समय हम अपराधी थे, परंतु अब हम मसीह में धर्मी ठहराए गए हैं।
- एक समय हम अधर्मी थे, परंतु अब मसीह में हम परमेश्वर की धार्मिकता हैं।
- पहले हम आत्मिक रीति से जो थे, अब नहीं हैं।

इसका अर्थ यह है कि हमें हमारी छवि बदलने की ज़रूरत है–जिस तरह हम सोचते हैं, जिस तरह खुद के विषय में बोलते हैं। हमें खुद के विषय में उसी तरह सोचना है और उसी तरह बोलना है जिस तरह परमेश्वर हमें मसीह में देखता है–बजाए उस तरह से जिस तरह हम खुद को देखने के आदि हैं, या जिस तरह दूसरे हमें देखते हैं।

यह सच आपके जीवन को कैसे बदल सकता है?

वह आपकी छवि बदल देगा

आप मसीह में जो हैं, वही आप वास्तव में हैं! आपकी छवि और आपके मूल्य को आपके उपलब्धियों पर आधारित न करना सीखें, लोग आपके विषय में क्या बोलते हैं इस आधारित नहीं, परंतु आप मसीह में कौन हैं इस सरल तथ्य के आधार पर।

इसके के द्वारा आपका परमेश्वर के साथ व्यवहार करने का तरीका बदलेगा

जिस तरह आप परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, परमेश्वर के साथ आपकी प्रतिदिन संगति, परमेश्वर की उपस्थिति में आपका प्रवेश आपके कामों पर आधारित नहीं है। आप मसीह में कौन हैं इस पर वह आधारित है।

जीवन में चुनौतियों और मुश्किलों का सामना करने के तरीके को वह बदल देगा

मसीह आप में हैं, आप मसीह में हैं और आप जीतने वाले हैं। परमेश्वर और आप बहुसंख्या हैं।

वह आपकी जीवनशैली बदल देगा

आपके जीवन में पाप पर विजय पाने में वह आपकी सहायता करेगा।

रोमियों 6:14
और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं, वरन् अनुग्रह के आधीन हो।

पाप अब आप पर प्रभुता नहीं करेगा। आपको पाप के बंधन में रहने की ज़रूरत नहीं है।

दुष्टात्माओं और दुष्टात्मा की सामर्थ का सामना करने के तरीके को वह बदल देगा

जब आप जानेंगे कि आप मसीह में कौन हैं, तब दृढ़ विश्वास के साथ आप दुष्टात्माओं और दुष्टात्मा की सामर्थ का सामना कर सकते हैं।

लोगों के साथ व्यवहार करने का आपका तरीका बदल जाएगा

जब आप दूसरे व्यक्ति की ओर देखते हैं, तो भले ही वह व्यक्ति स्वाभाविक शब्दों में अत्यंत महान न हो, फिर भी यदि वह मसीह में हैं, तो वह भाई है। आप उसकी शिक्षा या योग्यता के आधार पर उसके साथ व्यवहार नहीं कर रहे हैं। वह मसीह में भाई है। आपको उसके साथ उसी तरह व्यवहार करना है। यदि उस भाई की और सामर्थी सेवकाई है, तो परमेश्वर उसे आशीष दें, वह आपका मसीह में भाई है। आप होड़ में नहीं हैं, परंतु एक साथ मिलकर सहकार्य के साथ काम करते हैं। आप मसीह में एक देह है। आपको असुरक्षित महसूस करने की ज़रूरत नहीं। हम सभी मसीह के साथ जुड़े हुए हैं।

10.3 मसीह मे सत्य

धोया गया, पवित्र किया गया, और धर्मी ठहराया गया

1 कुरिन्थियों 6:9-11

[9] क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ; न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी;

[10] न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।

[11] और तुममें से कई ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।

धोया गया - शुद्ध किया गया

पवित्र किया गया - परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के लिए अलग किया गया।

धर्मी ठहराया गया - दोषमुक्त किया गया, घोषित किया गया कि अपराधी नहीं है, पूर्ण रूप से क्षमा किया गया, निरपराध ठहराया गया, **ऐसा किया गया मानो कभी पाप न किया हो।**

हर आशीष से आशीषित किया गया

इफिसियों 1:3

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।

विजयी किया गया

2 कुरिन्थियों 2:14

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिए फिरता है, और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है।

जीवन में राज्य

रोमियों 5:17

क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और ध र्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

मसीह के साथ एक किया गया–क्रूस पर चढ़ाया गया, दफ़नाया गया, जिलाया गया, बैठाया गया

हम मसीह में हैं, अतः उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने, दफ़नाए जाने, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ में स्थान आदि में उसके साथ एक हो गए हैं। मसीह के साथ हमारे वर्तमान मिलन ने हमें यह अधिकार दिया है कि हम उसकी पिछली उपलब्धियों को प्राप्त करें।

रोमियों 6:1-7

[1] तब हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहे ताकि अनुग्रह बहुत हो?
[2] कदापि नहीं, हम जब पाप के लिए मर गए, तो फिर भविष्य में उसमें कैसे जीवन बिताएं?
[3] क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?
[4] इसलिए उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।
[5] क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।
[6] क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम भविष्य में पाप के दासत्व में न रहें।
[7] क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा।

इफिसियों 2:1-6

[1] और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे,
[2] जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।
[3] इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं मे दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।
[4] परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया,
[5] जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),
[6] और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।

- **मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया**–पाप का शरीर (पाप की सामर्थ / नियंत्रण) नष्ट किया गया।
- **मसीह के साथ दफनाया गया**–पिछले जीवन से अलग किया गया।
- **मसीह के साथ मुर्दों में से जिलाया गया**–नया जीवन दिया गया।
- **मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में उठाया गया**–वर्तमान युग से अलग किया गया।
- **मसीह के साथ बिठाया गया**–राज करने हेतु स्थापित किया गया।

(पवित्र शास्त्र में "हम मसीह में कौन हैं" इस विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप ए.पी.सी. प्रकाशन की **"हम मसीह में कौन हैं"** *यह पुस्तक* **apcwo.org/books** *से प्राप्त करें और गहराई से उसका अध्ययन करें।)*

10.4 हम मसीह में कौन हैं इस आधार पर हमें अपना जीवन बिताना है

उसमें बने रहें

यूहन्ना 15:4,5

[4] तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
[5] मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

जब हम उसमें बने रहेंगे, और वह हम में, तब हम वैसे ही चलेंगे जैसे मसीह चला।

उसमें आपने जो उत्तम वस्तु पाई है उस हर एक को अंगीकार करें।

फिलेमोन 1:6
तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहचान में मसीह के लिए प्रभावशाली हो।

- आप में मसीह में जो भलाई है, उस सारी भलाई को अंगीकार करें।
- अपने अधिकारों को जानें और उनमें डटे रहें।

मुख्य मौखिक पद

2 कुरिन्थियों 5:17
इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।

यूहन्ना 15:4,5
[4] तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
[5] मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

(आगे के अध्ययन के लिए कृपया ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक **"हम मसीह में कौन हैं"** को **apcwo.org/books** से डौनलोड़ किजिए।)

अनुप्रयोग

1) परमेश्वर ने मसीह में मेरे लिए जो कुछ किया है, और जो कुछ उसने मुझे मसीह में दिया है उसके साथ परमेश्वर क्या चाहता है कि मैं करूं?

2) मसीह के साथ मेरे मेल को लेकर मैं कैसे जीवन बिताता हूं?

3) परमेश्वर ने मसीह में मेरे लिए जो किया है उसे मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में कैसे अनुभव करता हूं?

4) "मसीह में" होना कैसे

- मेरी छवि को बदलता है?

- परमेश्वर के साथ व्यवहार करने के तरीके को बदलता है?

- जीवन में चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करने के मेरे तरीके को बदलता है?

- मेरी जीवनशैली को बदलता है?

- दुष्टात्माओं और दुष्टात्मा की शक्तियों का सामना करने के मेरे तरीके को बदलता है?

- लोगों के साथ व्यवहार करने के मेरे तरीके को बदलता है?

11
पवित्र आत्मा

(इस पाठ की योजना विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य के विषय में सिखाने हेतु की गई है। हम पवित्र आत्मा के कार्य के उन पहलुओं के विषय में बताएंगे जैसे, पवित्र आत्मा से भर जाना, आत्मा में चलना, और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा।)

11.1 पवित्र आत्मा व्यक्ति है

"हवा" का उदाहरण।

"आत्मा" के लिए दिए गए इब्रानी और यूनानी शब्द का अर्थ है हवा।

इब्रानी *'रुआह'* = श्वास, हवा, बल, वायु, हवा का झोका

यूनानी *'न्यूमा'* = वायु, श्वास, सांस लेना, फूंकना

हवा–हम अलग अलग काम करते हैं।

- हम हवा (वायु) को श्वास के द्वारा ग्रहण करते हैं।
- हम हवा को महसूस करते हैं।
- हम हवा से ऊर्जा उत्पन्न कर सकते हैं।
- हम नांव चलाने के लिए हवा का उपयोग करते हैं।
- हम हवाई जहाज चलाने के लिए हवा का उपयोग करते हैं।

उसी तरह, हम उस स्तर में बने रह सकते हैं जहां पर हम आत्मा की हवा की "सांस" ले सकते हैं या हम आगे बढ़ सकते हैं और आत्मा की हवा लेकर ऊंचे स्थानों में उड़ सकते हैं। आत्मा की "हवा" से हम बहुत कुछ अनुभव कर सकते हैं।

यद्यपि पवित्र शास्त्र में अनुवाद किया गया शब्द "हवा" है, फिर भी हमें हमेशा यह याद रखना है कि पवित्र आत्मा व्यक्ति है, वास्तविक आत्मा है। वह परमेश्वर है, पिता और पुत्र की बराबरी में है, और उसे समान रूप से आदर दिया जाना चाहिए और समान रूप से उसकी आराधना की जानी चाहिए।

11.2 विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा का कार्य

नए जन्म में

जल और आत्मा से नया जन्म पाया हुआ

यूहन्ना 3:1-8

[1] फरीसियों में से नीकुदेमुस नामक एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।

[2] उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आए हैं; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो आप दिखाते हैं, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता।

[3] यीशु ने उसको उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।

[4] नीकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?
[5] यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, तब तक वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
[6] क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
[7] अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
[8] हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती है और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।

जल स्वाभाविक जन्म का प्रतीक है। यह वचन की सामर्थ के द्वारा नए जन्म को भी दर्शाता है, क्योंकि जल परमेश्वर के वचन का प्रतीक है।

1 पतरस 1:23
क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं, परंतु अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवित और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।

यूहन्ना 15:3
तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है, शुद्ध हो।

इफिसियों 5:26
कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए।

नया जन्म देने वाले आत्मा के कार्य से जन्मा हुआ

तीतुस 3:4,5
[4] परंतु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई,
[5] तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।

पुत्रत्व का आत्मा हमारे हृदयों में भेजा गया है

गलातियों 4:6,7
[6] और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।
[7] इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

पवित्र आत्मा हमें हमारे पुत्रत्व/उद्धार का "आश्वासन" देता है

रोमियों 8:14-16
[14] इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं,
[15] क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।
[16] आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

प्रतिदिन के जीवन में

शरीर को क्रूस पर चढ़ाना

(रोमियों 6-8 और गलातियों 5 इन अध्यायों का अध्ययन करें।)

गलातियों 6:8
क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

आत्मा के मंदिर

1 कुरिन्थियों 3:16,17

[16] क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है?
[17] यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

1 कुरिन्थियों 6:19,20

[19] क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
[20] क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

हमें मसीह की समानता में बदल देता है

2 कुरिन्थियों 3:18

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।

आत्मा में चलना / पवित्र आत्मा से भर जाना

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का क्या अर्थ है।

इफिसियों 5:18-21

[18] और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।
[19] और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते और सदा
[20] सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।
[21] और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।

यह शब्द "आत्मा से परिपूर्ण होने की" तुलना मतवालेपन की अवस्था से करता है। जब आप व्यक्ति को शराब के प्रभाव में या नशे में धुत्त देखते हैं, तब आप पहचान लेते हैं। कैसे? वे सीधे नहीं चलते। वे सीधे नहीं बोलते। और यदि आप उनके नज़दीक खड़े होंगे, तो आपको शराब की बदबू आएगी!!!

हमें आत्मा से इस तरह मतवाले बनना है, जिससे हमें देखने पर लोग कह सकें कि हम आत्मा से परिपूर्ण हो गए हैं।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति या आत्मा में चलने वाले व्यक्ति की अलग पहचान दिखाने वाली विशेषता इफिसियों 5:18-21 में पाई जाती है। *"और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।"*

गलातियों 5:16-21

[16] परंतु मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
[17] क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।
[18] और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के आधीन न रहे।
[19] शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन,
[20] मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,
[21] डाह, मतवालपन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमको पहले से कह देता हूं जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

आत्मा का फल (मसीह समान सद्‌गुण)

गलातियों 5:22,23
[22] पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज,
[23] कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

आत्मा का प्रकटीकरण का कार्य

हमारे लिए तैयार की गई बातों का ज्ञान।

1 कुरिन्थियों 2:9-16
[9] परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।
[10] परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।
[11] मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
[12] परन्तु हमने संसार का आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं,
[13] जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।
[14] परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।
[15] आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।
[16] क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परन्तु हममें मसीह का मन है।

हमें सत्य की ओर ले जाता है

यूहन्ना 16:13
परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

आत्मा के चलाए चलना

रोमियों 8:14-16
[14] इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं,
[15] क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।
[16] आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

हमारा विवेक पवित्र आत्मा के साथ गवाही देता है

रोमियों 9:1
मैं मसीह में सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है।

मैं जो महसूस करता हूं वह "आत्मा की अगुवाई है" या नहीं यह परखना?

- आत्मा और वचन एक साथ सहमत होते हैं

1 यूहन्ना 5:7
और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है।

- क्या यीशु को महिमा मिलती है?

यूहन्ना 16:13
परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

- क्या यह धार्मिकता है?
- क्या अन्य धर्मी विश्वासी इस बात की गवाही देते हैं?

11.3 पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

पवित्र आत्मा का यीशु के गवाह बनने के लिए सामर्थ देता है।

मत्ती 3:11
मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

पुनरुत्थान के पश्चात, यीशु ने अपने शिष्यों से भेंट की, उन पर फूंका और उनका नया जन्म हुआ।

यूहन्ना 20:21,22
[21] यीशु ने फिर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।
[22] यह कहकर उसने उन पर फूंका और उनसे कहा, पवित्र आत्मा लो।

फिर उसने उन्हें पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बांट जोहने के लिए कहा।

लूका 24:48,49
[48] तुम इन सब बातों के गवाह हो।
[49] और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उण्डेलूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।

प्रेरितों के काम 1:4,5,8
[4] और उसने उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो।
[5] क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।
[8] परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा "नए जन्म" के अनुभव से भिन्न है।

पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा सभी विश्वासियों के लिए है।

पवित्र आत्मा के वरदान को प्राप्त करना

प्रेरितों के काम 2:1-4,14-18,38,39
[1] जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
[2] और एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया।
[3] और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।
[4] और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।
[14] पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, "हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनों।

15 जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है।
16 परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है,
17 कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।
18 वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।
38 पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने–अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।
39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा"।

प्रेरितों के काम 8:5-21
5 और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।
6 और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर, और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।
7 क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए।
8 और उस नगर में बड़ा आनंद हुआ।
9 इससे पहले उस नगर में शमौन नामक एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बताता था।
10 और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है।
11 उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रखा था, इसी लिए वे उसको बहुत मानते थे।
12 परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो लोग क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।
13 तब शमौन ने स्वयं भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था।
14 जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।
15 और उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं।
16 क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।
17 तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।
18 जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा,
19 कि यह अधिकार मुझे भी दो, ताकि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए।
20 पतरस ने उससे कहा, तेरे रुपये तेरे साथ नाश हो, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया।
21 इस बात में न तेरा हिस्सा है, न बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं।

प्रेरितों के काम 9:17,18
17 तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में जिससे तू आया, तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।
18 और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उसने उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन करके बल पाया।

1 कुरिन्थियों 14:18
मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं।

प्रेरितों के काम 10:44-48
44 पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया।
45 और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है,
46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।
47 इस पर पतरस ने कहा, क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?
48 और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे बिनती की कि वह उनके साथ कुछ दिन रहे।

प्रेरितों के काम 19:1-7

[1] और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर,
[2] उनसे कहा, क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया? उन्होंने उससे कहा, हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।
[3] उसने उससे कहा, तो फिर तुमने किसका बपतिस्मा लिया? उन्होंने कहा, यूहन्ना का बपतिस्मा।
[4] पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।
[5] यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।
[6] और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।
[7] ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने या पवित्र आत्मा के बपतिस्में के साथ अलौकिक प्रकटीकरण होते हैं–अन्यान्य भाषाओं में प्रार्थना करना इनमें सबसे सामान्य बात है।

पवित्र आत्मा के अधिनिवास और पवित्र आत्मा के बपतिस्मे में क्या फर्क है?

यूहन्ना 4:13,14

[13] यीशु ने उसको उत्तर दिया, जो कोई यह जल पीएगा, वह फिर प्यासा होगा।
[14] परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।

यूहन्ना 7:37-39

[37] फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और उसने पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।
[38] जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी।
[39] उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था।

विश्वासी केअंदर आत्मा का वास एक सोते की तरह है (यूहन्ना 4:13,14) जो अनन्त जीवन देता है और व्यक्तिगत परिवर्तन लाता है। आत्मा का बपतिस्मा एक नदी की तरह है (यूहन्ना 7:37-39) जो विश्वासी केअंदर से बहती है, और चारों ओर लोगों को आशीष देती है।

11.4 पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने के लाभ

*(**"अन्यान्य भाषाओं में प्रार्थना करने के अद्‌भुत लाभ"** नामक ए.पी.सी प्रकाशन की पुस्तक* **apcwo.org/books** *से प्राप्त कर उसका अध्ययन करें।)*

- बिना सीमाओं के प्रार्थना करना–परमेश्वर के भेदों के विषय प्रार्थना करना

1 कुरिन्थियों 14:2

क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

- परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना

रोमियों 8:26,27

[26] इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है।
[27] और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।

- शरीर की निर्बलता पर जय पाने में सहायता करता है

रोमियों 8:26
[26] इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है।

मत्ती 3:11,12
[11] मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
[12] उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।

व्यक्तिगत स्तर पर आग के बपतिस्मे का संबंध भूसा जलाने से–शरीर के कामों को जलाने से है।

- व्यक्तिगत उन्नति–आपको आत्मिक रीति से उन्नति प्रदान करता है

1 कुरिन्थियों 14:2
क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

यहूदा 1:20
परंतु हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए।

इफिसियों 3:16
कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ।

- विश्राम और ताज़गी

यशायाह 28:11,12
[11] वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा;
[12] जिन से उसने कहा, विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो; परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा।

1 कुरिन्थियों 14:21
व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, मैं अन्य भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूंगा, तौभी वे मेरी न सुनेंगे।

- परमेश्वर की स्तुति और बढ़ाई करने का दूसरा तरीका

प्रेरितों के काम 10:46
क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।

- आपकी आत्मा को इस योग्य बनाता है कि आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर के भेदों को (गुप्त रहस्यों को) प्राप्त कर सको। अक्सर आप जो कहते हैं उसका अर्थ प्रार्थना करते समय ही आपकी अपनी आत्मा को बताया जाता है।

1 कुरिन्थियों 2:7-16
[7] परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया,
[8] जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।
[9] परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।

10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।
11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
12 परन्तु हमने संसार का आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं,
13 जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।
14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।
15 आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।
16 क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परन्तु हममें मसीह का मन है।

1 कुरिन्थियों 14:2
क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

- जब आप इस क्षेत्र में खुद को प्रोत्साहित करते हैं, तब आपके अन्दर जो वरदान है उन्हें चमकाने में सहायता करता है—यह अत्यंत मौलिक आत्मिक वरदान है।

2 तीमुथियुस 1:6
इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे।

मुख्य मौखिक पद

गलातियों 4:6,7
6 और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।
7 इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

रोमियों 8:26,27
26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है।
27 और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।

रोमियों 8:14-16
14 इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं,
15 क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

अनुप्रयोग

1) आप पवित्र आत्मा के साथ अपने रिश्ते में कैसे हैं?

2) क्या मेरे जीवन में ऐसे कोई स्थान हैं जहां पर बदलाव और परिवर्तन देखने हेतु मुझे आत्मा की सहायता पर और निर्भर होने की जरूरत है? इनमें से कुछ बदलाव क्या हैं? इनके विषय में प्रार्थना करने लगे / पवित्र आत्मा से बोलने लगें और इन क्षेत्रों में उसके कार्य को खोजें।

12
विश्वास

(इस पाठ की योजना यह सिखाने के लिए की गई है कि हम परमेश्वर में और उसके वचन में विश्वास के साथ कैसे जीवन बिताएं। यदि हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, और यदि हम उसके कामों को अपने जीवन में मुक्त होते हुए देखना चाहते हैं, तो हमें विश्वास से चलना होगा।)

12.1 विश्वास की अवधारणा

रोमियों 1:17
क्योकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रगट होती है; जैसा लिखा है, विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।

इब्रानियों 11:6
और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

लोग अपनी पांच इंद्रियों के साथ जीते हैं, लेकिन हम परमेश्वर के बच्चों के रूप में "छठी इंद्रिय" के साथ जीते हैं-"विश्वास की भावना!"

12.2 परमेश्वर हमें विश्वास से जीवन बिताने हेतु बुलाता है

इब्रानियों 11:1 (एमपीसी)
अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का आश्वासन (पुष्टि, अधिकारपत्र), और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण, और उनकी वास्तविकता का यकीन है (हमारे इन्द्रियों को जो बात प्रगट नहीं हुई है उसे विश्वास एक वास्तविक तथ्य के रूप में देखता है)।

12.3 विश्वास परमेश्वर की ओर से आता है

प्रेरितों के काम 3:16
और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो, सामर्थ दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

विश्वास वह द्वार है जो परमेश्वर को मेरी परिस्थितियों में आमंत्रित करता है।

इब्रानियों 12:1,2
[1] इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें,
[2] और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।

12.4 परमेश्वर की सम्प्रभुता और विश्वास का उपयोग

मत्ती 13:58
और उसने वहां उनके अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए।

मरकुस 6:5,6
[5] और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
[6] और उसने उनके अविश्वास पर आश्चर्य किया और चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा।

- यदि परमेश्वर संप्रभुतासंपन्न है (सर्वशक्तिमान, सबके ऊपर और अन्य लोगों से स्वतंत्र) और जिसे कोई रोक नहीं सकता, तो वह फिर भी क्यों चाहता है कि उसके लोग यदि उनके जीवनों में उसके सामर्थी कामों को अनुभव करना चाहते हैं, तो अपने व्यक्तिगत विश्वास का उपयोग करें?

यह विपरीत प्रतीत होता है–कि हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान और संप्रभुतासंपन्न है, और फिर भी परमेश्वर हमारे अविश्वास से सीमित हो सकता है और यदि विश्वास न हो, तो वहां कार्य नहीं कर सकता।

- यदि सबकुछ अनुग्रह का विनामूल्य वरदान है, तो कैसे हम उन्हें केवल विश्वास के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं?

क्योंकि यदि हम उसे समझते हैं, तो अनुग्रह परमेश्वर के चरित्र की अभिव्यक्ति है जो **हमारे द्वारा** किए गए किसी भी कार्य से स्वतंत्र है, विश्वास हमारे विश्वास और परमेश्वर में भरोसे की अभिव्यक्ति है।

विचार करने योग्य बातें

- परमेश्वर ने अपनी बुद्धि के अनुसार यह उचित समझा कि ये दो स्पष्ट रूप से विपरीत गुण एक साथ रहें। परमेश्वर की निर्विवाद संप्रभुता का क्षेत्र है और अवश्य ही सामर्थी परिणामों के साथ व्यक्तिगत विश्वास का अविभाज्य और आवश्यक तत्व भी है।
- कुछ निश्चित बातें हैं जो केवल परमेश्वर की संप्रभुता पर निर्भर है, जैसे परमेश्वर का सनातन उद्देश्य और युगों के लिए उसकी योजना। यह मानवी विश्वास के उपयोग के बिना ही पूरी होगी। और उसके बाद परमेश्वर के कुछ व्यक्तिगत उद्देश्य हैं, जिनका पूरा होना परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सहयोग पर निर्भर है।
- अपने अनुग्रह से अपने सारे वरदानों को हमें विनामूल्य देते हुए भी, हर एक के लिए उन्हें विश्वास से प्राप्त करना उसने आवश्यक किया है। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी ओर से प्राप्त करने का समान अवसर प्रदान करता है। चाहे व्यक्ति किसी भी वंश, रंग, सामाजिक या आर्थिक स्थान, पिछले अनुभवों को रखने वाला हो, प्रत्येक को परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से जो कुछ हमें विनामूल्य दिया है, उसे प्राप्त करने का समान अवसर है।
- विश्वास के क्षेत्र की परिमितियां हैं जो परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य से निर्धारित हैं। इसके बाहर कार्य करने का अर्थ परमेश्वर की संप्रभुतासंपन्न इच्छा से "टकराना" है, और कोई भी ऐसा करते समय सफल नहीं हो सकता।

अतः प्रत्येक विश्वासी के लिए यह सीखना नितांत आवश्यक है कि विश्वास के द्वारा कैसे जिएं।

12.5 नए नियम और पुराने नियम में विश्वास

अब्राहम

उत्पत्ति 11:26 से उत्पत्ति 25:11 में दी गई अब्राहम की कहानी पढ़ें।

रोमियों 4:18-21

[18] उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा, वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

[19] और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,

[20] और न अविश्वासी होकर उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।

[21] और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने के लिए भी सामर्थी है।

विश्वास के विषय में यीशु की शिक्षा

मरकुस 11:22
यीशु ने उसको उत्तर दिया, परमेश्वर पर विश्वास रखो।

मत्ती 9:29
तब उसने उनकी आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।

विश्वास के कई उदाहरण हैं।

मत्ती 8:13
और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा, जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिए हो। और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।।

मत्ती 9:2
और देखो, कुछ लोग एक लकवे के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस लकवे के मारे हुए से कहा, हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।

मत्ती 9:22,29
[22] यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा, "पुत्री! ढाढ़स बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।
[29] तब उसने उनकी आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।

मत्ती 15:28
इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो। और उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई।

मत्ती 17:20
उसने उनसे कहा, तुम्हारे अविश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कहोगे कि 'यहां से सरक कर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असंभव न होगी।

मत्ती 21:17-21
[17] तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया, और उसने वहां रात बिताई।
[18] भोर को जब वह नगर को लौट रहा था, तब उसे भूख लगी।
[19] और अंजीर का एक पेड़ सड़क के किनारे देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उसमें और कुछ न पाकर उसने उससे कहा, "अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे," और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया।
[20] यह देखकर चेलों ने अचम्भा किया और कहा, "यह अंजीर का पेड़ कैसे तुरन्त सूख गया?"
[21] यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि यदि तुम विश्वास रखो, और संदेह न करो, तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे कि उखड़ जा और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जाएगा।

12.6 विश्वासी के जीवन में विश्वास

विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है

इफिसियों 2:8
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।

रोमियों 5:1
इसलिए जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रख।

प्रत्येक विश्वासी को एक प्रमाण में विश्वास दिया गया है।

रोमियों 12:3
क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुममें से हर एक से कहता हूं कि जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे, पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।

विश्वास के विभिन्न स्तर होते हैंः

- विश्वास का न होना

मरकुस 4:40
और उसने उनसे कहा, तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?

- कम विश्वास

मत्ती 6:30
इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल आग में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह क्यों न पहनाएगा?

- बड़ा विश्वास

मत्ती 8:10
यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उनसे कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।

2 थिस्सलुनीकियों 1:3
हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही होता जाता है।

विश्वास बढ़ सकता है।

12.7 अपने विश्वास का उपयोग कैसे करें

वचन को ग्रहण करें

रोमियों 10:17
इसलिए विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

जब हम परमेश्वर के वचन को सुनते हैं और उसे हमारी आत्माओं में आने देते हैं, तो वह विश्वास को उत्पन्न करता है। वह आंतरिक आश्वासन के लिए कारण उत्पन्न करता है, विश्वास के कारण के लिए मज़बूत आधार और आंतरिक यकीन के लिए मज़बूत बुनियाद तैयार करता है। परमेश्वर का वचन विश्वास के कारण का आधार है।

परमेश्वर ने जो कुछ हमसे कहा है उस पर विश्वास आधारित है, चाहे उसके लिखित वचन से हो, या उसके आत्मा द्वारा हमारे हृदयों में कहे गए वचन के द्वारा।

अपने विश्वास को बोलें

मरकुस 11:23
मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।

"अंगीकार करना" (शब्दकोष): "कबूल करना, स्वीकार करना, किसी बात पर विश्वास को कबूल करना।"

"विश्वास" हम अपने हृदयों में जिस बात को मानते हैं, उससे निवेदन करना है। जिस बात को हम सत्य करके जानते हैं, उसका प्रमाण देना है। हमारे द्वारा स्वीकार किए गए सत्य की गवाही देना है।

हम अंगीकार करते हैं:

- जो परमेश्वर ने उद्धार की योजना में हमारे लिए किया
- जो परमेश्वर ने अपने वचन और आत्मा के द्वारा हममें किया
- हम मसीह यीशु में पिता के लिए जो हैं
- अब पिता के दाहिने हाथ पर यीशु हमारे लिए जो पूरा कर रहा है, जहां पर वह हमारे लिए मध्यस्थी करता है
- परमेश्वर हमारे द्वारा जो पूरा कर सकता है

अंगीकार परमेश्वर के लिखित वचन की सीमाओं के अंतर्गत रखा जाना चाहिए।

विश्वास का कदम बढ़ाएं (अपने विश्वास पर कार्य करें)

याकूब 2:14,22,26

14 हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है, परंतु वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?

22 इसलिए तू ने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मो से विश्वास सिद्ध हुआ।

26 निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।

यदि हम परमेश्वर की ओर से प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमारे कार्य हमारे विश्वास के अनुरूप होने चाहिए।

अपने विश्वास के अनुसार चलें (विश्वास में बने रहे)

इब्रानियों 10:35,36

35 इसलिए अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।

36 क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

प्रतिज्ञाओं की मीरास पाने हेतु हमें धीरज रखने की ज़रूरत है।

इब्रानियों 6:12

ताकि तुम आलसी न हो जाओ; वरन् उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

रोमियों 4:16-21

16 इसी कारण वह विश्वास के द्वारा मिलती है कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि प्रतिज्ञा सब वंश के लिए दृढ़ हो, न हो कि केवल उसके लिए जो व्यवस्थावाला है, वरन् उनके लिए भी जो इब्राहीम के समान विश्वासवाले हैं। वही तो हम सब का पिता है।

17 (जैसा लिखा है कि "मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है"), उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है कि मानों वे हैं।

18 उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

19 और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,

20 और न अविश्वासी होकर उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।

21 और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने के लिए भी सामर्थी है।

जब हम अपने विश्वास पर चलते हैं, तब हम एक **कदम** बढ़ाते हैं। जहां पर हम हैं, वहां से हम परमेश्वर में भरोसे और विश्वास के एक नए स्थान में कदम रखते हैं।

परंतु विश्वास **चलना** भी है। जब हम समय के अनुसार बने रहते हैं, अपने विश्वास में स्थिर रहते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की यात्रा में आगे बढ़ते हैं।

12.8 मज़बूत विश्वास के मार्ग में आने वाली रुकावटें

- परमेश्वर के वचन के ज्ञान का अभाव।
- आपका विश्वास परमेश्वर के वचन के वास्तविक ज्ञान से आगे नहीं बढ़ सकता।
- स्पष्ट इच्छित लक्ष्य का अभाव।
- चिंता / भय / संदेह / अविश्वास।
- मानसिक सम्मति—मानसिक तौर पर हम "हां" कहते हैं (हमारे मनों में), परंतु हमारे हृदयों में विश्वास नहीं होता।
- आलसीपन / वचन के अनुसार कार्य न कर पाना।

विश्वास दोनों है
एक **कदम**
तथा
एक **आचरण।**

याकूब 2:14,22
[14] हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है, परंतु वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?
[22] तो क्या तुमने आपस में भेदभाव न किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न ठहरे? इसलिए तू ने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मो से विश्वास सिद्ध हुआ।

- गलत मकसद / गलत रवैया
- पाप / अधर्म में जीवन बिताना
- विश्वास के अंगिकार को दृढ़ता से थामें रहने में असफलता

इब्रानियों 10:23
और अपने आशा के अंगिकार को दृढ़ता से थामे रहे; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है।

मुख्य मौखिक पद

इब्रानियों 11:6
और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

मरकुस 11:23
मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।

अनुप्रयोग

1) "विश्वास" क्या है? आप किस हद तक अपने जीवन में विश्वास का उपयोग करते हैं?

2) आपके विश्वास के मार्ग में आने वाली रुकावटें कौनसी हैं और आप इन रुकावटों पर कैसे विजय पा सकते हैं?

13
आर्थिक भण्डारीपन

(इस पाठ की योजना हमें आर्थिक भण्डारीपन के महत्व को सिखाने के लिए की गई है। हमें अपने दसवांशों, भेंट और दान देकर परमेश्वर को आदर देना है। क्या दसवांश स्थानीय कलीसिया को दिया जाए? क्या अपने देने के द्वारा अन्य मसीही सेवकाइयों की सहायता करना उचित है? क्या मुझें ज़रूरतमंद भाई या बहन की सहायता करना चाहिए? आर्थिक रीति से प्रचारकों द्वारा ठगने और लूठ लिए जाने से मैं खुद को कैसे बचा सकता हूं?)

13.1 भण्डारीपन

परमेश्वर का भण्डारी होने का क्या अर्थ है?

1 कुरिन्थियों 4:1,2
[1] मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।
[2] फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि विश्वासयोग्य निकले।

1 पतरस 4:10
जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।

भण्डारी (यूनानी *ओइकोनोमॉस*) = घर या जायदाद का प्रबंध रखने वाला, व्यवस्थापक, खजीनदार। ऐसा व्यक्ति जिसे किसी वस्तु के लिए ज़िम्मेदार ठहराया गया है जो उसकी अपनी नहीं है। ऐसा व्यक्ति जिसे प्रबंध करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

स्वामित्व परमेश्वर के पास है परन्तु भण्डारीपन हमारे पास है।

ओइकॉस् = घर,
नोमोस = कानून, नियम

भण्डारीपन (यूनानी *ओइकॉनोमिया*) = घर का प्रबंध या व्यवस्थापन निम्नलिखित स्थान पर उपयोग किया गया हैः

लूका 16:2-4
[2] इसलिए उसने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।'
[3] तब भण्डारी सोचने लगा, 'अब मैं क्या करूं? क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम मुझ से छीन ले रहा है। मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती; और भीख मांगने से मुझे लज्जा आती है।
[4] 'मैं समझ गया कि क्या करूंगा, ताकि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें।

1 कुरिन्थियों 9:17
क्योंकि यदि मैं अपनी इच्छा से यह करता हूं, तो मज़दूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।

कुलुस्सियों 1:25
जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा पूरा प्रचार करूं।

घर के भण्डारी को इस बात का ध्यान रखना है कि:

- सब कुछ ठीक चल रहा है
- सब कुछ लाभदायक है
- सब बातों का हिसाब है
- जो कुछ उसकी देखभाल में है, उसकी उसे रक्षा करना है।
- उसे विरासत को आगे बढ़ाना है, उत्तराधिकारी को तैयार करना है

गलातियों 4:1,2
[1] मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं।
[2] परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है।

उत्तम भण्डारी की विशेषताएं

विश्वासयोग्य

1 कुरिन्थियों 4:1,2
[1] मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।
[2] फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि विश्वासयोग्य निकले।

लूका 16:1-12
[1] फिर उसने चेलों से भी कहा, "किसी धनवान का एक भण्डारी था, और लोगों ने उसके सामने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति उड़ाए देता है।
[2] इसलिए उसने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।'
[3] तब भण्डारी सोचने लगा, 'अब मैं क्या करूं? क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम मुझ से छीन ले रहा है। मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती; और भीख मांगने से मुझे लज्जा आती है।'
[4] 'मैं समझ गया कि क्या करूंगा, ताकि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें।'
[5] और उसने अपने स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहले से पूछा, तुझ पर मेरे स्वामी का कितना उधार है?
[6] उसने कहा, 'सौ मन तेल।' तब उसने उससे कहा, अपनी बही-खाता ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे।
[7] फिर दूसरे से पूछा, 'तुझ पर क्या आता है?' उसने कहा, 'सौ मन गेहूं।' तब उसने कहा, 'अपनी बही-खाता लेकर अस्सी लिख दे।'
[8] "स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा कि उसने चतुराई से काम किया है; क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं।
[9] और मैं तुमसे कहता हूं, कि अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।
[10] जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है; और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।
[11] इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?
[12] और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?

1 तीमुथियुस 1:12
मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया।

- छोटी छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहें, परमेश्वर आपको कई बातों पर अधिकारी ठहराएगा।
- पैसों के विषय में विश्वासयोग्य रहें, परमेश्वर आपको सच्चा धन देगा।
- जो दूसरे व्यक्ति का है उसमें विश्वासयोग्य रहें, परमेश्वर आपको अपना धन देगा।

बुद्धिमान

लूका 12:41-48

41 तब पतरस ने कहा, "हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त आप हम ही से या सब से कहते हैं?"
42 प्रभु ने कहा, "वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन-वस्तु दे।
43 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
44 मैं तुमसे सच कहता हूं, वह उसे अपनी सब संपत्ति पर सरदार ठहराएगा।
45 परन्तु यदि वह दास सोचने लगे कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने-पीटने और खाने-पीने और पियक्कड़ होने लगे,
46 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जिस दिन वह उसकी बाट जोहता न रहे, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो आएगा, और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग अविश्वासियों के साथ ठहराएगा।
47 और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, फिर भी तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा।
48 परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत मांगेंगे।

परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ्य इसलिये देता है, कि जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बान्धी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रगट है।

13.2 आर्थिक भण्डारीपन

परमेश्वर हमें भौतिक रूप से आशीष देता है।

व्यवस्थाविवरण 8:18
परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ्य इसलिये देता है, कि जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बान्धी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रगट है।

भजन संहिता 1:3
वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता हैं, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।

भजन संहिता 112:3
उसके घर में धन सम्पति रहती है; और उसका धर्म सदा बना रहेगा।

1 तीमुथियुस 6:17
इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।

भौतिक आशीषें हमें दूसरों से "बेहतर" नहीं बनातीं।

जितना अधिक हम पाते हैं उतनी अधिक हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम हमें दी गई वस्तुओं के अच्छे भण्डारी बनें। देना हमारे आर्थिक भण्डारीपन की अभिव्यक्ति है।

हम परमेश्वर को क्यों देते हैं? आराधना की क्रिया के रूप में।

भजन संहिता 96:8
यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है; भेंट लेकर उसके आंगनों में आओ!

नीतिवचन 3:9,10
[9] अपनी संपत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना;
[10] इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा।

1 इतिहास 29:10-14,16
[10] तब दाऊद ने सारी सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया, और दाऊद ने कहा, हे हमारे मूलपुरुष इस्राएल के परमेश्वर! अनादिकाल से अनंतकाल तक तू धन्य है।
[11] हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और विभव, तेरा ही है; हे यहोवा, राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है।
[12] धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।
[13] इसलिए अब हे हमारे परमेश्वर! हम तेरा धन्यवाद और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं।
[14] मैं क्या हूं? और मेरी प्रजा क्या है? कि हमको इस रीति से अपनी इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हमने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है।
[16] हे हमारे परमेश्वर यहोवा! वह जो बड़ा संचय हमने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिए किया है, वह तेरे ही हाथ से हमें मिला था, और सब तेरा ही है।

देना आराधना है क्योंकि जब हम अपना पैसा भेंट के रूप में डालते हैं, तब आप कहते हैं, "हे परमेश्वर, मैं खुद को, और जो कुछ तूने मुझे दिया है उसे तुझे वापस देता हूं (समय, प्रतिभा)। धन्यवाद। उसे अपनी महिमा के लिए उपयोग करें।"

बाइबल में भेंट / देने के विषय में 300 से अधिक उल्लेख हैं। बाइबल में प्रभु को देना एक अत्यंत पवित्र और उपासना का समय होता था—इस समय की विशेषता परमेश्वर के लिए अद्‌भुत उत्सव और आनन्दमय अभिव्यक्ति होती थी। परमेश्वर को देना आदर की बात मानी जाती थी। इसे उच्च प्रति की आराधना माना जाता था।

देना आज्ञाकारिता और भरोसे का प्रतीक है।

मलाकी 3:9,10
[9] तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन सारी जाति ऐसा करती है।
[10] सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।

लूका 6:38
दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा; लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।

देना सारी बातों पर परमेश्वर की प्रभुता को मानता हैः आप, आपका पैसा और **सबकुछ**। हम अपनी भेंटों से परमेश्वर को आदर देते हैं। देना परमेश्वर में आपके प्रयोजन के रूप में आपके भरोसे को प्रगट करता हैः आप सबकुछ उसके हाथों में सौंपना सीखते हैं।

देना दूसरों के लिए बोने / आशीष को मुक्त करने का कार्य है

2 कुरिन्थियों 9:6-8
[6] परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।

[7] हर एक जन जैसा मन में ठाने, वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। [8] और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे हर बात में और हर समय सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

फिलिप्पियों 4:15,16,19
[15] और हे फिलिप्पियो, तुम स्वयं भी जानते हो कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में जब मैंने मकिदुनिया से कूच किया, तब तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने लेने देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की।
[16] इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था, तब भी तुमने मेरी घटी पूरी करने के लिए एक बार क्या, वरन् दो बार कुछ भेजा था।
[19] और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

देना दूसरों के लिए आशीष बनने और भलाई करने की हमारी ज़िम्मेदारी को पूरा करता है। पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य का आर्थिक प्रबंध परमेश्वर के लोगों द्वारा दिए गए योगदानों से पूरा होता है।

हमें आशीष बनने हेतु आशीषित किया गया है।

13.3 दसवांश, भेंट, दान

दसवांश

उत्पत्ति 14:20
और धन्य हो परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने उसको सबका दशमांश दिया।

अब्राम ने दसवांश दिया—बाइबल में पहली बार "दसवांश" शब्द का उल्लेख किया गया है।

दसवांश देना परमेश्वर को आपने जो कुछ पाया है उसका दसवां हिस्सा, आपकी बढ़ौत्तरी का पहला फल देना है।

नीतिवचन 3:9
अपनी संपत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना।

मलाकी 3:8-11
[8] क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेंट में।
[9] तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन सारी जाति ऐसा करती है।
[10] सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।
[11] मैं तुम्हारे लिये नाश करनेवाले को ऐसा घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

परमेश्वर दशमांश के विषय में गंभीर है। दशमांश न देना परमेश्वर को लूटना है!

परमेश्वर पैसा इकट्ठा करने हेतु दसवांश का उपयोग नहीं करता, क्योंकि उसे पैसों की ज़रूरत नहीं है। उसका उपयोग वह अपने लोगों को यह सिखाने के लिए करता है कि वे पूर्ण रूप से प्रभु के लिए अपनी वस्तुओं को अलग रखें। प्रत्येक को दसवांश देना है, सेवकों को भी!

गिनती 18:26
तू लेवियों से कह, कि जब जब तुम इसाएलियों के हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा ने तुमको तुम्हारा निज भाग करके उनसे दिलाता है, तब तब उसमें से यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट करके दशमांश का दशमांश देना।

परमेश्वर को हमारे पैसों की ज़रूरत नहीं है। सबकुछ पहले ही उसका है। परंतु, दसवांश देना धन के क्षेत्र में प्रभु के प्रति हमारे समर्पण को जताने का एक मार्ग है।

दसवांश देने वालों की आशीषें

शत्रु नहीं चाहता है कि आप दसवांश दें, क्योंकि दसवांश आपके धन को परमेश्वर की वाचा में रखता है।

वाचा में, आप धन के वाचा वाले सिद्धांतों के साथ मिलकर परिश्रम करते हैं और परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञाओं को देखने की अपेक्षा करते हैं जो अधिकार से आपके हैं।

- आपकी अर्थव्यवस्था में वाचा की आशीषें।
- दसवांश देना आपके धन पर स्वर्ग को खोल देता है।
- दसवांश आपकी अर्थव्यवस्था के शत्रु के विरोध में आपकी रक्षा करता है।
- दसवांश भौतिक आशीषों को मुक्त करता है।

हमें आज भी दसवांश देने की आवश्यकता है इसका कारण

- दसवांश व्यवस्था के पहले भी अमल में लाया जाता था, और इस कारण वह व्यवस्था की वजह से नहीं है।

उत्पत्ति 14:20
और धन्य हो परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने उसको सबका दशमांश दिया।

अब्राहम ने मूसा और व्यवस्था से 400 वर्षों पहले दसवांश दिया।

इसहाक ने मूसा और व्यवस्था से 350 वर्षों पहले दसवांश दिया।

दसवांश देने की प्रथा "वाचा के रिश्ते" की अभिव्यक्ति है, और पूर्णतया व्यवस्था का भाग नहीं है। हमारा "वाचा का रिश्ता" अब भी विद्यमान है और अब इसलिए दसवांश देना भी।

- दसवांश का अंत क्रूस पर नहीं हुआ।

किसी भी नियम को समाप्त करने या उसमें बदलाव लाने के लिए एक निश्चित नये नियम का वचन है जो उस बदलाव को दर्शाता है। इस बदलाव को दर्शाने वाले नये नियम के वचन के बिना—बदलाव के लिए बाइबल में कोई दूसरा आधार नहीं है। नये नियम में दसवांश के समापन या परिवर्तन का उल्लेख करने वाला कोई वचन नहीं है। धन के विषय में वाचा के रिश्ते का परमेश्वर का कार्य नहीं बदला है। परमेश्वर आज भी दसवांश के साथ आराधना पाना पसंद करता है और उसकी अपेक्षा करता है।

- यीशु ने कहा कि दसवांश दिया जाना चाहिए।

मत्ती 23:23
हे पाखण्डी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; तुम्हें चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।

- यीशु, हमारा नई वाचा का महायाजक दसवांश स्वीकार करता है।

इबानियों 7:8
और यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं, परंतु वहां वही लेता है, जिसकी गवाही दी जाती है कि वह जीवित है।

दसवांश प्रचलन में है और आज भी परमेश्वर को दिया जाता है।

भेंटें

यह बीज है जो आप उदारता के साथ बोते हैं।

2 कुरिन्थियों 9:6-8

[6] परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।
[7] हर एक जन जैसा मन में ठाने, वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। और
[8] परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे हर बात में और हर समय सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

आपके दसवांश (10 प्रतिशत) से अधिक जो कुछ भी आप प्रभु के कार्य के लिए देते हैं, वह आपकी भेंट है।

भेंट और दान

मत्ती 6:1-4

[1] "सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।
[2] "इसलिए जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा पाखण्डी सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें; मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना फल पा चुके।
[3] परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बांया हाथ न जानने पाए;
[4] ताकि तेरा दान गुप्त रहे, और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रगट रूप में प्रतिफल देगा।

मत्ती 25:40

तब राजा उन्हें उत्तर देगा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।

याकूब 1:27

हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।

नीतिवचन 19:17

जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, ओर वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।

यह ज़रूरतमंदों को देना है जो विश्वास के घराने के हैं या कंगालों को उधार देना है, निर्धन और असहाय "लोगों की सहायता करना इसका उद्देश्य है।"

यह दसवांश और भेंटों के अलावा दिया जाता है। यह त्याग करने का चुनाव हम करते हैं।

13.4 देने की सेवकाई

रोमियों 12:6-8

[6] और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।
[7] यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे।
[8] जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे; जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।

कुछ विश्वासी हैं जिन्हें परमेश्वर ने बहुतायत के धन का अनुग्रह और वरदान दिया है ताकि वे परमेश्वर के राज्य के कार्य के लिए दें। यह उनकी सेवकाई है।

13.5 सामान्य प्रश्न और उत्तर

क्या दसवांश स्थानीय कलीसिया को दिया जाए?

जी हाँ, हमारा विश्वास है कि दसवांश स्थानीय कलीसिया के लिए है (भण्डार) क्योंकि यहीं पर आपको आपका आत्मिक भोजन, देखभाल, और सहायता मिलती है। पुराने नियम में परमेश्वर के मंदिर के भण्डारों में अपना दसवांश ले जाने की प्रथा थी। परंतु ए.पी.सी. में हम व्यक्ति के व्यक्तिगत दान का लेखा नहीं रखते। इसलिए, आप इस मामले में अपने व्यक्तिगत विश्वास का अनुसरण करने हेतु स्वतंत्र हैं।

क्या अपने देने से अन्य मसीही सेवा संस्थाओं की सहायता करना उचित है?

जी हां, हमें लगता है कि अपने दान और दसवांश अपनी स्थानीय कलीसिया को देने के बाद, आप अन्य मसीही सेवा संस्थाओं की सहायता कर सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपके मन में डाला है।

क्या मुझे ज़रूरतमंद भाई-बहनों की सहायता करने हेतु आर्थिक रीति से देना चाहिए?

जी हां, हमें प्रभु द्वारा दी गई हुई योग्यता के अनुसार एक दूसरे की मदद करना चाहिए।

गलातियों 6:10
इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

उन लोगों से सावधान रहें जो मसीही रिश्तों का अपनी ज़रूरत के लिए उपयोग करते हैं।

2 थिस्सलुनीकियों 3:6-13
[6] हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित चाल चलता, और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं करता।
[7] क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले।
[8] और किसी की रोटी सेंत में न खाई; परंतु परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, ताकि तुममें से किसी पर भार न हो।
[9] यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं; परंतु इसलिए कि अपने आप को तुम्हारे लिए आदर्श ठहराएं, कि तुम हमारी सी चाल चलो।
[10] और जब हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए।
[11] हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, परंतु औरों के काम में हाथ डाला करते हैं।
[12] ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।
[13] और तुम, हे भाइयो, भलाई करने में हियाव न छोड़ो।

हम लोगों को उधार देने और उधार लेने हेतु प्रोत्साहन नहीं देते। यदि आप कलीसिया के किसी व्यक्ति को उधार देते हैं, तो ऐसा अपनी इच्छा से करें और कृपा करके ध्यान दें कि कलीसिया इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं होंगी।

प्रचारकों द्वारा आर्थिक रीति से ठग लिए जाने और लूट लिए जाने से मैं खुद को कैसे बचा सकता हूं?

- *अपने देने की योजना तैयार करें–ताकि सभा में या आपके घर में अचानक प्रवेश करने वाले प्रचारक की मांगों द्वारा आप भावनात्मक रूप से धोखा न खाएं।*
- *परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में चलें–अपनी भावनाओं से और आपके सामने रखी गई मांगों या ज़रूरतों से नहीं।*
- *निर्णय लें कि आप कभी मज़बूरी से या झूठे वायदों से नहीं देंगे। यदि प्रचारक आपसे बिनती करता है कि आप किसी प्रकार के आत्मिक आशीष मोल लेने के लिए एक माध्यम के रूप में दान दें, तो देने से इन्कार करें। जो लोग अपनी सेवकाई के कार्यक्रमों के लिए लोगों को लूटते और पैसा वसूल करते हैं, उनसे सावधान रहें।*

क्या पैसों की बचत करना और / या जायदाद में, आर्थिक साधनों (स्टॉक, बॉन्ड, म्युचल फण्ड) या अन्य पूंजियों में लाभ पाने हेतु धन संयोजन करना उचित है?

जबकि परमेश्वर ने हमें जो कुछ दिया है उसमें से कुछ हिस्सा हम अलग बचाकर रखते हैं (बचत/धन संयोजन), हम इस पर सुरक्षा के लिए निर्भर नहीं रह सकते। परमेश्वर हमेशा हमारी सम्पूर्ण पूर्ति का स्त्रोत है।

मत्ती 6:19-24

19 "अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
20 परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।
22 "शरीर का दिया आंख है, इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।
23 परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा। इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है, यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा!
24 "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम करेगा; वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

नीतिवचन 6:6-8

6 हे आलसी, च्यूंटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुध्दिमान हो।
7 उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला,
8 तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

हम पुराने नियम में "सूदखोरी" के विषय में चेतावनी देखते हैं, हम समझते हैं कि सूदखोरी "अनुचित" या "मनमाना ब्याज" है।

कुछ उदाहरणः

लैव्यव्यवस्था 25:37
तो वह उसके बिकने के समय से वर्षों की गिनती करके शेष वर्षों की उपज का दाम उसको जिसने उसे मोल लिया हो फेर दे; तब वह अपनी निज भूमि का अधिकारी हो जाए।

भजन सँहिता 15:5
जो अपना रुपया ब्याज पर नहीं देता और निर्दोष की हानि करने के लिये घूस नहीं लेता है। जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा।

नीतिवचन 28:8
जो अपना धन ब्याज आदि बढ़ती से बढ़ाता है, वह उसके लिये बटोरता है जो कंगालों पर अनुग्रह करता है।

परंतु, हम विश्वास करते हैं कि किसी भी प्रकार का उचित साधन जो धन की बढ़ौत्तरी के लिए उपयोग किया जाता है, और दूसरे व्यक्ति को लूटता नहीं या उसका गलत उपयोग नहीं करता, परमेश्वर के सामने स्वीकारणीय है। उदाहरण के तौर पर, प्रभु यीशु ने अपने उदाहरण में स्वामी को यह कहते हुए दिखाया है, *"तो तूने मेरे रुपये सराफों के पास क्यों नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता?"* (लूका 19:23)।

इस विषय में आप अपने मन के विश्वास पर निर्भर रह सकते हैं।

13.6 चौकस रहें

- धन का मोह और लालच के विषय में

नीतिवचन 15:27
लालची अपने घराने को दुःख देता है, परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित रहता है।

1 तीमुथियुस 6:10
क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।

- खुदगर्ज़ी और स्वार्थपरता के विषय में

लूका 12:15-21
15 और उसने उनसे कहा, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो, क्योंकि किसी का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता।"
16 उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई।
17 "तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूँ।
18 और उसने कहा, मैं यह करूँगा, 'मैं अपनी बखारियां तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊँगा; और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति रखूँगा;
19 'और अपने प्राण से कहूँगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह।'
20 परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, 'हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?
21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परंतु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।

- घमंड के विषय में

1 तीमुथियुस 6:17-19
17 इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।
18 और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें; और उदार और सहायता देने में तत्पर हों।
19 और आगे के लिए एक अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें।

- छोटी छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहें—परमेश्वर आपको कई बातों पर अधिकारी ठहराएगा।
- पैसों के विषय में विश्वासयोग्य रहें—परमेश्वर आपको सच्चा धन देगा।
- जो दूसरे व्यक्ति का है उसमें विश्वासयोग्य रहें—परमेश्वर आपको अपना धन देगा।

मुख्य मौखिक पद

नीतिवचन 3:9
अपनी संपत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना।

गलातियों 6:10
इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

अनुप्रयोग

1) परमेश्वर के उत्तम भण्डारी के गुण क्या हैं?

2) परमेश्वर ने मुझे जो कुछ दिया है उसका मैं अच्छा आर्थिक भण्डारी कैसे बन सकता हूं?

14
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करना

(यह पाठ हमें यह सिखाने के लिए तैयार किया गया है कि हम में से हर एक के लिए परमेश्वर का निश्चित उद्देश्य है, और यह पाठ हमें हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को ढूंढ़ने, उनका अनुसरण करने और उन्हें पूरा करने हेतु प्रोत्साहन देता है। इस विषय पर सम्पूर्ण अध्ययन के लिए आपके जीवन के लिए ***"परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना"*** *नामक ए.पी.सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक पढ़ें। यहां प्रस्तुत की गई रूपरेखा इस पुस्तक के अध्याय 1 पर आधारित है।)*

14.1 परिचय

हम में से हर एक के जीवन के लिए परमेश्वर की योजना है और हमें उन योजनाओं को पूरा करने हेतु आगे बढ़ना है। यह पाठ हमें सबसे पहले यह पहचानने में सहायता करेगा कि परमेश्वर के पास हम में से हर एक के लिए एक उद्देश्य है। जब हमें इस विषय में विश्वास हो जाता है, तब हमें उन सारी बातों को करने के लिए तैयार होना चाहिए जो हमारे जीवनों के लिए उसकी योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं।

14.2 यह समझना कि परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए योजना है

परमेश्वर, उद्देश्य, योजना, परिकल्पना और लक्ष्य का परमेश्वर है

परमेश्वर उद्देश्य, योजना, परिकल्पना और लक्ष्य का परमेश्वर है, और वह अपनी लहर के अनुसार कार्य नहीं करता।

प्रेरितों के काम 15:18
यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।

यशायाह 46:10
मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।

परमेश्वर के पास उसका उद्देश्य है–"सामान्य उद्देश्य" या "मानचित्र या मुख्य योजना"

परमेश्वर के पास "मुख्य योजना" या मानचित्र है–सनातन उद्देश्य जो आज वह पृथ्वी पर प्रगट करता और अमल में लाता है।

परमेश्वर के पास आपके लिए उद्देश्य है–"एक निश्चित योजना"

परमेश्वर ने आपको एक उद्देश्य से सृजा है।

परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए एक रूपरेखा है।

परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए एक स्वप्न है।

परमेश्वर ने आपको इसलिए बनाया है ताकि वह उस उद्देश्य को पूरा कर सके जो उसके मन में आपके विषय में है।

परमेश्वर का मास्टर प्लान है:

- लोगों को बचाना
- कि लोग सत्य के ज्ञान को प्राप्त करें
- उसकेपुत्र यीशु मसीह केप्रतिरूप में बदलते जाना

भजन संहिता 139:16
तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

याद रखें कि परमेश्वर के पास आपके के लिए एक योजना और उद्देश्य है! कुछ अच्छे काम हैं जो परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर पूरा करने हेतु आपके लिए पूर्व नियोजित किए हैं।

इफिसियों 2:10
क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

परमेश्वर चाहता है कि आप उन लोगों के पास जाएं जिन्हें वह चाहता है कि आप छूएं, उन जीवनों के पास जो वह चाहता है कि आपके द्वारा प्रभावित हों, उन बातों के पास जिन्हें वह चाहता है कि आप पूरा करें, उन शहरों में जिन्हें वह बदलना चाहता है, उन राष्ट्रों में जिन्हें वह हिलाना चाहता है!

14.3 जीवन जीना आसान है! आपके जीवन के लिए परमेश्वर ने क्या योजना बनाई है इसे खोज निकालें और उसमें चलें!

हमारे लिए परमेश्वर के लिए 'निश्चित योजना' उसकी प्रमुख योजना का एक छोटा सा हिस्सा है। जब आप आपके जीवन के लिए परमेश्वर के विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करेंगे, तो वह पृथ्वी पर परमेश्वर के सामान्य उद्देश्य को पूरा करने हेतु आपकी सहायता करेगा।

हमारे लिए परमेश्वर की योजना हमेशा भली होती है!

इस बात पर विश्वास करें कि आपके लिए परमेश्वर की योजना भली है! परमेश्वर आपकी ओर से है आपके विरोध में नहीं। आपके लिए उसकी योजनाएं हमेशा आपके *'शालोम'* (कल्याण, स्वास्थ्य, सम्पन्नता, सफलता, शांति) के लिए हैं। आपके लिए परमेश्वर की योजना से बेहतर कुछ भी नहीं!

यिर्मयाह 29:11
क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता हूं, वे हानि की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।

रोमियों 8:28
और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना की परिपूर्णता स्वयंभूत नहीं है

1 कुरिन्थियों 3:9
क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य की पूर्णता हम पर निर्भर है। कुछ लोग कभी परमेश्वर की योजना के अनुसार करना आरम्भ नहीं करेंगे, परंतु अन्य लोग उसकी योजना का एक छोटा सा प्रतिशत ही कर पाएंगे। बाइबल प्रेरित पौलुस के विषय में कहती है, "जिसमें अपनी दौड़ पूरी की।"

परमेश्वर स्वर्ग में अपनी इच्छा प्रगट करता है। परंतु वह पृथ्वी पर अपने लोगों की ओर देखता है कि उसे अमल में लाए।

हमें अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना को खोजना और उसका अनुसरण करना है

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य रहस्य हो यह ज़रूरी नहीं है! कुछ लोगों की यह राय होती है कि परमेश्वर की इच्छा इतनी रहस्यमय है कि हम उसे नहीं जान सकते! यह पूर्ण रूप से असत्य है!

परमेश्वर अपनी इच्छा को प्रगट करने हेतु अति इच्छुक है–हमारे जीवनों के लिए उसकी योजना और उद्देश्य, यदि हम उसके लिए उसे खोजने हेतु तैयार हैं तो।

नौ "मार्गदर्शक स्तम्भ" हैं (**"आपके जीवन के लिए परमेश्वर का उद्देश्य"** नामक पुस्तक से अध्याय 2 पढ़ें) जो आपके जीवनों के लिए परमेश्वर की अगुवाई और अभिदिशा को पहचानने में आपकी सहायता करेंगे।

परमेश्वर उसकी योजना और उद्देश्य को पूरा करने हेतु आपको तैयार करेगा

जितनी सम्पूर्ण आपकी तैयारी होगी, उतनी ही अधिक आपकी सफल होने की सम्भावना बढ़ जाएगी। स्मरण रखें कि तैयारी का समय कभी व्यर्थ नहीं जाता। जितनी बड़ी बुलाहट है उतनी बड़ी तैयारी की आवश्यकता होगी!

> परमेश्वर सिद्ध पात्रों की तलाश में नहीं है। वह समर्पित पात्रों की तलाश में है।

परमेश्वर पिछली असफलताओं पर विजय पाने में सहायता करता है

हो सकता है कि हम गलतियां करें, परंतु असफलताओं पर विजय पाने में परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है और अपनी बुलाहट को पूरा करने में हमारी मदद कर सकता है।

जिस निर्बलता पर आप विजय नहीं पा सकते उसे शैतान आपके विरोध में उपयोग करेगा।

परमेश्वर समय से बड़ा है। परमेश्वर हमारी गलतियों से बड़ा है।

2 कुरिन्थियों 4:7
परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

यह परमेश्वर की सामर्थ है जो हमारे द्वारा कार्य करती है। हम मिट्टी के बर्तन हैं।

परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने से शैतान हमें रोकेगा

परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वप्न को हमेशा दुष्टात्माओं के विरोध का सामना करना पड़ेगा।

विलम्ब हमेशा परमेश्वर की ओर से नहीं होते (दानिएल 10:2-14)। शैतान आपके आश्चर्यकर्म पर विलम्ब करने का प्रयास कर सकता है और इस प्रकार परमेश्वर के सर्वोच्च और उत्तम भाग तक पहुंचने हेतु आपकी जो इच्छा है उसे वह निर्बल कर सकता है।

हमें परमेश्वर की बुलाहट पर अपना ध्यान लगाना है

ध्यान विचलन–ध्यान बंट जाने का परिणाम समय और बल की बर्बादी होगा।

परमेश्वर ने कहा, *"न तो दाहिनी मुड़ना और न ही बाएं मुड़ना ..."* (नीतिवचन 4:27)।

हम में धीरज होना चाहिए

विजय का स्वाद आपके संघर्ष की याद के बाद भी बना रहता है। – माईक मुरडोक

आपका धीरज शैतान के मनोबल को कमज़ोर करता है। – माईक मुरडोक

- विश्वास करें कि परमेश्वर ने आपको एक विशेष उद्देश्य से बनाया है।
- प्रभु से प्रार्थना करें और मांगें कि वह आप के जीवन के उसके स्वप्न को आप पर प्रगट करे। धीरे-धीरे सारी बातें आपके लिए साफ हो जाएंगी।
- निर्णय लें कि आप आपके जीवन के लिए उसके उद्देश्य को पूरा करने हेतु जिएंगे और दूसरी किसी बात पर मन नहीं लगाएंगे।

मुख्य मौखिक पद

इफिसियों 2:10
क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

यिर्मयाह 29:11
क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता हूं, वे हानि की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।

रोमियों 8:28
क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।

अनुप्रयोग

1) जीवन के इस स्तर में, क्या मुझे मेरे जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य और उसके स्वप्न का बोध है?

2) मैं अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य को कैसे खोज सकता हूं?

3) उन बातों को लिखें जिन्हें आपको लगता है कि परमेश्वर चाहता है कि आप जीवन में पूरा करें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वाासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
संबंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य संबंधित मुद्दे
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
आत्मिक समस्याएं
ज़िंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिएः

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

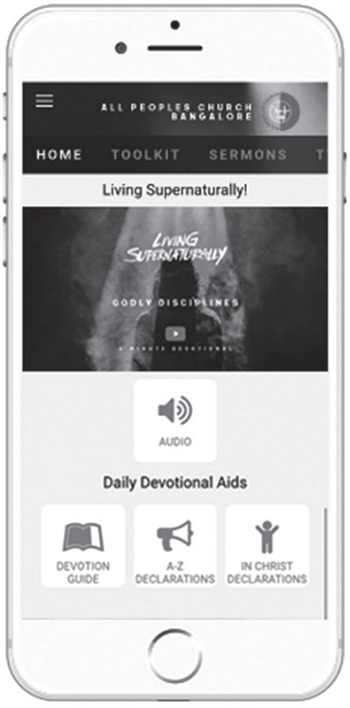

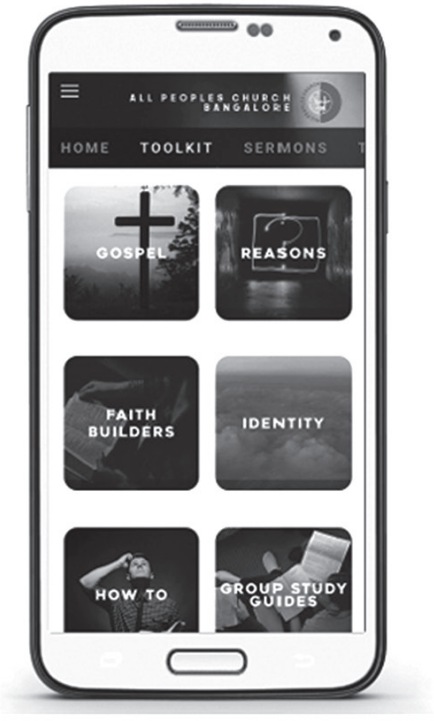

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं–सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं कि गति से सीखने के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org.**

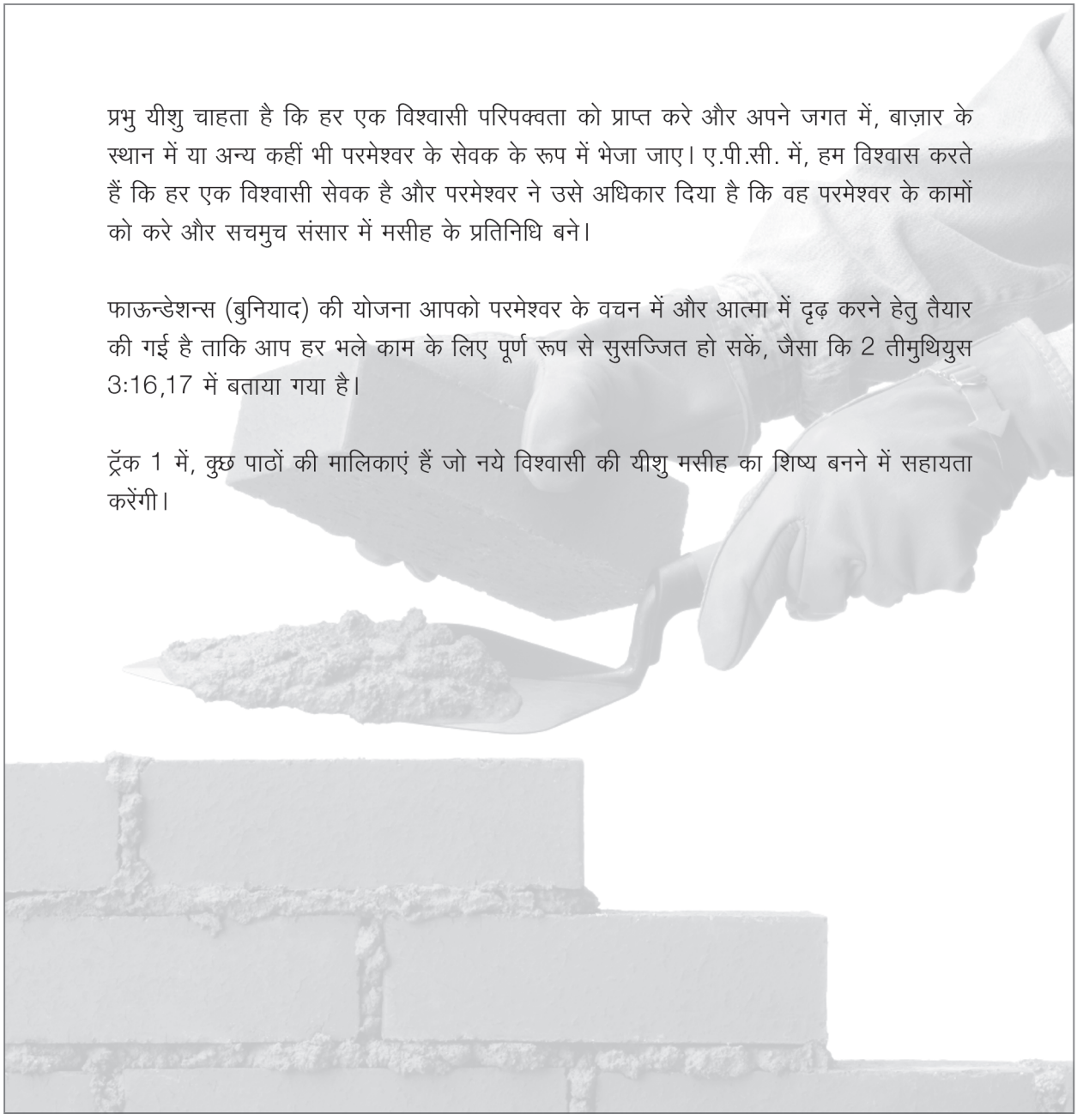

प्रभु यीशु चाहता है कि हर एक विश्वासी परिपक्वता को प्राप्त करे और अपने जगत में, बाज़ार के स्थान में या अन्य कहीं भी परमेश्वर के सेवक के रूप में भेजा जाए। ए.पी.सी. में, हम विश्वास करते हैं कि हर एक विश्वासी सेवक है और परमेश्वर ने उसे अधिकार दिया है कि वह परमेश्वर के कामों को करे और सचमुच संसार में मसीह के प्रतिनिधि बने।

फाऊन्डेशन्स (बुनियाद) की योजना आपको परमेश्वर के वचन में और आत्मा में दृढ़ करने हेतु तैयार की गई है ताकि आप हर भले काम के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित हो सकें, जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:16,17 में बताया गया है।

ट्रॅक 1 में, कुछ पाठों की मालिकाएं हैं जो नये विश्वासी की यीशु मसीह का शिष्य बनने में सहायता करेंगी।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org

ALL PEOPLES CHURCH